कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त

और समाज में होने वाले शिर्क का जायज़ा

शिर्क का मतलब उसकी क़िस्में, नज़्र व नियाज़, इबादत का शिर्क, आदतों का शिर्क, शिर्क अकबर, शिर्क अस्ग़र, शिर्क जली, शिर्क ख़फ़ी, बुज़ुर्गों को पुकारना, मक्का के मुश्रिकों का शिर्क और आज का शिर्क, वसीला, शफ़ाअत, सिफ़ली अमल, जिन्नात की तस्ख़ीर और बिद्अतें। इसी तरह कुफ़्र की क़िस्में, कुफ़्र अस्ग़र, कुफ़्र अकबर, निफ़ाक़ की क़िस्में, फ़िस्क़ और इरतिदाद की क़िस्मों के साथ ग़ैर इस्लामी अक़ीदे और रसूल (सल्ल०) की तअ़लीम,सहाबा का मक़ाम और अहले बैत का तफ़्सीली ज़िक्र है।

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

(सदर,जमअ़ीयत पयामे अम्न)

जमअ़ीयत पयामे अम्न,

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी-	पाँचवां
पुस्तक संख्या-	2000
वर्ष-	2015
मूल्य-	80 रु०
कम्पोज़िंग-	जमअ़ीयत पयामे अम्न (इरफ़ान अहमद)
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज लखनऊ-२० (यू०पी०) इण्डिया

Book Name:	**Kufr Aur Shirk Ki Haqeeqat**
Publisher:	**Jamiat Payam-e-Amn** Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India
Website:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail–	**jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com**

पुस्तक मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
2. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
3. मकतबः अशरफ़िया, मुहम्मद अ़ली रोड (बम्बई)
4. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
5. मकतबः अल्हसनात (दिल्ली)
6. फ़रीद बुक डिपो (दिल्ली)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
सन्देश	7
प्रस्तावना	9

भाग- 1
शिर्क की क़िस्में और समाज में होने वाले शिर्क का तफ़्सीली जायज़ा

शिर्क का विस्तारपूर्वक वर्णन	15
शिर्क का मतलब	15
शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म है	16
शिर्क	16
मुश्रिक पर जन्नत ह़राम है	17
शिर्क पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है	17
शैतान की चालें	18
क़ुर्आन की आयतों की ग़लत बयानी	19
अल्लाह के दोस्त	19
अल्लाह के अ़लावा किसी और को पुकारना	20
जिनकी पूजा की जाती है	21
ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) से सवाल	21
अल्लाह से क़ुर्बत	22
अल्लाह के सिफ़ारशी	22
अल्लाह को पुकारना	23
सिफ़ारिश अल्लाह के अख़्तियार में है	23
मूसा की क़ौम	23
अल्लाह के साथ दूसरों को पुकारना	24
झुठलाने वालों का अन्जाम	24
इस्लाम के अ़लावा दीन क़ुबूल नहीं	24
तकलीफ़ में बड़े को पुकारते हैं	24
तकलीफ़ में उसी को पुकारते हैं	25

विषय	पृष्ठ सं०
शिर्क की क़िस्में	27
अल्लाह के बराबर ज़ुल्म में शिर्क	27
ज़ुल्म ग़ैब	28
तमाम ज़ुल्म केवल अल्लाह तआ़ला को है	29
तसर्रुफ़ (अख़्तियार) में शिर्क	30
नज़र व नियाज़	30
अल्लाह ही के अधिकार में है	31
ज़र्रह़ बराबर जो मालिक न हो	31
मक्का के मुश्रिक	32
इ़बादत में शिर्क	33
इबादत की परिभाषा	33
इ़बादत की ह़क़ीक़त	33
अल्लाह के अ़लावा किसी और के साथ इ़बादत जैसा मामला करना	34
बुज़ुर्गों को पुकारना	35
आदम और मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त	35
अल्लाह की सिफ़ात (गुणों) में शिर्क	36
अल्लाह के ह़ुक़ूक़ में शिर्क	36
शिर्क नाक़ाबिले माफ़ी जुर्म	37
आ़दतों में शिर्क	37
शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क)	38
शिर्के अस्ग़र (छोटा शिर्क)	39
शिर्क जली (ज़ाहिरी शिर्क)	39
शिर्क ख़फ़ी (हल्का शिर्क)	40
इख़्लास	41
शिर्क अकबर और अस्ग़र में अन्तर	42
मक्का के मुश्रिक और तौह़ीदे रुबूबियत	42
ज़मीन व आसमान में रिज़्क़ कौन देता है	42
मुश्रिकों से सवाल जवाब	43
मुश्रिकों की अ़िबादत	44
मुश्रिकों से मुख़ालिफ़त की वजह	45
मुश्रिकों का मअ़बूद (पूज्य)	45
काफ़िर तौह़ीद के मक़्सद को समझते थे	46

विषय	पृष्ठ सं०
मुश्रिक की बख़्शिश नहीं होगी	46
जिहालत कोई उज्र नहीं	47
इब्लीस का मन्सूबा	47
अम्बिया (अ़लै०) और औलिया का वसीला	50
अम्बिया (अ़लै०) और फ़रिश्तों को पुकारना	51
अम्बिया व औलिया को सिफ़ारशी समझना	53
जानवर ज़ब्ह़ करना अ़िबादत है मगर	55
मुश्रिकीने अ़रब का शिर्क	55
शफ़ाअ़त ह़क़ है	56
शफ़ाअ़त केवल अल्लाह के अधिकार में है	56
शफ़ाअ़त का आप (सल्ल०) से सवाल	57
शिर्क से कैसे बचें	58
बुतों को पूजने की मुराद	58
ग़ैरों को पुकारने वालों के कुफ़्र की वजह?	60
वली की अ़िबादत जायज़ नहीं	61
पहले ज़माने का और आजकल का शिर्क	62
अल्लाह के मुश्रिक भी अल्लाह के क़रीबी बन्दों को पुकारते थे	64
क्या हर कलिमा पढ़ने वाला मोमिन है	64
दीन के किसी एक फ़र्ज़ का इन्कार कुफ़्र है	64
एक ही कलिम-ए-कुफ़्र से काफ़िर बन जाना	66
बनी इस्राईल का क़िस्सा	67
सह़ाबा किराम (रज़ि०) का क़िस्सा	68
दोनों क़िस्सों के फ़ायदे	68
कलिमे वाले और शिर्क	68
कलिमः पढ़ने वाले ख़वारिज	70
ज़कात के इन्कार पर जंग का इरादा	70
ग़ैर अख़्तियारी फ़रियाद करना	71
ज़िन्दा लोगों से दुआ़ करना जायज़	71
तौह़ीद एकेश्वरवाद का सम्बन्ध	72
तौह़ीद के क़ुबूल न करने के उज्र	72
मुसलमान की मौजूदा ह़ालत और शिर्क	75
ह़ालात की तब्दीली	75

विषय	पृष्ठ सं०
उलूमे सिफ़लिया	76
जिन्नात की तस्वीर	76
इल्म अस्मा	76
बुज़ुर्ग परस्ती और बिद्अ़ते	77
नसब को ज़रिया निजात	78
असबियत	79
मुसलमान और किताबुल्लाह	80
मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती	81
शिर्क की ह़िमायत भी शिर्क है	81
इस्लामी अह़्काम	82
मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती	82

भाग- 2
कुफ़्र और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

कुफ़्र की परिभाषा	86
कुफ़्र की क़िस्में	86
कुफ़्र तक्ज़ीब (झुठलाना)	86
कुफ़्र तकब्बुर व इन्कार	87
शक व शुब्हा का कुफ़्र	87
कुफ़्र अस्ग़र	88
कुफ़्र अकबर और कुफ़्र अस्ग़र मे अन्तर	90

भाग- 3
निफ़ाक़ और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

निफ़ाक़ की परिभाषा	92
निफ़ाक़ की क़िस्में	93
एतिक़ादी निफ़ाक़	93
ज़ाहिरी निफ़ाक़ की सूरतें	94
अ़मली निफ़ाक़	94

विषय पृष्ठ सं०

मुनाफ़िक़ की चार निशानियाँ 95
निफ़ाक़ अकबर व निफ़ाक़ अस्ग़र में अन्तर 95

भाग- 4
फ़िस्क़ और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

फ़िस्क़ की परिभाषा 99
फ़िस्क़ की क़िस्में 99
गुमराही और उस की क़िस्में 100
ज़लालत का अर्थ 100

भाग- 5
इरतिदाद और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

इरतिदाद की परिभाषा 103
इरतिदाद की क़िस्में 103
क़ौली इरतिदाद 104
अ़मली इरतिदाद 104
एतिक़ादी इरतिदाद 104
इरतिदाद बेवजह शक 104
दीन के साथ मज़ाक़ का हुक्म 105
मज़ाक़ व इस्तिहज़ा की क़िस्में 106
मज़ाक़ सरीह़ 106
ग़ैर सरीह़ मज़ाक़ (किनाया या इशारे का मज़ाक़ 107

भाग- 6
ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे और बड़े-बड़े गुनाहों का तफ़्सीली ज़िक्र

कुछ ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे 109

विषय पृष्ठ सं०

शफ़ाअ़त का इस्लामी तरीक़ा 110
शफ़ाअ़त का ग़ैर इस्लामी तरीक़ा 112
झाड़फूँक 114
झाड़फूँक की जायज़ क़िस्म 114
तअ़वीज़ की जायज़ होने की शर्तें 114
झाड़फूँक की नाजायज़ क़िस्म 115
तअ़वीज़ व गंडा 115
तअ़वीज़ की क़िस्में 116
तअ़वीज़ की जायज़ क़िस्म 116
तअ़वीज़ की नाजायज़ क़िस्म 116
जादुई मन्त्र और जड़ी बूटी 116
फूँक झाड़ और गंडे 117
फूँक मारना 117
जादू क्या है 118
इस्लाम और झाड़-फूँक 119
झाड़फूँक न कराने पर जन्नत 120
नापसन्दीदा अ़मल 120
तअ़वीज़ गन्डा करना अफ़ज़ल है या न कराना अफ़ज़ल है 120
तअ़वीज़ का ख़ुलासा 121
अ़क़ीदे की ह़िफ़ाज़त 122
क़ब्र की बिदअ़तें 122
समाज की बुरी रस्में 122
कुछ बड़े-बड़े गुनाह 123

भाग- 7
रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़ज़ीम और सह़ाबा के बारे में अ़क़ीदा

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुह़ब्बत व तअ़ज़ीम 125
दुनिया की हर चीज़ से ज्यादा मुह़ब्बत 126
आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम 127

विषय	पृष्ठ सं०
मुहब्बत में हद से आगे बढ़ना	127
अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल	129
आप (सल्ल०) की दो सिफ़तें	129
रसुलुल्लाह (सल्ल०) का दर्जा	129
नबी पर दुरूद	131
नबी पर वह्य होती है	132
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इताअत	133
रसूल की इताअत अल्लाह की इताअत है	133
रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअत का मग़्फ़िरत	134
ज़ालिमों को राह नहीं	134
रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमूना है	135
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम	136
इक्तालीस जगहों पर दुरुद सलाम	137
दुरुद व सलाम के फ़ायदे	137
सहाबा किराम की फ़ज़ीलत	138
सहाबा के बारे में हमारा अक़ीदा	138
सहाबा का मक़ाम	138
आपस में रहम दिल	138
मुहाजिरीन की फ़ज़ीलत	139
सहाबा के औसाफ़	140
सहाबा के दर्जे	141
सहाबा-ए-किराम को बुरा भला कहने की मुमानिअत	141
अहले बैत के बारे में अक़ीदा	143
आले मुहम्मद (सल्ल०) के लिए सदक़ः जायज़ नहीं	143
अजवाज मुतह्हरात की फ़ज़ीलत	144
अहले बैत	145
बीवियाँ भी अहले बैत में है	146
दुरुद में अज़वाजे मुतह्हरात शामिल है	147
अहले बैत के बारे में अहले सुन्नत-वल् जमाअत का अक़ीदा	150
नेक आमाल	152
मुहब्बत ईमान व अमल से होती है	153
इस्लाम के अक़ीदे का ख़ुलासा तर्तीब से	154

सन्देश

प्रख्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सअ़ीदुर्रह़मान आज़मी नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली के क़लम से-

'चान्सलर', इन्टिगरल यूनिवर्सिटी व 'प्रधानाचार्य' और 'सम्पादक' अल्बअ़सुल इस्लामी (अ़रबी मासिक पत्रिका) दारुल उलूम, नदवतुल उल्मा, लखनऊ (यू० पी० इण्डिया)

मोह़तरम जनाब "मुफ़्ती सरवर फ़ारुक़ी नदवी" सदर जमअ़ीयत पयामे अम्न लखनऊ, अपने तब्लीग़ी व तस्नीफ़ी कामों के लिए मशहूर हैं, वह उर्दू और अ़रबी दोनों ज़बानों के साथ-साथ हिन्दी ज़बान के माहिर हैं, इन्होंने हिन्दी ज़बान में कुर्आन मजीद का तर्जुमः किया है और इस की तफ़्सीर पाँच भागों में लिखी है, इसी के साथ इन्होंने हिन्दी ज़बान में इस्लामी लि ट्रेचर की एक बड़ी तअ़दाद तैयार की है और सीरत-ए-रसूल (सल्ल०) को निहायत अच्छे पैराये में हिन्दी भाषा में पेश किया है, चुनाँचे इन का यह अ़मल नतीजाख़ेज़ साबित हुआ।

इस्लाम के समझने में और रसूले पाक (सल्ल०) की ज़िन्दग़ी और इदराक करने में लोगों को बहुत आसानी हुई और नौजवानों के ज़ेहनों को इस्लाम से क़रीब करने का फ़ायदा ह़ासिल हुआ।

इन्होंने इस्लाम का तआ़रुफ़ पेश करने के लिए एक वक़ीअ़ लिट्रेचर हिन्दी ज़बान में तैयार कर दिया है और इस का फ़ायदा भी ह़स्बे तवक़्क़ो ज़ाहिर हो रहा है और दीन की ख़िद्मत करने की सआ़दत इस ज़रिये से भी इन को ह़ासिल हो रही है, अभी ह़ाल ही में इन्होंने हिन्दू धर्म पर एक मुफ़स्सल किताब हिन्दी में तैयार की है। इसी तरह़ उर्दू ज़बान में भी बच्चों की ज़ेहन साज़ी के लिए इस्लामी क्वीज़ के नाम से एक किताब तह़रीर की है, जिस में इस्लामी अ़क़ायद और इस्लामी ज़िन्दग़ी की तमाम ज़रुरियात को सवाल व जवाब के उस्लूब में मुरत्तब कर के शाया किया है।

इस वक़्त इन की किताब **"कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त"** पेशे नज़र है। इस किताब को आठ भागों में बाँटा गया है। भाग-1 में तौह़ीद का तफ़्सील से ज़िक्र करने के बाद भाग-2 में शिर्क का तफ़्सीली ज़िक्र है। फिर भाग-3 में कुफ़्र और उसकी क़िस्मों का ज़िक्र है। भाग-4 में निफ़ाक़ और उसकी क़िस्मों का और भाग-5 में फ़िस्क़ और उसकी क़िस्मों का और भाग-6 में इरतिदाद और उसकी क़िस्मों का और भाग-7 में ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे और बड़े-बड़े गुनाहों को तफ़्सील से ज़िक्र करने के बाद भाग-8 में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़ज़ीम और सह़ाबा के बारे में अ़क़ीदा का ज़िक्र है। इस तरह़ यह किताब एक मुसलमान को बल्कि किसी भी इन्सान को सह़ी रास्ता दिखाने का वास्ता है।

जनाब "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साह़ब" क़ाबिले मुबारकबाद हैं कि वह सह़ी इस्लामी ज़िन्दग़ी की तअ़मीर के लिए इस्लामी शरीअ़त की रौशनी में मुफ़ीद लिट्रेचर बराबर शाया करते रहते हैं, हिन्दी ज़बान में इन का इस्लामी लिट्रेचर ख़ासी तअ़दाद में शाया हो चुका है और इस के ज़रिये बहुत से नौजवानों और इस्लामी सोच रखने वाले लोगों की ज़िन्दग़ी भी तअ़मीर हो रही हैं।

अल्लाह तआ़ला इन के इस अ़मल को क़ुबूल फ़रमाकर बाइसे नफ़ा आ़म बनाए और इख़्लास के साथ पयामे अम्न के मिशन को जारी रखने की तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाए।

सअ़ीदुर्रह़मान आ़ज़मी नदवी
मुदीर "अल् बअ़सुल इस्लामी"
नदवतुल उ़ल्मा, लखनऊ
04-07-2011
01-07-1432 हिज्री

प्रस्तावना

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

अम्बिया-ए-किराम की सारी जद्दोजेहद का मक़्सद तौह़ीदे ख़ालिस का क़याम है वह दुनिया में इसी लिए आते हैं कि ख़ुदा के बन्दों को दूसरों की बन्दग़ी से छुड़ा कर ख़ालिस ख़ुदा का बन्दा बना दें। वह उसी को ख़ालिक़ मानें, उसी को बादशाह कहें, उसी की बन्दग़ी करें, उसी की इताअ़त करें, उसी पर एतिमाद व तवक्कुल करें, उसी से तालिबे मदद हों, नेअ़मत मिले तो उसी का शुक्र अदा करें, मुसीबत आए तो उसी से इस्तिग़ासा करें।

तमअ़, ख़ौफ़, उम्मीद, हर ह़ाल में उन की नज़र उसी की तरफ़ हो वह अपने आप को उस के ह़वाले कर दें। उन की मुह़ब्बत उस की मुह़ब्बत के ताबेअ़, उन की पसन्द उसकी पसन्द के तह़त हो, उस की ज़ात में, उस की सिफ़ात में, उस के ह़ुक़ूक़ में, उस की यकताई तस्लीम करें और किसी पहलू से इन चीज़ों में किसी को शरीक न ठहराएँ। न किसी फ़रिश्ते को, न किसी जिन्न को, न किसी नबी को, न किसी वली को, न किसी और को, न अपनी ज़ात को।

तौह़ीद की ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो जाने के बाद यह बात बिलकुल साफ़ हो गई है कि अस्ल ह़क़ीक़त के एतिबार से तौह़ीदे दीन का सिर्फ़ एक जुज़ नहीं है बल्कि यह सारे दीन पर मुह़ीत है।

नमाज़ इ़बादतों में सबसे बड़ी इ़बादत है लेकिन मकरूह वक़्त में, या हड़पी हुई ज़मीन पर उसका पढ़ना गुनाह है। इसी तरह रोज़ः भी एक अहम इ़बादत है लेकिन ईद या तश्रीक के दिनों में रोज़ः रखना गुनाह है, इसलिए कि यह शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ है। इस तरह नमाज़ इ़बादत की ह़क़ीक़त फ़रमाँबरदारी के रूप में है न कि अपनी मर्ज़ी से नमाज़, रोज़ः आदि।

इ़बादत में अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न मानने का मतलब होता है कि किसी से मुह़ब्बत अल्लाह के समान न हो, न किसी का डर उसके समान हो, न किसी से उम्मीद उसके समान हो, न किसी पर ऐसा भरोसा जैसा अल्लाह पर

होना चाहिए, न किसी काम को इतना ज़रुरी समझे जितना अल्लाह की इ़बादत को, और न अल्लाह के समान किसी की नज़र और मन्नत माने, न अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाए और न अल्लाह के समान किसी दूसरे को सम्मान दे।

समाज में इन कोताहियों के पेशेनज़र यह किताब तैयार की गई है। इसमें किसी को निशाना बनाना मक़्सद नहीं है बल्कि मिसाल दे कर इसलिए बयान किया गया है ताकि लोग तौह़ीद और शिर्क को अच्छी तरह़ समझ सकें उसके लिए मुआ़शरे में जो कुछ होता है उन के नाम के साथ वाज़ेह़ किया गया है, ताकि लोग अपने कुफ़्र शिर्क से दुनिया ही में तौबः कर लें और जन्नत के ह़क़दार हो जाएँ।

इस किताब को आठ भागों में बाँटा गया है। भाग-१ में तौह़ीद का तफ़्सील से ज़िक्र करने के बाद भाग-२ में शिर्क का तफ़्सीली ज़िक्र है। फिर भाग ३ में कुफ़्र और उसकी क़िस्मों का ज़िक्र है। भाग-४ में निफ़ाक़ और उसकी क़िस्मों का और भाग-५ में फ़िस्क़ और उसकी क़िस्मों का और भाग-६ में इरतिदाद और उसकी क़िस्मों का और भाग-७ में ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे और बड़े-बड़े गुनाहों को तफ़्सील से ज़िक्र करने के बाद भाग-८ में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़ज़ीम और सह़ाबा के बारे में अ़क़ीदा का ज़िक्र है। इस तरह़ यह किताब एक मुसलमान को बल्कि किसी भी इन्सान को सह़ी रास्ता दिखाने का वास्ता है।

अब आख़िर में हम जनाब इरफ़ान अह़मद साह़ब, अ़ताउल्लाह सिद्दीक़ी, नजमुस्साबिक़ और जावेद अह़मद के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने प्रूफ़ पढ़ने में मेरी मदद की।

अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाए और तमाम इन्सानों को जन्नत में जाने का ज़रिया बनाए, हम सब को और क़ियामत तक आने वाली तमाम नस्लों को कुफ़्र शिर्क से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और अगर कोई कोताही हो गई हो तो मरने से पहले तौबः की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

दुआ़ओ का तालिब

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

दारुल उ़लूम नदवतुल उ़लमा लखनऊ

9-6-2006

भाग-1

शिर्क की क़िस्मे और समाज में होने वाले शिर्क का तफ़्सीली जायज़ा

शिर्क का विस्तारपूर्वक वर्णन

शिर्क का अर्थ होता है, साझीदार बनाना अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाना और पारिभाषिक अर्थ होता है-

"अल्लाह की ज़ात या उसकी सिफ़तें जिस माना में उस के लिए इस्तिमाल हुई हैं, किसी और के लिए इस्तिमाल करना या अल्लाह की रुबूबियत, उलूहियत में, या किसी को उसके हुक़ूक़ में साझी ठहराना शिर्क है।"

शिर्क का मतलब

अल्लाह की ज़ात में साझीदार ठहराने का मतलब यह है कि अल्लाह को किसी के या किसी को अल्लाह के बराबर ठहराना, किसी को उसकी ज़ात बिरादरी समझना, किसी को उसका बाप या बेटा कहना- जैसे ईसाइयों को अक़ीदा है कि मसीह़ अल्लाह के बेटे हैं, या ह़ज़रत मरयम अल्लाह की माँ हैं- या कुछ लोगों का अक़ीदा है कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं, इस तरह की बातें अल्लाह की ज़ात में बनाना शिर्क है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۭ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝

'वह कहेगा, "जिन्नों और इन्सानों के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं, उन्हीं के साथ तुम भी दाख़िल हो जाओ।" जब भी कोई गिरोह दाख़िल होगा, तो वह अपनी बहन (अर्थात अपने जैसे दूसरे गिरोह) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने

वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, 'ऐ हमारे रब! हम को इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो 'तू' इन्हें आग का दोगुना अ़ज़ाब दे।" वह कहेगा, "हर एक के लिए दोगुना ही है, लेकिन तुम नहीं जानते," (सूरः आराफ़-३८)

शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म

अल्लाह की सिफ़ात में मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के बराबर क़रार देने का साफ़ मतलब है कि मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के बराबर क़रार देना, जो सब से बड़ा ज़ुल्म है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

शिर्क बड़ा (भारी) ज़ुल्म है। (सूरः लुक़मान-१३) إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝

ज़ुल्म कहते हैं किसी चीज़ को उस के अस्ल मक़ाम से हटा कर दूसरी जगह पर रखना, लिहाज़ा जिस ने ग़ैरुल्लाह की इबादत को अपनी अस्ल जगह से हटा कर इस्तेमाल किया और एक ग़ैर मुस्तहिक़ की तरफ़ फेर दिया तो यह सब से बड़ा ज़ुल्म है।

शिर्क-

अल्लाह तआ़ला ने साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि शिर्क करने के बाद जो तौबः नहीं करेगा उस की मग़्फ़िरत नहीं होगी।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा। (सूरः निसा-४८) إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ

मुश्रिक पर जन्नत ह़राम है-

अल्लाह तआ़ला ने इस की भी ख़बर दी है कि उस ने मुश्रिक पर जन्नत ह़राम कर दिया है और यह कि मुश्रिक हमेशा-हमेश के लिए जहन्नम में पड़ा रहेगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझी ठहराएगा, उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।" (सूरः अल् माइदा- ७२) إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝

शिर्क पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है-

शिर्क इन्सान के तमाम पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और अगर उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझीदार ठहराया होता! तो उनका सब किया धरा बरबाद हो जाता। (सूरः अन्आ़म-८८) وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और एक जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और आप की ओर, जो आप से पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है, "अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा सब अकारथ हो जाएगा और तुम घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।" (सूरः ज़ुमर-६५) وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और इसी तरह 'हमने' इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डाल कर धोखा देते थे और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा काम न करते, तो अब उनको छोड़ दो, जो कुछ वे गढ़ते हैं।

(सूरः अन्आ़म-११२)

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ
الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ
مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾

शैतान की चालें-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

''अच्छा, इस वजह से कि 'तूने' मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी 'तेरी' सीधी राह पर उनके लिए घात लगा कर ज़रूर बैठूँगा; फिर उनके आगे, और उनके पीछे, और उनके दाएँ, और उनके बाएँ से, उनके पास आऊँगा; और 'तू' उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।''

(सूरः आ़राफ़-१६-१७)

فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ
أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ
شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

और जब उनके पास कोई बात अम्न की या ख़ौफ़ की पहुँचती है, तो उसे फैला देते हैं, और अगर यह उसे रसूल या अपने में के सरदारों (अधिकारी) के पास पहुँचते हैं, तो उनमें से जो लोग जाँचने की योग्यता रखते हैं उसकी असलियत जान लेते हैं; और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ
أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي
الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٣﴾
فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ
الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ
وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ﴿٨٤﴾

उसकी मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के सिवा सब शैतान की ही पैरवी करने वाले होते। (सूरः निसा-८३)

कुर्आन की आयतों की गलत बयानी-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

'वही' है जिसने तुम पर किताब उतारी, जिसकी कुछ आयतें मुह्कम (सुदृढ़) हैं, वही किताब तो असल (मूल) है- और दूसरी मुतशाबेह (मिलती-जुलती) हैं, तो वह लोग जिनके दिलों मे टेढ़ है, वे मुतशाबेह (संदिग्ध) की पैरवी करते हैं, ताकि फित्ने फैलाएँ, (ग़लत) मतलब बयान कर के, जबकि असली मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और जो लोग इल्म में पक्के होते हैं, वे कहते हैं, ''हम तो इस पर ईमान लाए ये सभी हमारे रब की ओर से है, और नसीह़त तो अक़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं।''

(सूरः आले इमरान-७)

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ
مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ
فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ
مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ
تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۘ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ
آمَنَّا بِهِ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو
الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾

अल्लाह के दोस्त-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे; (सूरः यूनुस-६२)

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

यह लोग जिनको पुकारते हैं वे खुद अपने

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ

الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾

रब' के यहाँ ज़रिया ढूँढते हैं, कि कौन उनमें (अल्लाह का) ज़्यादा से ज़्यादा क़रीबी हो जाए; और 'उसके' रह़मत की उम्मीद लगाते हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं; बेशक तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब है ही डरने की चीज़। (सूरः बनी इस्राईल-५७)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

"मरयम का बेटा, मसीह़, एक रसूल के अ़लावा कुछ भी नहीं; उससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उसकी माँ सच्ची फ़रमाँबरदार थी, दोनों ही खाना खाते थे, देखो! 'हम' इन लोगों के लिए किस तरह निशानियाँ बयान करते हैं; फिर देखो! यह किधर उल्टे जा रहे हैं।" (सूरः माइदा-७५)

अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

कह दीजिए, "क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो न तुम्हें फायदा पहुँचाने की मालिक है और न नुक़सान? और अल्लाह ही ख़ूब सुनने, जानने वाला है।" (सूरः माइदा-७६)

जिनकी पूजा की जाती है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्ठा करेगा, फिर फरिश्तों से कहेगा, "क्या यही थे जो तुम्हारी पूजा किया करते थे?" (सूरः सबा-४०)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

वे कहेंगे, "तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे, बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे, इनमें से, अक्सर यक़ीन भी इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे। (सूरः सबा-४१)

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) से सवाल-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

और जब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे, ईसा! क्या आपने लोगों से कहा था कि 'अल्लाह के अ़लावा दो और मअ़बूद, (उपास्य) मुझे और मेरी माँ, को बना लो?" वह कहेंगे, "तू" पाक (महिमावान) है! मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं; अगर मैंने ऐसा कहा होता तो 'तुझे' मालूम ही होता, 'तू' जानता है, जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता जो कुछ 'तेरे' मन में है, बेशक 'तू' छिपी

बातों का खूब जानने वाला है।"

(सूरः माइदा-११६)

अल्लाह से कुर्बत-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلْفَىٰٓ إِنَّ ٱللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِى مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ كَٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं (और कहते हैं), "हम इनकी इबादत (पूजा) केवल इसलिए करते हैं कि हमें अल्लाह से निकट कर दें।" अल्लाह उनमें फ़ैसला कर देगा जिस में ये मतभेद कर रहे हैं, बेशक अल्लाह उस व्यक्ति को राह नहीं दिखाता जो झूठा और नाशुक्रा हो।

(सूरः अल् ज़ुमर-३)

अल्लाह के सिफ़ारशी-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ

और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इबादत करते हैं जो उनको न कुछ नुक़सान पहुँचा सकें और न उन का कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं,"यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।" कह दीजिए, "क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो, जिसे 'वह' नहीं जानता न आसमानों में न ज़मीन में?" पाक और बुलन्द है 'वह' इस शिर्क से, जो यह लोग करते हैं। (सूरः यूनुस-१८)

अल्लाह को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

ٱدْعُوا۟ رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो, बेशक 'वह' ह़द से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता;

(सूरः आराफ़-५५)

सिफ़ारिश अल्लाह के अख़्तियार में है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُل لِّلَّهِ ٱلشَّفَٰعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

कह दीजिए, "सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, फिर 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।" (सूरः अल् ज़ुमर-४४)

मूसा की क़ौम-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٥﴾

और जब तुमने कहा, "ऐ मूसा! हम तुम्हारे कहने पर ईमान नहीं लाएँगे जब तक कि अल्लाह को सामने न देख लें," फिर तुम पर (बिजली का) कड़ाका टूट पड़ा और तुम देख रहे थे।

(सूरः बकरः-५५)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِۦ

वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, 'मगर

उस व्यक्ति की' जिससे अल्लाह खुश हो और वे उसके जलाल से डरते हों।

مُّشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

(सूरः अम्बिया-२८)

अल्लाह के साथ दूसरों को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।

فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا

(सूरः जिन्न-१८)

झुठलाने वालों का अन्जाम-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

कह दीजिए, ''धरती में चल फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ!'' (सूरः अन्आ़म-११)

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

इस्लाम के अ़लावा दीन कुबूल नहीं-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो 'वह' उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा, और वह व्यक्ति आख़िरत में बड़ा घाटा उठाने वालों में से होगा।

وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

(सूरः आले इमरान-८५)

तकलीफ़ में बड़े को पुकारते हैं-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और जब तुमको समुद्र में तकलीफ़ पहुँचती

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ

है, तो 'उससे' सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर खुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुँचा देता है तो तुम 'उससे' मुहँ मोड़ जाते हो, इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है। (सूरः बनी इस्राईल-६७)

فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ पड़े, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ)।'' (सूरः अन्आ़म-४०)

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

(नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस के लिए तुम 'उसे' पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता तो उसको दूर कर देता, और जिनको तुम शरीक बनाते हो, उन्हें भूल जाते हो।''

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

(सूरः अन्आ़म-४१)

तकलीफ़ में उसी को पुकारते हैं-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ

نेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, "अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।" (सूरः ज़ुमर-८)

مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो वे अल्लाह ही को पुकारते हैं, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस करते हुए, फिर जब 'वह' उन्हें बचा कर थल की ओर ले आता है, तो उनमें से कुछ ही सही राह पर क़ायम रहते हैं, और 'हमारी' निशानियों का इन्कार तो बस वही लोग करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले नाशुक्रे हैं।

(सूरः लुक़मान-३२)

وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٢﴾

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और जब तुम धरती पर सफ़र करो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, कि नमाज़ को कम करके पढ़ो; अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर लोग तुम्हें सताएँगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं। (सूरः निसा-१०१)

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿١٠١﴾

शिर्क की क़िस्में

१- शिर्क अकबर

२- शिर्क अस्ग़र

शिर्क अकबर की तीन क़िस्में-

१- अल्लाह की तरह इ़ल्म में किसी भी मख़लूक़ को साझीदार बनाना।

२- तसर्रूफ़ (इख़्तियार) में किसी को साझीदार समझना इ़बादत में किसी को साझीदार बनाना।

३. इबादत में किसी को साझीदार बनाना।

अल्लाह के बराबर इ़ल्म में शिर्क

किसी बुज़ुर्ग या पीर को यह समझना कि हमारे हर ह़ाल की उसको हर वक़्त ख़बर है, नुजूमी पंडित से ग़ैब की ख़बरें मालूम करना, या किसी बुज़ुर्ग के कलाम से फ़ाल देखकर उस पर यक़ीन कर लेना या किसी को दूर से पुकारना, या यह समझना की उसको ख़बर हो गई, किसी को हर जगह ह़ाज़िर व नाज़िर समझना, या हर चीज़ की ख़बर हर वक़्त बराबर अल्लाह के सिवा किसी और को समझना दूर की हो या क़रीब की छुपी हो या खुली अंधेरे में हो, या उजाले में, आसमानों में हो या ज़मीनों में, पहाड़ो की चोटी पर हो या समुन्दर की तह तक इन सबका इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

किसी का नाम लें उठते बैठते जैसे 'या वारिस' और दूर या क़रीब से मुसीबत में उस को पुकारे और दुश्मन पर उसका नाम लेकर हमला करे और उसके नाम का ख़त्म पढ़े या उसकी सूरत का ख़याल बांधे और यूँ समझे कि जब मैं उसका नाम लेता हूँ ज़बान से या दिल से या उसकी सूरत का या उसकी क़ब्र का ख़्याल बांधता हूँ तो वहीं उसको ख़बर हो जाती है और उससे मेरी कोई बात छिपी नहीं रह सकती और जो मुझ पर ह़ालात गुज़रते हैं, जैसे बीमारी व तन्दुरूस्ती के ग़म व ख़ुशी के सबकी उसको हर वक़्त ख़बर हो जाती है और जो

बात मेरे मुँह से निकलती है, वह सब सुन लेता है, और जो ख़याल व वहम मेरे दिल में गुज़रता है वह सबसे वाक़िफ़ है। इस तरह के अक़ीदों से आदमी मुश्रिक हो जाता है, चाहे यह अक़ीदा नबियों के साथ रखे या वलियों के साथ, या पीरों के साथ, या शहीदों के साथ या इमामों के साथ, भूत या परियों के साथ, इन सबसे आदमी मुश्रिक हो जाता है।

इ़ल्म ग़ैब

ग़ैब का इ़ल्म केवल अल्लाह को है जैसे कि अल्लाह तआ़ला ख़ुद कुर्आन में फ़रमाता है।

وَعِنْدَهُۥ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

और 'उसी' के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं, जिन्हें 'उसके' सिवा कोई नहीं जानता; जल और थल में जो कुछ है, उसे 'वह' जानता है, और जो पत्ता भी गिरता है, उसे 'वह' ज़रूर जानता है; और ज़मीन के अन्धेरों में कोई दाना हो, और कोई हरी, या सूखी चीज़ हो, मगर वह सब रौशन किताब में मौजूद है। (सूरः अनआ़म-५९)

जिस तरह अल्लाह ने अपने बन्दों के ज़ाहिर की चीज़ों के मालूम करने के लिए कुछ चीज़ें बनाई हैं जैसे आँख देखने को, कान सुनने को, नाक सूंघने को, ज़बान चखने को, हाथ टटोलने को, अ़क्ल समझने को वह चीज़ें इसके अख़्तियार में दी हैं कि अपनी ख़्वाहिश के अनुसार उनसे काम लेता है।

जैसा कि जब देखने को दिल चाहा तो आंखें खोल दीं, न चाहा तो बन्द कर दीं, जिस चीज़ का मज़ा मालूम करने का इरादा किया मुँह में डाल लिया, और इरादा न हुआ तो न डाला, इस तरह इन चीज़ों के मालूम करने की कुन्जियाँ इनको दी हैं जैसे जिसके हाथ कुंजी होती है ताला उसके अख़्तियार में होता है जब चाहे खोले जब चाहे न खोले।

इसी तरह अल्लाह ने ग़ैब की कुन्जियाँ अपने हाथ में रखीं हैं, किसी वली या नबी को इमाम या इमाम ज़ादे को, भूत या परी को, अल्लाह ने यह ताक़तें नहीं दी कि जब वह चाहें ग़ैब की बात मालूम कर लें बल्कि अल्लाह तआ़ला अपने इरादे से कभी किसी को जितनी बताना चाहता है ख़बर कर देता है।

तमाम इ़ल्म केवल अल्लाह तआ़ला को है-

जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌۢ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٤﴾

बेशक उस (क़ियामत की) घड़ी का इल्म अल्लाह ही के पास है, 'वही' बारिश बरसाता है और जानता है जो कुछ (माओं के) रह़म (गर्भ) में है, कोई व्यक्ति नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (सूरः लुक़मान-३४)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ٱلْغَيْبَ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के और वे नहीं जानते कि कब उठाए जाएँगे।''

(सूरः नम्ल-६५)

वह गुमराह है जो अल्लाह के अ़लावा किसी को पुकारता है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ﴿٥﴾

और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है! जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारता हो, जो क़ियामत तक उनको जवाब नहीं दे सकते, और वे उनकी पुकार से बेख़बर हों।

(सूरः अह्क़ाफ़-५)

तसर्रूफ़ (अख़्तियार) में शिर्क

तसर्रूफ़ में शिर्क का मतलब है कि किसी को नफ़ा नुक़्सान का मालिक समझना या किसी से मुरादें मांगना, रोज़ी या औलाद मांगना, किसी को अपने इरादे से तसर्रूफ़ करना और अपना हुक्म जारी करना, और अपने इरादे से मारना या जिलाना, रोज़ी देना या तंग करना, तन्दुरुस्त या बीमार कर देना, मुरादें पूरी करना, बलाएं टालना, मुश्किल में किसी को पुकारना, यह सब अल्लाह के काम हैं और किसी नबी, वली, पीर, शहीद, भूत या परी की यह शान नहीं कि कोई इनसे मुरादे मांगे।

जो कोई किसी और के लिए ऐसा तसर्रुफ़ साबित करे और उससे मुरादे मांगे और इस उम्मीद पर नज़र व नियाज़, करे और उसकी मन्नतें माने, और मुसीबत के वक़्त उसे पुकारे, तो वह मुश्रिक हो जाता है।

नज़र व नियाज़-

जैसा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:-

قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

कह दीजिए, ''वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और वह पनाह देता है, और कोई उसके मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो?'' (सूरः मूमिनून-८८)

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

वह ज़रूर यही कहेंगे "यह सब अल्लाह ही का है,'' कह दीजिए, ''फिर तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?''

(सूरः मुमिनून-८६)

अल्लाह ही के अधिकार में है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾

और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं; जिन्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं और न क़ुदरत ही रखते हैं।

(सूरः नहल-१६)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

और अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारना जो न तुम्हें फायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, अगर तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगे।

(सूरः यूनुस-१०६)

ज़र्रह बराबर जो मालिक न हो-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

कह दीजिए, "अल्लाह को छोड़ कर जिनका तुम्हें दावा है, उनको पुकार कर देखो वह न आसमानों में ज़र्रा बराबर चीज़ के मालिक हैं, और न ज़मीन में, और न उन दोनों में उन का कोई साझा

है, और न उनमें से कोई उसका मददगार है।" (सूरः सबा-२२)

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُۥ
حَتَّىٰٓ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا۟ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ
قَالُوا۟ ٱلْحَقَّ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

और "उसके" यहाँ कोई सिफ़ारिश काम न आएगी, लेकिन उसी की जिसको 'उसने' इजाज़त दी होगी, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी, तो (फ़रिश्ते) कहेंगे, ''तुम्हारे रब ने क्या कहा?'' वे कहेंगे, ''बिल्कुल हक़ (कहा), और 'वह' महान और ऊँचा है।'' (सूरः सबा-२३)

मक्का के मुश्रिक-

मक्का के मुश्रिक भी अल्लाह को मानते थे और उसके 'वुजूद' के क़ायल थे, क़अ़बः की हिफ़ाज़त करते थे, ख़ुद को इब्राहीमी दीन के मानने वाले समझते थे मगर अल्लाह के तसर्रूफ़ में अपने सरदारों को और देवी देवताओं को भी शामिल करते थे। उनके ख़याल में रिज़्क़ किसी एक देवता के ज़िम्मे था, तो बारिश किसी और के बस में थी, बीमारी व सेहत किसी दूसरे देवता के अख़्तियार में थी, तो औलाद किसी और के अख़्तियार में थी जैसा कि हमारे यहाँ ब्रहमा को पैदा करने वाला, विष्णु को रोज़ी देने वाला, महेश को मौत देने वाला समझा जाता है। इसी को मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि इन सब बातों का अख़्तियार केवल अल्लाह ही को है।

इ़बादात में शिर्क

इ़बादत की परिभाषा-

'इ़बादत' किसी का ज़्यादा से ज़्यादा दिल व जान से बेहद आजज़ी व इन्किसारी के साथ अपने इरादे से अख़्तियार करने का नाम इ़बादत है, और दीन की इस्तिलाह में अपने-अपने समय के अनुसार शरीअ़त को लाने वाले नबियों की फ़रमाँबरदारी करने का नाम है। अगर कोई काम शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ किया जाए वह चाहे इ़बादत के रूप में ही क्यों न हो इ़बादत नही समझी जाएगी बल्कि गुनाह होगा।

इ़बादत की ह़क़ीक़त

नमाज़ इ़बादतों में सबसे बड़ी इ़बादत है लेकिन मकरूह वक़्त में, या हड़पी हुई ज़मीन पर उसका पढ़ना गुनाह है। इसी तरह रोज़ः भी एक अहम इ़बादत है लेकिन ईद या तशरीक के दिनों में रोज़ः रखना गुनाह है, इसलिए कि यह शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ है। इस तरह नमाज़ इ़बादत की ह़क़ीक़त फ़रमाँबरदारी के रूप में है न कि अपनी मर्ज़ी से नमाज़, रोज़ः आदि।

इ़बादत में अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न मानने का मतलब होता है कि किसी से मुह़ब्बत अल्लाह के समान न हो, न किसी का डर उसके समान हो, न किसी से उम्मीद उसके समान हो, न किसी पर ऐसा भरोसा जैसा अल्लाह पर होना चाहिए, न किसी काम को इतना ज़रुरी समझे जितना अल्लाह की इ़बादत को, और न अल्लाह के समान किसी की नज़र और मन्नत माने, न अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाए और न अल्लाह के समान किसी दूसरे को सम्मान दे।

अल्लाह के अ़लावह किसी और के साथ इबादत जैसा मामला करना

अल्लाह के सिवा किसी और को सज्दः करना, रुकूअ़ करना, हाथ बांध कर खड़े होना, किसी के नाम का जानवर दौड़ाना या चढ़ावा चढ़ाना, किसी के नाम की मन्नत मानना, किसी की क़ब्र या घर का तवाफ़ करना, अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में किसी दूसरे की बात या रस्म को ज़्यादा बेहतर समझना किसी के सामने झुकना।

किसी के नाम पर जानवर ज़िब्ह करना, किसी जगह को कअ़बे का सा अदब व तअ़ज़ीम करना, या जो चीज़ें अल्लाह ने अपने लिए ख़ास की हैं उनमें किसी को साझीदार ठहराना। किसी के नाम का रोज़ः रखना और उसके घर की ओर दूर-दूर से सफ़र करके जाना और ऐसी सूरत बना कर चलना कि हर आदमी जान ले कि यह लोग उस घर की ज़ियारत के लिए जा रहे हैं, रास्ते में उस का नाम पुकारना और वहाँ जा कर तवाफ़ करना, या सज्दः करना, या जानवर ले जाना और वहाँ मन्नतें मानना, उसकी चौखट के आगे खड़े होकर दुआ़ माँगना, दीन व दुनिया की मुरादें माँगना, पत्थर को बोसा देना उसकी दीवार से अपना मुँह और छाती मलना, उसका ग़िलाफ़ पकड़ कर दुआ़ माँगना, उसका मुजावर बनकर उसकी ख़िदमत करना, उसके कुएँ के पानी को बरकत वाला समझ कर पीना, बदन पर डालना, आपस में बाँटना, ग़ैर ह़ाज़िर लोगों के लिए ले जाना, रुख़सत होते वक़्त उल्टे पैर चलना, वहाँ के जंगल का अदब करना-अर्थात पेड़ न काटना, घास न उखाड़ना- यह सब काम अल्लाह ने अपनी इ़बादत के लिए बताए हैं।

अब अगर कोई व्यक्ति इन बातों को पीर व पैग़म्बर के साथ, या किसी देवी-देवता के साथ, या किसी की सच्ची या झूठी क़ब्र के साथ, या किसी के थान पर, या किसी के घर को, या किसी के तबर्रुक़ को, या निशान को, या ताज़िया को सज्दः या रुकूअ़ करे, या उसके नाम का रोज़ः रखे, या हाथ बांध कर खड़ा

हो या जानवर चढ़ाए, या ऐसे घरों में दूर-दूर से ज़ियारत की नियत सेजाए और उसके साथ वही काम करे जो ऊपर बताया जा चुका है यह सब बातें शिर्क हैं।

बुज़ुर्ग को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

اتَّخَذُوٓا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَٱلْمَسِيحَ ٱبْنَ مَرْيَمَ وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوٓا۟ إِلَٰهًا وَٰحِدًا ۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्मज्ञाताओं (उलमा) और सन्तों (बुज़ुर्गों) को रब बना लिया है, और मसीह इब्ने मरयम को भी-हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वह 'केवल एक मअ़बूद' (उपास्य) की इबादत करें 'जिसके' सिवा कोई उपास्य नहीं, पाक है 'वह' उस शिर्क से जो यह करते हैं। **(सूरः तौबः-३१)**

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी और की इ़बादत नहीं की जाएगी और न किसी के सामने सज्दः किया जाएगा।

आदम और मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त

कुछ लोग कह देते हैं कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को फ़रिश्तों ने सज्दः किया था और ह़ज़रत याकूब (अ़लै०) ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को किया था तो हम भी किसी बुज़ुर्ग को सज्दः कर लें तो क्या ह़र्ज है।

यह बात ग़लत है क्योंकि अब ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की शरीअ़त नहीं है, इसलिए कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के ज़माने में अपनी बहनों से निकाह़ करना जायज़ था, लेकिन अब ह़राम है अब तो केवल क़ियामत तक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त पर अ़मल करने वाला ही निजात पाएगा, पिछली शरीअ़तें मन्सूख़ (ख़त्म) हो चुकी हैं। इसलिए अब ह़ज़रत इब्राहीम, याकूब या यूसुफ़ (अ़लै०) की शरीअ़तों पर अ़मल करने वाला निजात नहीं पाएगा।

अल्लाह की सिफ़ात (गुणों) में शिर्क

अल्लाह की जो सिफ़तें (गुणवाचक नाम) या जो सिफ़ाती नाम हैं वह सब अल्लाह के लिए ही ख़ास हैं, जैसे-

ख़ालिक़, राज़िक़, अ़लीम आदि। इन में से किसी को साझीदार ठहराना शिर्क है, लेकिन इसके साथ यह भी शर्त है कि जिस अर्थ में वह अल्लाह के लिए इस्तिमाल होता हो उस का फ़ायदा यह है कि जब हम इन शब्दों को अल्लाह के लिए बोलते हैं तो इसका मतलब ख़ास होता है, लेकिन अगर इन्सान के लिए भी उस सिफ़त को उसी मतलब में बोल दें जो अल्लाह के लिए बोलते हैं तो यह अल्लाह की सिफ़त में साझीदार ठहराना हो जाएगा।

अल्लाह के हुक़ूक़ में शिर्क

हुक़ूक़ में साझीदार बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह की तमाम सिफ़तों से जो बातें निकलती हैं या जो हुक़ूक़ हम पर आते हैं उन में किसी को साझीदार ठहराना। जैसे- अल्लाह ख़ालिक़ है तो इस से पता चलता है कि तमाम दुनिया में हुक्म व इन्तिज़ाम उसी का हो। अब अगर हम यह मानें कि आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है, लेकिन साथ ही यह भी मान लें कि उन का इन्तिज़ाम अल्लाह के सिवा किसी और के हाथ में है, तो यह अल्लाह के साथ साझी ठहराना हो जाएगा।

इस तरह जब ख़ालिक़(सृष्टा) वही है तो बन्दगी और फ़रमाँबरदारी उसी की हो, अगर किसी और की बन्दगी अपना लें, या उस की फ़रमाँबरदारी के ख़िलाफ़ किसी और की फ़रमाँबरदारी को क़ुबूल कर लें, जिस तरह उस की होनी चाहिए तो यह सब बातें हुक़ूक़ में शरीक ठहराना हो जाएगा।

इस तरह की बहुत सी बातें और सूरतें, शिर्क या ज़रिया शिर्क हैं। जो असली शिर्क का दरवाज़ा खोल देती हैं, जिसे हम क़ुर्आन की दी गई इन आयतों

से अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

शिर्क नाक़ाबिले माफ़ी जुर्म-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفْتَرَىٰٓ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को 'उसका' साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा, और जिसने अल्लाह का साझीदार बनाया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ लिया।

(सूरः निसा-४८)

दूसरी जगह फ़रमाया-

قُلْ بِفَضْلِ ٱللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِۦ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا۟ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

कह दीजिए, ''यह अल्लाह की मेहरबानी तो 'उसकी' रह़मत से नाज़िल हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर खुश हों, इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है जिस को यह जमा करने में लगे हैं।'' (सूरः यूनुस-५८)

आदतों में शिर्क

आदतों में भी कभी-कभी दबे पाँव शिर्क आ जाता है। जैसे- नेक और बुरे वक़्त का मानना, नुजूमी के कहने पर यक़ीन करना, किसी के नाम पर कान-नाक छेदना, बाली पहनाना, किसी के नाम का पैसा बाज़ू पर बाँधना या गले में नाड़ा डालना, चोटी रखना, बद्दी बाँधना, फ़क़ीर बनाना, अ़ली बख़्श, हुसैन बख़्श, अताउन्नबी आदि नाम रखना, किसी चीज़ को अछूती समझना, किसी जानवर पर किसी का नाम लगा कर उसका अदब करना,

शुगून लेना, किसी महीने को मन्हूस समझना या यूँ कहना कि अल्लाह व रसूल चाहेगा तो फ़लाँ काम हो जाएगा, किसी के नाम की क़सम खाना, किसी को शहनशाह कहना, ख़ास तौर से किसी बुज़ुर्ग की फ़ोटो रखना और उसकी तअ़ज़ीम करना, कुफ़्र को पसंद करना, कुफ़्र की बातों को अच्छा जानना।

ऊपर की तमाम बातों का नतीजा यह है कि शिर्क से बचा जाए जिसमें एक वह शिर्क, जिसका सम्बन्ध अल्लाह तआ़ला की ज़ात से हो, दूसरा वह जिसका सम्बन्ध उसकी सिफ़ात से हो दोनों शिर्क हैं।

शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क)

बड़ा शिर्क बन्दे को दायरे मिल्लत से निकाल देता है और उस को हमेशा के लिए जहन्नम भेज देता है, यह उस सूरत में है जब कि वह शिर्क पर ही मरा हो, और तौबः की तौफ़ीक़ न मिली हो, शिर्क अकबर का मतलब है किसी इबादत को ग़ैरुल्लाह के लिए अदा की जाए, जैसे ग़ैरुल्लाह से दुआ़ करना, ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब ह़ासिल करने के लिए उस की बारगाह में कुर्बानी करना, नज़र व नियाज़ चढ़ाना, इसमें मज़ारात, जिन्न व शैतान सब आ जाते हैं, इसी तरह़ मुर्दा या जिन्नात व शयातीन से ख़ौफ़ खाना कि वह उसे तकलीफ़ न पहुँचा दे, उस को कहीं बीमारी में मुब्तिला न कर दे।

इसी तरह़ ग़ैरुल्लाह से ऐसी उम्मीदें वाबस्ता रखना जिस पर सिर्फ़ अल्लाह कुदरत रखता है, जैसे- ह़ाजत पूरी करना, मुसीबत दूर करना, इस तरह़ के शिर्क आज कल बुर्जुगो की क़ब्रों पर ख़ूब हो रहे हैं, इस तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ

और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इबादत करते हैं जो उनको न कुछ नुक़सान पहुँचा सकें और न उनका कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं ''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।'' (सूरः यूनुस-१८)

शिर्क अस्ग़र (छोटा शिर्क)

शिर्क अस्ग़र से बन्दा इस्लाम से ख़ारिज तो नहीं होता, लेकिन उस की तौह़ीद में कमी आ जाती है, यह शिर्क अकबर का एक ज़रिया बनता है। जिस की दो क़िस्में हैं।

१. शिर्क जली (ज़ाहिरी शिर्क)

यह शिर्किया अल्फ़ाज़ व काम होते हैं, शिर्किया अल्फ़ाज़ में ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना आता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद हैः

"जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उस ने कुफ़्र किया या शिर्क किया।" (तिर्मिज़ी)

".....आप (सल्ल०) का उस शख़्स से यह फ़रमाना जिस ने कहा था कि अगर अल्लाह तआ़ला और आप ने चाहा तो ऐसा होगा, तो क्या तुम ने मुझे अल्लाह तआ़ला के बराबर बना दिया, कहो अगर अल्लाह ने चाहा तो होगा।" (नसई)

इसी तरह़ यह कहना "अगर फ़लां न होता तो ऐसा होता" जब कि उस के क़ौल का सह़ी तरीक़ा यह है जैसा अल्लाह तआ़ला ने चाहा, फिर फ़लां शख़्स ने किया, जिस से यह मफ़ूहम ख़ुद ब ख़ुद पैदा हो जाता है कि बन्दे की चाहत अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के ताबे है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते जब तक कि वह अल्लाह रब्बुलआ़लमीन (सारे संसार का रब) न चाहे। (सूरः तकवीर- २९)

शिर्किया आ़माल जैसे- कड़ा पहनना, नफ़ा नुक़सान के लिए या मुसीबत से बचने के लिए धागा बाँधना, इन आ़माल के साथ जब यह अ़क़ीदा हो कि इन से मसायब व परेशानियाँ दूर होती हैं, बलाएँ टलती हैं, तो यह शिर्क अस्ग़र है,

इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इन चीज़ों को इन मक़ासिद के ज़राए नहीं बनाए हैं, लेकिन अगर किसी शख़्स का यह एतिक़ाद हो कि यह चीज़ें ख़ुद बला व मुसीबत दूर करती हैं तो यह शिर्क अकबर हो जाती हैं, इसलिए कि इस में ग़ैरुल्लाह के साथ उस तअ़ल्लुक़ का इज़हार हो रहा है जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास है।

२. शिर्क ख़फ़ी (हल्का शिर्क)

यह इरादों और नियतों का शिर्क है, जिसे रियाकारी शोहरत, यानी अल्लाह तआ़ला से तक़र्रुब वाले अ़मल इसलिए किये जाएँ ताकि लोग उस की तअ़रीफ़ करें। जैसे- कोई शख़्स अच्छी नमाज़ सिर्फ़ इसलिए पढ़ता है, या सद्क़ा व ख़ैरात सिर्फ़ इसलिए करता है कि लोग सुनें तो उस की ख़ूब तअ़रीफ़ करें, किसी भी अम़ल में जब रियाकारी आ जाती है तो वह अ़मल बातिल हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

"तो जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे काम करता रहे, और अपने रब की इबादत में किसी को साझीदार न बनाए।"

(सूरः कहफ़- ११०)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) फ़रमाते है

"तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ सब से ज़्यादा डर मुझे शिर्क अस्ग़र से है, लोगों ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल शिर्क अस्ग़र से क्या मुराद है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया रियाकारी।"

(अह़मद, तबरानी, अलबग़वी)

इसी तरह दुनियावी लालच में कोई दीनी अ़मल करना भी शिर्क ख़फ़ी (हल्का) है, जैसे कोई शख़्स सिर्फ़ माल व दौलत के लिए ह़ज करता हो, अज़ान देता हो, या लोगों की इमामत करता हो, उ़लूमे शरअ़िया ह़ासिल करता हो जिहाद

फ़ी सबीलिल्लाह करता हो, ऐसे लोगों के सिल्सिले में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः

"हलाक हुआ दीनार का बन्दा, हलाक हुआ दिरहम का बन्दा, हलाक हुआ काली चादर का बन्दा, हलाक हुआ मख़्मली चादर का बन्दा, अगर उसे दिया जाता है तो ख़ुश होता है, और अगर नहीं दिया जाता है तो नाख़ुश रहता है।" **(बुख़ारी)**

"अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़०) फ़रमाते हैं कि इरादों व नियतों का शिर्क तो यह है कि जिस का कोई किनारा नहीं, और बहुत कम ही लोग इस से बच पाते हैं, लिहाज़ा जिस शख़्स ने अपने अ़मल से अल्लाह की रज़ामन्दी के अ़लावह किसी दूसरी चीज़ का इरादा किया या अल्लाह से तक़र्रुब के अ़लावह किसी और चीज़ की ओर ग़ैरुल्लाह से उस अ़मल के जज़ा की दरख़्वास्त की तो वह नियत व इरादे का शिर्क है।"

इख़्लास

इख़्लास का मतलब यह है कि अपने तमाम आ़माल व अफ़आ़ल इरादा व नियत में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात को ख़ालिस किया जाए।

यही चीज़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत है, जिस को अख़्तियार करने का हुक्म अल्लाह तआ़ला ने अपने हर बन्दे को दिया है। इसलिए कि इस के अ़लावह कोई दूसरी चीज़ अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़बूल नहीं, यही इस्लाम की ह़क़ीक़त है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा, और वह व्यक्ति आख़िरत में बड़ा घाटा उठाने वालों

में से होगा।" (सूरः आले इमरान-८५)

यही ह़क़ीक़त ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत है। लिहाज़ा जो व्यक्ति भी एराज़ करेगा वह दुनिया का सब से बड़ा नादान होगा।

शिर्क अकबर और अस्ग़र में अन्तर

१- शिर्क अकबर से एक मुसलमान, मिल्लत से ख़ारिज हो जाता है और अस्ग़र से मिल्लत से ख़ारिज नहीं होता।

२- शिर्क अकबर मुश्रिक को हमेशा-हमेश के लिए जहन्नम रसीद कर देता है जब कि शिर्क अस्ग़र से ऐसा कुछ नहीं होता, अगर वह जहन्नम में गया भी तो ज़्यादा दिन तक नहीं रखा जाएगा।

३- शिर्क अकबर तमाम आ़माल को बर्बाद कर देता है मगर शिर्क अस्ग़र तमाम आ़माल को बर्बाद नहीं करता, लेकिन रियाकारी वाले काम तमाम आ़माल को ख़त्म कर देते हैं।

४- शिर्क अकबर मुश्रिक के माल व दौलत को मुबाह़ क़रार देता है जब कि शिक ंअस्ग़र में ऐसा नहीं होता।

मक्का के मुश्रिक और तौह़ीदे रुबूबियत

मक्का के काफ़िर तौह़ीद रुबूबियत और एक अल्लाह को मानते थे, लेकिन साथ में दूसरों को भी शरीक करते थे, जिस पर नबी (सल्ल०) से कहा गया।

ऐ नबी (सल्ल०)! इनसे पूछिए कि तुम को ज़मीन व आसमान में रिज़्क़ कौन देता है? तो यही जवाब देंगे कि अल्लाह। लेकिन फिर भी अल्लाह को छोड़कर दूसरों को शरीक करते हैं।

ज़मीन व आसमान में रिज़्क़ कौन देता है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ

कह दीजिए, "तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है? या यह

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۱﴾

कान और आखें किसके अधिकार में हैं और कौन जानदार को निकालता है बेजान से, और बेजान को निकालता है जानदार से, और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?" इस पर वे बोल पड़ेंगे "अल्लाह!" तो कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?" (सूरः यूनुस-३१)

मुश्रिकों से सवाल जवाब-

इन मुश्रिकों से यह भी पूछिए-

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾

कह दीजिए, "ज़मीन और उस पर जो कुछ है, (सब) किसका है? बताओ अगर तुम जानते हो?" (सूरः मोमिनून-८४)

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ

वे बोल पड़ेंगे, "अल्लाह का," कह दीजिए, "फिर तुम सोचते क्यों नहीं?"

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

कह दीजिए, "सातों आसमान का मालिक, और आलीशान अर्श (महान राजासन) का मालिक कौन है?"

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ

वे कहेंगे "सब अल्लाह ही का है" कह दीजिए, "फिर डरते क्यों नहीं?"

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

कह दीजिए, "वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और वह पनाह देता है, और कोई 'उसके' मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो?"

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ

वह ज़रूर यही कहेंगे कि यह सब अल्लाह ही का है," कह दीजिए, "फिर

तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?"
(सूरः मुमिनून- ८५-८६-८७-८८-८९)

इन आयतों से यह साबित हुआ कि ऊपर दी गई चीज़ों का इक़रार करते थे, इसके बावजूद वह मुश्रिक थे और जिस तौह़ीद की रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दअ़वत दी वह उस पर अ़मल करने वाले नहीं थे।

मुश्रिकों की अ़िबादत

एक अल्लाह की अ़िबादत का इन्कार शिर्क है

यह भी साबित हुआ कि जिस तौह़ीद का वह लोग इन्कार करते थे वह एक अल्लाह की अ़िबादत है, जिसको हमारे ज़माने में शिर्क करने वाले एतिक़ाद का नाम देते हैं। फिर मक्का के मुश्रिक अल्लाह तआ़ला को ही पुकारते थे, लेकिन साथ में फ़रिश्तों को भी पुकारते थे फिर इसका मतलब वह इस तरह़ बताते थे कि यह फ़रिश्ते या देवी देवता अल्लाह के क़रीबी हैं हमारी सिफ़ारिश करेंगे।

जैसे- "लात, उज्ज़ा या किसी नबी को पुकारते थे।"

इससे यह भी साबित हुआ कि इसी शिर्क की रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुख़ालिफ़त की और अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत की दअ़वत दी।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

وَ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا

और यह कि मस्जिदें (सब सज्दे) अल्लाह ही के लिए हैं, तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। (सूरः जिन्न-१८)

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ

'उसी' के लिए सच्ची पुकार है; उसके अ़लावा जिनको ये पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी जवाब नहीं देते।
(सूरः रअ़द-१४)

मुश्रिकों से मुख़ालिफ़त की वजह

यह भी साबित हुआ कि रसूले अकरम (सल्ल०) ने मुश्रिकीन की जो मुख़ालिफ़त की वह इसलिए कि केवल अल्लाह ही को पुकारा जाए जानवर उसी के नाम पर ज़ब्ह़ किये जाएँ, नज़रें उसी के नाम से की जाएँ और हर ज़रूरतें उसी से माँगी जाएँ और हर तरह़ की अ़िबादत उसी के नाम की हो।

और यह भी साबित हुआ कि केवल तौह़ीदे रुबूबियत (एक अल्लाह को पालनहार) के मानने से मुश्रिकीने मक्का इस्लाम में दाख़िल न हो सके। वह लोग जब फ़रिश्तों, नबियों, वलियों को पुकारते थे तो वह कहते थे कि हम इनको सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का क़रीबी मानकर पुकारते थे। अब यह बात आपके इ़ल्म में आ चुकी होगी कि वह तौह़ीद क्या थी जिसकी ओर नबियों ने दअ़वत दी, लेकिन मुश्रिकों ने उसको क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया।

मुश्रिकों का मअ़बूद (पूज्य)

मुश्रिकों के नज़दीक मअ़बूद वह होता है जिसकी ओर कुछ उम्मीद लगाई जाए वह रसूल हों, फ़रिश्ते हो या वली और बुर्ज़ुग हो, पेड़ हो, पत्थर हो या क़ब्र या जिन्न हो आदि।

मुश्रिक ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) राज़िक़ (पालनहार) और मुदब्बिरुल अम्र (हुक्म चलाने वाला) होना अल्लाह ही को मानते थे जैसा कि पहले बयान हो चुका है, कि वह इन सब चीज़ों का मालिक अल्लाह तआ़ला ही को जानते थे उनके यहाँ दूसरों को तक़र्रुब का ज़रिया समझते थे। जैसे-

आजकल के मुश्रिक किसी को मस्ऊद ग़ाज़ी के नाम से पुकारते हैं कि वारिस अ़ली शाह के नाम से पुकारते हैं, इसलिए रह़मतुल् लिल् आ़लमीन मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) सह़ी तौह़ीद की दअ़वत लेकर आए और बताया

'लाइलाहा इल्लल्लाह' का मतलब केवल शब्दों का इक़रार नहीं, बल्कि उसका एक अर्थ व मक़्सद है।

काफ़िर तौह़ीद के मक़्सद को समझते थे-

जाहिल काफ़िर भी यह जानते थे कि क़लम-ए-तौह़ीद से रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मक़्सद यह था कि सम्बन्ध केवल अल्लाह ही से हो। उसके सिवा जिसकी भी अ़िबादत हो रही है उससे इन्कार किया जाए।

यही वजह है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनको कहा **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** पढ़ो तो उस पर उनके रद्द करने को अल्लाह तआ़ला ने इस तरह़ बयान फ़रमाया-

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ

क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!''

(सूरः साद-५)

यह बात कि काफ़िर जाहिल भी क़लम-ए-तौह़ीद का मतलब जानते थे तो फिर उस व्यक्ति पर तअ़ज्जुब है, जो इस्लाम का दाअ़ी होकर क़लम-ए-तौह़ीद का इतना मतलब भी नहीं जानता जितना जाहिल काफ़िर जानते थे कि **'लाइलाह इल्लल्लाहु'** का मतलब यह कि ख़ालिक़ व राज़िक़ और पूरी दुनिया का इन्तिज़ाम करने वाला केवल अल्लाह तआ़ला है।

मुश्रिक की बख़्शिश नहीं होगी

यह वह शिर्क है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला का अटल फ़रमान है:

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ

अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा।

(सूरः निसा-४८)

जिहालत कोई उ़ज़्र नहीं

कभी-कभी इन्सान बिला सोचे समझे, ऐसी बात कह देता है जिससे वह काफ़िर हो जाता है, उसकी जिहालत को मुनासिब उ़ज़्र नहीं समझा जाता।

इसी तरह़ बाज़ मर्तबः वह शिर्किया बात इस ख़याल से करता है कि उससे वह अल्लाह तआ़ला के क़रीब हो जाएगा जिस तरह़ मुश्रिकीन समझते थे।

जैसे- ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की क़ौम में कुछ वलियों और आ़लिमों का क़िस्सा याद करिये, अल्लाह तआ़ला ने उनका ज़िक्र करते हुए फ़रमाया, कि उन्होंने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर कहाः-

اجْعَلْ لَنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ

हमारे लिए भी कोई मअ़बूद (उपास्य) ठहरा दीजिए; जैसे उनके मअ़बूद हैं।

(सूरः अअ़राफ़-१३८)

यह बात भी नज़र में रहे कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िकमत व मस्लह़त ख़ास्सा से जब नबी को तौह़ीद की दअ़वत देने के लिए पैदा फ़रमाया, तो उनके दुश्मन भी खड़े हो गये।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

كَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا

इसी तरह़ हमने शैतान सिफ़त इन्सानों और जिन्नों को हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया, वह एक दूसरे के दिल में धोखा देने के लिए तमआ़ (लालच) की हुई बातें डालते रहते हैं।

(सूरः अन्आ़म-११२)

इब्लीस का मन्सूबा

उन शयातीन के सरदार ने अल्लाह तआ़ला के दरबार में चैलेन्ज कर दिया था।

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ

कहा इस वजह से कि 'तूने' मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी 'तेरी' सीधी राह पर

أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

उनके लिए घात लगा कर ज़रूर बैठूँगा; फिर उनके आगे, और उनके पीछे, और उनके दाएँ, और उनके बाएँ से, उनके पास आऊँगा; और 'तू' उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।" **(सूरः अअ़राफ़-१६,१७)**

परन्तु जब आप का ध्यान अल्लाह तआ़ला की ओर होगा और कुर्आनी दलायल पर आप ग़ौर व फ़िक्र करेंगे। जैसे-

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا

शैतान की चाल तो बहुत कमज़ोर होती है। **(सूरः निसा-७६**

ख़ुद अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ

और 'हमारी' फ़ौज ही ग़ालिब (विजयी) हो कर रहेगी। **(सूरः साफ़्फ़ात-१७३)**

इससे यह साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला का लश्कर ग़ालिब (प्रभावी) होता है।

अल्लाह तआ़ला ने हम पर कुर्आन मजीद नाज़िल फ़रमा कर बहुत बड़ा एह़सान फ़रमाया है। इसमें हर चीज़ जिसका हिदायत से सम्बन्ध है बयान कर दिया गया है। जो तमाम इन्सानों के लिए हिदायत, रह़मत और बशारत है। अहले बातिल जो भी एतिराज़ या दलील पेश करें, कुर्आन मजीद में इसका ह़ल मौजूद है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾

और यह लोग जो (एतिराज़) भी तुम्हारे सामने लाते हैं, तो 'हम' ह़क़ बात तुम्हारे सामने पेश कर देते हैं, और बेहतरीन तफ़्सीर (स्पष्टीकरण) के साथ। **(सूरः फ़ुरक़ान-३३)**

बाज़ व्याख्याकारों का कहना है कि यह आ़यत हर उस दलील को शामिल है जो बातिल परस्त क़ियामत तक गढ़ कर लाएँगे।

कुर्आन मजीद में से हम ऐसी कुछ मिसालें बयान करते हैं, जो अल्लाह तआ़ला ने हमारे ज़माने के मुश्रिकीन के दलायल के जवाब में बयान की हैं।

अहले बातिल का जवाब दो तरह़ से है। (१) मुख़्तसर (संक्षिप्त) (२) मुफ़स्सल (सविस्तार)

मुख़्तसर जवाब तो अ़क़्ल वालों के लिए है और बहुत फ़ायदा देने वाला है,

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:-

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ

'वही' है जिसने तुम पर किताब उतारी, जिसकी कुछ आयतें मुह़्कम (सुदृढ़) हैं, वही किताब तो असल (मूल) है- और दूसरी मुतशाबेह (मिलती-जुलती) हैं, तो वह लोग जिनके दिलों मे टेढ़ है, वे मुतशाबेह की पैरवी करते हैं, ताकि फ़ित्ने फैलाएँ, (ग़लत) मतलब बयान कर के, जबकि असली मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। **(सूरः आले इमरान-७)**

ह़दीस सह़ीह़ से साबित है कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَبْتَغُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ سَمَّى اللَّهُ فَاحْذَرُوهُمْ (صحيح مسلم)

जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मुतशाबेह आयतों को तलाश करते हैं तो जान लो यही वह लोग हैं, जिनका अल्लाह तआ़ला ने नाम लिया है उनसे बचो। **(सह़ी मुस्लिम)**

मिसाल के तौर पर अगर कोई मुश्रिक यह आयत सुनाए।

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। **(सूरः यूनुस-६२)**

(१) या यह कहे सिफ़ारिश बरहक़ है।
(२) या यह कहे कि अल्लाह के यहाँ अम्बिया (अ़लै०) का बड़ा ऊँचा मर्तबः है।
(३) या रसूल (सल्ल०) का कोई इर्शाद पढ़कर अपने झूठे अ़क़ीदे पर उस को साबित करे और आप को उसका मतलब समझ में न आए।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है-

कि मुश्रिक लोग अल्लाह तआ़ला की रुबूबियत का इक़रार करते थे, परन्तु उनको काफ़िर इसलिए कहा कि उन्होंने फ़रिश्तों, नबियों और वलियों से यह सम्बन्ध बना रखा था।

هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ

कि यह अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर में हमारे सिफ़ारशी हैं। **(सूरः यूनुस-१८)**

देखिए उनकी इस वाज़ेह़ (स्पष्ट) बात की कोई तावील (कष्ट कल्पना) मुम्किन नहीं इसका माना व मतलब बिलकुल वाज़ेह़ है।

इसी के बारे में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ

और इसकी तौफीक़ उन ही लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं, और यह चीज़ उन्हीं को हासिल होती है जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं। **(सूरः हामीम सज्दा-३५)**

(२) मुफ़स्सल जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला के दुश्मन अम्बिया (अ़लै०) के दीन पर कई तरह़ के एतिराज़ात करते हैं और इस तरह़ लोगों को दीन से रोकते हैं।

अम्बिया (अ़लै०) व औलिया का वसीला

बहुत से लोग अम्बिया व औलिया का वसीला लेते हैं और कहते हैं-

हम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करते, बल्कि शहादत देते हैं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा न कोई पैदा करने वाला है न कोई रिज़्क़ देने वाला है और न कोई नफ़ा दे सकता है न तकलीफ़ में डाल सकता है। ख़ुद रसूले

अकरम (सल्ल०) भी अपनी ज़ात पाक के लिए नफ़ा व नुक़सान का अख़्तियार नहीं रखते, परन्तु मैं एक गुनाहगार इन्सान हूँ, चूँकि अल्लाह तआ़ला के दरबार में सालिह़ीन (नेकों) का बड़ा मर्तबः है, इसलिए हम उनके वास्ते से अल्लाह तआ़ला से पनाह माँगते हैं।

इस का जवाब वही है कि जिन लोगों से रसूल (सल्ल०) ने मुख़ालिफ़तें मोल लीं वह भी यह इक़रार करते थे कि उनके मअ़बूद भी किसी काम का अख़्तियार नहीं रखते, और वह कहते थे कि हम केवल उनके वसीला से मर्तबः व शिफ़ाअ़त के तलबगार (उम्मीदवार) हैं और यही बात तुम भी कहते हो फिर क़ुर्आन मजीद की आयत बताई जाए जो ऊपर ज़िक्र हो चुकी हैं।

मुश्रिकीन आ़मतौर से कहते हैं कि जो आयातें शिर्क के रद्द (खंडन) में है वह बुत परस्तों के लिए उतारी गई है। अम्बिया व औलिया के साथ लगाना दुरुस्त नहीं।

मक्का के काफ़िर भी अल्लाह तआ़ला की रुबूबियत को मानते थे वह जिनकी क़ब्रों से दुआ़ करते थे उनसे शफ़ाअ़त के उम्मीदवार होते थे, परन्तु अल्लाह तआ़ला चाहता है कि मुश्रिकीन और मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादियों) के अ़मल में फ़र्क़ कर दे, इसी तरह़ काफ़िरों में कुछ तो ऐसे थे जो बुतों को पुकारते थे और कुछ ऐसे थे जो औलिया-ए-किराम को पुकारते थे।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ

जिनको यह लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा पुकारते है, वह ख़ुद अल्लाह तआ़ला के यहाँ ज़रिया (क़ुर्ब) तलाश करते रहते हैं कि उनमें से कौन अल्लाह तआ़ला का ज़्यादा मुक़र्रब (निकटवर्ती) है।

(सूरः बनी इस्राईल-५७)

अम्बिया (अ़लै०) और फ़रिश्तों को पुकारना

मक्का के काफ़िरों में कुछ लोग ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और उनकी माँ को

पुकारते थे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

مَّا ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ
خَلَتْ مِن قَبْلِهِ ٱلرُّسُلُ وَأُمُّهُۥ
صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ
ٱلطَّعَامَ ۗ ٱنظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ
لَهُمُ ٱلْآيَٰتِ ثُمَّ ٱنظُرْ أَنَّىٰ
يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾

मरयम का बेटा, मसीह़, एक रसूल के अ़लावा कुछ भी नहीं; उससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उसकी माँ सच्ची फ़रमाँबरदार थी, दोनों ही खाना खाते थे, देखो! 'हम' इन लोगों के लिए किस तरह निशानियाँ बयान करते हैं; फिर देखो! यह किधर उल्टे जा रहे हैं।'' (सूरः माइदा-७५)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَٱللَّهُ هُوَ
ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसे की इबादत करते हो जो न तुम्हें फायदा पहुँचाने की मालिक है और न नक़्सान? और अल्लाह ही खूब सुनने, जानने वाला है।''

(सूरः माइदा-७६)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ
أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्ठा करेगा, फिर फरिश्तों से कहेगा, "क्या यही थे जो तुम्हारी पूजा किया करते थे?'' (सूरः सबा-४०)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟
يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

वे कहेंगे, ''तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे, बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे, इनमें से, अक्सर यक़ीन भी इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे। (सूरः सबा-४१)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَإِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ءَأَنتَ قُلْتَ
لِلنَّاسِ ٱتَّخِذُونِى وَأُمِّىَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ
قَالَ سُبْحَٰنَكَ مَا يَكُونُ لِىٓ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِى
بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُۥ فَقَدْ عَلِمْتَهُۥ ۚ تَعْلَمُ مَا فِى
نَفْسِى وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِى نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّٰمُ
ٱلْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

और जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे, ईसा! क्या आपने लोगों से कहा था कि 'अल्लाह के अ़लावा दो और मअ़बूद, (उपास्य) मुझे और मेरी माँ, को बना लो?'' वह कहेंगे, "तू" पाक (महिमावान) है! मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं; अगर मैंने ऐसा कहा होता तो 'तुझे' मालूम ही होता, 'तू' जानता है, जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता जो कुछ 'तेरे' मन में है, बेशक 'तू' छिपी बातों का खूब जानने वाला है।" (सूरः माइदा-११६)

ऊपर की आयतों से यह बात समझ में आ गई होगी कि अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह़ बुतों के मानने वालों को काफ़िर कहा उसी तरह़ नेक और सालेह़ लोगों को पुकारने वालों को भी काफ़िर कहा है।

मुश्रिक लोग कहते हैं कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन तो औलिया से माँगते थे, मगर मैं गवाही देता हूँ कि नफ़ा देने वाला और नुक़्सान पहुँचाने वाला, सारी दुनिया का इन्तिज़ाम करने वाला तो अल्लाह तआ़ला ही है मैं तो केवल अल्लाह तआ़ला ही से सवाल करता हूँ।

सालिह़ीन और औ़लिया के अख़्तियार में कुछ भी नहीं, उनको तो मैं केवल इसलिए पुकारता हूँ कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ यह सिफ़ारिश कर देंगे।

अम्बिया व औलिया को सिफ़ारशी समझना

कुफ़्फ़ारे मक्का कहते थे कि हम बुतों को सिर्फ़ सिफ़ारशी समझते हैं।

जिसे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ

और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं (और कहते हैं), ''हम इनकी इबादत (पूजा) केवल इसलिए करते हैं कि हमें अल्लाह से निकट कर दें।'' (सूरः ज़ुमर-३)

और यह आयत पढ़ो

وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ

और वे कहते हैं ''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं।'' (सूरः यूनुस-१८)

मालूम होना चाहिए कि मुश्रिकीन के यही तीन शुब्हात (संदेह) सबसे बड़े हैं। जब यह मालूम हो गया कि अल्लाह तआ़ला ने उनको अपनी किताब करीम में ख़ूब विस्तार से ज़िक्र किया है, अब अगर उनको अच्छी तरह़ समझ लिया जाए तो बाक़ी शुब्हात ख़त्म हो जाएँगे।

अगर कोई यह कहे कि मैं तो केवल अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत करता हूँ मगर उनकी ओर झुकना और उनको पुकारना उनकी अ़िबादत नहीं।

अम्बिया व औलिया को पुकारना उनकी अ़िबादत है तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह की ख़ालिस अ़िबादत तुम पर फ़र्ज़ है? अगर कोई अ़िबादत और उसके हुक्मों को न जानता हो तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो, बेशक 'वह' ह़द से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

(सूरः अ़राफ़-५५)

दुआ़ और पुकारना तो अ़िबादत का मग़ज़ है।

जब पुकारना और दुआ़ करना अ़िबादत है और उसका इ़करार (प्रतिज्ञा) है। रात-दिन में अल्लाह तआ़ला को ख़ौफ़ और उम्मीद से पुकारते हैं और जब आपने-अपने किसी ह़ाजत (ज़रूरत) में किसी नबी, वली और बुज़ुर्ग आदि को

पुकारा तो क्या आप ने अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत में दूसरे अल्लाह को शरीक नहीं किया।

जानवर ज़ब्ह़ करना अ़िबादत है मगर

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

तो आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी किया कीजिए।

(सूरः कौसर-२)

आप (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला के लिए क़ुर्बानी की और उसकी अ़िबादत की तो यह क़ुर्बानी अ़िबादत है।

अगर किसी ने किसी मख़्लूक़ (सृष्टि) जैसे नबी या जिन्न आदि के लिए जानवर ज़ब्ह़ किया तो क्या दूसरे अल्लाह की अ़िबादत में शरीक करना नहीं हुआ।

मुश्रिकीने अ़रब का शिर्क

वह मुश्रिकीन जिनके बारे में क़ुर्आन मजीद में उतरा क्या वह मलायका (फ़रिश्तों) सालिह़ीन और लात आदि की पूजा नहीं करते थे? क्या उनकी अ़िबादत यह न थी कि वह उनको पुकारते थे उनके नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करते थे और उससे पनाह आदि लेते थे?

उसके साथ-साथ वह उनको अल्लाह तआ़ला के बन्दे समझते थे और इक़रार करते थे कि वह अल्लाह तआ़ला के ग़ल्बे के तहेत हैं और अल्लाह तआ़ला ही तमाम कामों का इन्तिज़ाम करने वाला है, परन्तु उन्होंने उनको पुकारा उनके मर्तबः व सिफ़ारिश का सहारा लिया और यह बिलकुल साफ़ बात है।

अगर कोई पूछे कि क्या आप रसूल (सल्ल०) की शफ़ाअ़त का इन्कार करते हैं और उससे बेज़ारी ज़ाहिर करत हैं तो बताइये।

शफ़ाअ़त ह़क़ है

हमें शफ़ाअ़त का इन्कार नहीं और न ही हम उससे बेज़ारी ज़ाहिर करते हैं बल्कि हमारा ईमान है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) शफ़ाअ़त करेंगे और आप की शफ़ाअ़त कुबूल होगी और हम आप (सल्ल०) की शफ़ाअ़त के उम्मीदवार हैं परन्तु याद रखिये।

शफ़ाअ़त केवल अल्लाह के अधिकार में है

शफ़ाअ़त की इजाज़त अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

قُلْ لِلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۔ कह दीजिए, ''सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है। (सूरः ज़ुमर-४४)

और यह शफ़ाअ़त अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बाद होगी, जैसा कि इर्शाद है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۔ कौन है जो उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर किसी की शफ़ाअ़त कर सके। (सूरः बक़रः-२५५)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) भी अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बिना किसी की शफ़ाअ़त नहीं करेंगे।

क़ुर्आन मजीद में इर्शाद है-

وَلَا یَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰی वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, 'मगर उस व्यक्ति की' जिससे अल्लाह ख़ुश हो। (सूरः अम्बिया-२८)

याद रहे कि अल्लाह तआ़ला केवल तौह़ीद (एकेश्वरवाद) ही को पसन्द

करता है। इर्शादे बारी तआ़ला है-

وَمَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जाएगा। (सूरः आले इ़मरान-८५)

जब शफ़ाअ़त अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है और उसकी इजाज़त ही से होगी, और रसूले अकरम (सल्ल०) और कोई भी दूसरा व्यक्ति इजाज़त मिले बिना शफ़ाअ़त नहीं कर सकता तो यह भी याद रखें कि अल्लाह तआ़ला शफ़ाअ़त की इजाज़त तौह़ीद के मानने वालों के लिए ही देगा।

इससे आप को मालूम हो गया होगा कि शफ़ाअ़त अल्लाह ही के अधिकार में है, और मेरी अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि ऐ अल्लाह! मुझे प्यारे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमाइये।

अगर कोई यह कहे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को शफ़ाअ़त दे दी गई है और मैं अल्लाह तआ़ला की दी हुई शफ़ाअ़त का ही आप (सल्ल०) से सवाल करता हूँ। तो उस का जवाब इस तरह है।

शफ़ाअ़त का आप (सल्ल०) से सवाल

इसका जवाब यह है कि ज़रूर अल्लाह तआ़ला ने रसूले अकरम (सल्ल०) को शफ़ाअ़त अ़ता फ़रमा दी है, परन्तु अल्लाह तआ़ला ने इसको सीधा आप (सल्ल०) से माँगने से मना फ़रमाया है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। (सूरः जिन्न-१८)

जब तुम अल्लाह को पुकारते हो और कहते हो कि ऐ अल्लाह! मेरे बारे में शफ़ाअ़त की इजाज़त रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दे तो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी दूसरे को न पुकारने में भी उसका हुक्म मानो।

सवाल यह पैदा होता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सिवा दूसरों को भी शफ़ाअ़त दी गई है जैसा कि सह़ी अह़ादीस से साबित है कि फ़रिश्ते, छोटे बच्चे और औलिया-ए-किराम शफ़ाअ़त करेंगे तो क्या उनके बारे में भी कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने उनको शफ़ाअ़त दे दी है, शफ़ाअ़त तो दी है मगर

इसका जवाब यह है कि अगर यह कहते हो कि यही सालिह़ीन की अ़िबादत है जिसका अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में ज़िक्र फ़रमाया है, अगर तुम इसका इन्कार करोगे तो तुम्हारी बात आप से आप बातिल हो जाएगी कि अल्लाह तआ़ला ने इनको शफ़ाअ़त का ह़क़ दिया है और मैं उनसे अल्लाह तआ़ला के दिये हुए से माँगता हूँ।

अगर कोई यह सवाल करे कि मैं अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, अल्लाह तआ़ला इससे मुझे पनाह में रखे। लेकिन बुज़ुर्गों और औलिया को पुकारता है, तो क्या उनसे फ़रियाद करना शिर्क नहीं है।

शिर्क से कैसे बचे

अल्लाह तआ़ला ने शिर्क को ज़िना से भी ज़्यादा बड़ा गुनाह क़रार दिया है और मानते हो कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन शिर्क को हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा।

फिर उसके बारे में न हमें कोई इ़ल्म है और न ही इसके बारे में इ़ल्म वालों से पूछते हैं।

अगर कोई यह समझता है कि शिर्क यह है कि बुतों को पूजा जाए और हम बुतों की पूजा नहीं करते तो।

बुतों को पूजने की मुराद

क्या आप यह समझते हैं कि मुश्रिकीने अ़रब का यह अ़क़ीदा था कि यह लकड़ियाँ या पत्थर कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं या अपने पुकारने वालों के काम का इन्तिज़ाम करते हैं। हरगिज़ नहीं, कुर्आन करीम उसकी काट करता है।

इसी तरह़ अगर कोई यह कहता है कि पूजने से मुराद यह है कि कोई

आदमी लकड़ी या किसी क़ब्र पर बनी हुई इमारत कोई ह़ाजत तलब करे, पुकारे और उनके नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करे और कहे कि यह मुझे अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर देते हैं या उनकी बरकत से अल्लाह तआ़ला तकलीफ़ दूर कर देता है या उसकी बरकत से हमें रोज़ी मिलती है।

तो यह सब भी शिर्क है। शिर्क केवल बुतों की पूजा का नाम नहीं है बल्कि किसी को पुकारना और उन पर भरोसा करना भी शिर्क है?

इन बातों के शिर्क होने की बात अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में की है और हर उस व्यक्ति को काफ़िर क़रार दिया है जो मलाइका (फ़रिश्तों, ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) या सालिह़ीन और औलिया में से किसी के साथ इस क़िस्म का सम्बन्ध रखता हो।

अगर कोई कहता है कि मैं अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करता तो शिर्क तो बुतों की अ़िबादत है तो पूछिये कि बुतों की अ़िबादत से क्या मुराद है? वज़ाह़त (स्पष्टीकरण) कीजिए।

अगर वही कुछ बयान करे जो कुर्आन मजीद में है तो बेहतर अगर उसको इसका इ़ल्म ही नहीं तो जिस चीज़ का उसको इ़ल्म नहीं उसके बारे में उसके किसी भी दावे की कोई वास्तविकता नहीं।

अगर कोई इसका मतलब ऐसा बयान करे जो कुर्आनी आयात के ख़िलाफ़ हो, तो उसके सामने शिर्क और बुतों की पूजा के सम्बन्ध में खुले तौर पर आयात को पढ़कर समझाया जाए कि यही सब कुछ आज-कल इस्लाम के दावेदार भी करते हैं।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमाता है-

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ

क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!"

(सूरः साद-५)

ग़ैरों को पुकारने वालों के कुफ़्र की वजह?

अगर कोई कहे कि उनको फ़रिश्तों और नबियों को पुकारने की वजह से काफ़िर नहीं कहा गया, बल्कि उनके कुफ़्र की वजह यह थी कि वह कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की बेटियाँ हैं, परन्तु हम शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर (रह़०) आदि को अल्लाह तआ़ला का बेटा नहीं मानते।

तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला की ओर औलाद की निस्बत एक मुस्तक़िल कुफ़्र है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

कह दीजिए, ''वह अल्लाह एक है।'' अल्लाह सबसे बेनियाज़ (अर्थात वह किसी का मुह़ताज नहीं सब उसी के मुह़ताज) है। **(सूरः इख़्लास-१,२)**

'अ़हद' से मुराद वह ज़ात है जिसकी तुलना न की जा सके और समद वह है जिसकी ओर ह़ाजात व ज़रूरियात के लिए रुजूअ़ किया जाए, हाँ जिसने अल्लाह तआ़ला के सम्द होने से इन्कार किया वह काफ़िर हुआ चाहे वह पूरी सूरत का मुन्किर (इन्कारी) हो।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ

अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया, और न 'उसके' साथ कोई और मअ़बूद (उपास्य) है।

(सूरः मूमिनून-९१)

अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों क़िस्मों को अलग-अलग बयान किया है और हर एक को मुस्तक़िल कुफ़्र क़रार दिया है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

और उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह

وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ

का साझी ठहरा रखा है, हालाँकि उनको 'उसी' ने पैदा किया; और बे समझे-बूझे 'उसके' लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं।

(सूरः अन्आ़म-१००)

अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्र की इन क़िस्मों में फ़र्क़ किया है, इसकी दूसरी दलील यह है कि जो लोग 'लात' की अ़िबादत से काफ़िर बने, उन्होंने लात को अल्लाह तआ़ला का बेटा नहीं बनाया था वह एक नेक और सालेह़ व्यक्ति था और जो लोग जिन्नों की अ़िबादत करके काफ़िर हुए वह भी जिन्नों को अल्लाह तआ़ला की औलाद नहीं जानते थे।

इसी तरह़ उ़लमा-ए-किराम मुरतद के ह़ुक्म में फ़रमाते हैं कि जब किसी मुसलमान का अ़क़ीदा यह हो कि अल्लाह तआ़ला के औलाद है तो वह मुरतद (विधर्मी) हो जाता है।

वली की अ़िबादत जायज़ नहीं

अगर कोई व्यक्ति यह आयत पेश करता है।

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

(सूरः यूनुस-६२)

तो उसका जवाब यह है कि यह आयत अपने मतलब में बिलकुल दुरुस्त और सही है, परन्तु औलिया-ए-किराम की अ़िबादत नहीं होनी चाहिए। हम केवल यह कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला के साथ औलिया अल्लाह की अ़िबादत करना और उनको अल्लाह तआ़ला का शरीक बनाना सह़ी नहीं है। हाँ!

उनसे मुह़ब्बत रखना (शरीअ़त के सम्बन्ध में) उनकी पैरवी करना और उनकी सह़ी करामात का इक़रार करना तो सही है, बल्कि ज़रूरी है याद रहे कि औलिया की करामात के मुन्किर वही हैं, जो गुमराह हैं। अल्लाह तआ़ला के दीन में एतिदाल (सन्तुलन) है। दोनों गुमराहियों के बीच हिदायत और दोनों बातिलों के

बीच हक़ का रास्ता है, इससे मालूम हो गया कि यही चीज़ है जिसको हमारे ज़माने के मुश्रिकीन एतिक़ाद का नाम देते हैं, इसी शिर्क की मज़म्मत और बुराई के लिए क़ुर्आन मजीद में वज़ाहत की गई।

पहले ज़माने का और आज कल का शिर्क

हमारे ज़माने के शिर्क के मुक़ाबिले में पहले ज़माने का शिर्क दो वजहों से हलका था।

(१) पहले ज़माने के मुश्रिकीन मलायका (फ़रिश्ते), औलिया और बुतों को केवल आराम व सुकून के समय ही पुकारते थे और अल्लाह तआ़ला का शरीक बनाते थे, परन्तु बड़ी मुसीबत में वह केवल अल्लाह तआ़ला ही को पुकारते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

और जब तुमको समुद्र में तकलीफ़ पहुँचती है, तो 'उसके' सिवा सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर ख़ुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुँचा देता है तो तुम उससे मुहँ मोड़ जाते हो, और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

(सूरः बनी इस्राईल-६७)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया-

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ ۖ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ), (नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस (दुःख) के लिए तुम 'उसे' पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता है तो उसको दूर कर देता है, और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो।''

(सूरः अनआ़म-४०,४१)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, ''अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।'' **(सूरः ज़ुमर-८)**

एक जगह इस तरह इर्शाद है-

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ

और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो अल्लाह ही को पुकारते हैं, दीन को उसके लिए ख़ालिस करते हुए। **(सूरः लुक़मान-३२)**

जो व्यक्ति ग़ौर से ऊपर की आयतों को पढ़ लेगा उसकी समझ में यह बात आ जाएगी कि आज-कल के और पहले ज़माने के मुश्रिकीन के बीच बहुत फ़र्क़ था। आज कल के सभी मामले में पहले पीर फ़क़ीर को ही पुकारते थे।

अ़रब के मुश्रिक भी अल्लाह के क़रीबी बन्दों को पुकारते थे

पहले ज़माने में लोग भी ऐसे लोगों को पुकारते थे जिसे अल्लाह का क़रीबी समझते थे। जैसे- अम्बिया व औलिया और मलायका (फ़रिश्ते) आदि या ऐसे पत्थरों और पेड़ों से दुआ़एँ करते, जो अल्लाह तआ़ला के फ़रमाँबरदार हैं नाफ़रमान नहीं।

क्या हर कलिमा पढ़ने वाला मोमिन है

कुछ लोग कहते हैं कि मुश्रिकीन कुर्आन मजीद को सुनते थे, वह **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** का इक़रार करते थे, वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) को भी झुठलाते थे, क़ियामत का इन्कार करते थे, कुर्आन मजीद को झुठलाते थे और उसको जादू कहते थे, परन्तु हम तो एक अल्लाह की अ़िबादत करते हैं, एक अल्लाह का इक़रार करते हैं, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला का सच्चा रसूल समझते हैं। कुर्आन करीम पर ईमान रखते हैं, क़ियामत को मानते हैं और नमाज़ रोज़े के पाबन्द हैं तो हम उनकी तरह़ कहाँ से हुए, वह तो काफ़िर थे। इसका जवाब यह है कि-

दीन के किसी एक फ़र्ज़ का इन्कार कुफ़्र है

उ़लमा का इसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है कि जो व्यक्ति रसूलुल्लाह (सल्ल०) के किसी हुक्म को न माने तो वह काफ़िर है और इस्लाम में दाख़िल ही नहीं हुआ।

इसी तरह़ अगर वह कुर्आन मजीद के कुछ ह़िस्से पर ईमान न लाए जैसे कि एक व्यक्ति तौह़ीद (एकेश्वरवाद) का इक़रार तो करे, मगर नमाज़ को फ़र्ज़ मानने से इन्कार करे या तौह़ीद और नमाज़ को तो माने मगर ज़कात फ़र्ज़ होने का इन्कारी हो या इस्लाम के तमाम एह़काम को माने मगर रोज़े का इन्कारी हो

या दीन की सब बातों को माने मगर ह़ज का इन्कारी हो या दीन की हर बात पर ईमान लाए परन्तु कियामत को न माने तो ऐसा व्यक्ति पक्का काफ़िर है

जैसा कि इर्शाद है-

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं, और अल्लाह और उसके रसूलों में फर्क़ (विभेद) करना चाहते हैं और कहते हैं, ''हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते'' और ईमान और कुफ़्र के बीच एक राह निकालना चाहते हैं; वे पक्के काफ़िर हैं।

(सूरः निसा-१५०,१५१)

देखिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में कुछ लोग ह़ज के लिए जल्दी तैयार न हुए तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी

وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝

और लोगों पर अल्लाह का ह़क़ (फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की कुदरत रखे, वह इसका ह़ज करे, और जो कोई इन्कार करे, तो अल्लाह सारे संसार वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है। **(सूरः आले इमरान-९७)**

जब अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब अज़ीज़ में साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि जो व्यक्ति उसके कुछ ह़िस्से से कुफ़्र करे तो वह पक्का काफ़िर है।

इसी तरह़ अगर कोई हर बात पर ईमान ले आए मगर क़ियामत को न माने या रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की फ़ार्ज़ियत का इन्कारी हो और बाक़ी पूरे दीन को माने तो ऐसे व्यक्ति के कुफ़्र में किसी को इन्कार नहीं, और न ही किसी का उसमें इख़्तिलाफ़ है। कुर्आन मजीद में भी यही है जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो दीन पेश फ़रमाया उसमें सबसे बड़ा फ़र्ज़ तौह़ीद (एकेश्वरवाद) है। जो नमाज़, रोज़ः और ह़ज आदि

सब अह़काम से ज़्यादा बड़ा फ़र्ज़ है जो व्यक्ति इनमें से किसी का इन्कार करे तो वह काफ़िर ही माना जाएगा चाहे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाक़ी दीन पर अ़मल करे, अब सोचिये अगर वह तौह़ीद का इन्कार करे जो तमाम रसूलों का दीन है तो कैसे मोमिन रह सकता है।

एक ही कलिम-ए-कुफ़्र से काफ़िर बन जाना

एक यह भी आयत है कि जिनके सम्बन्ध में अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमाया है कि-

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۚ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

यह लोग अल्लाह की क़सम खा जाते हैं कि उन्होंने (फलाँ बात) नहीं कही, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ़्र की बात कही थी, और अपने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद इन्कार किया और ऐसी बात का इरादा किया जो हासिल न हो सकी; और उन्होंने बदला केवल इस बात का दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया; अब अगर ये लोग तौबः कर लें तो उनके ह़क़ में बेहतर है और अगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक सज़ा दुनिया और आख़िरत में देगा और उनका ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न मददगार। (सूरः तौबः-७४)

अल्लाह तआ़ला ने एक ही कलिम-ए-कुफ़्र की बिना पर काफ़िर कह दिया है जबकि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाबरकत ज़माने में थे और आप के साथ जिहाद भी करते थे। आप के साथ नमाज़ें भी पढ़ते थे, ज़कात भी देते और ह़ज भी करते थे और तौह़ीद को मानते थे इन्हीं के बारे में अल्लाह

तआ़ला ने फ़रमाया है-

قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۚ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

कह दीजिए, "क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ तुम हँसी-मज़ाक़ करते थे? बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं।" (सूरः तौबः ६५-६६)

यही लोग हैं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने व्याख्या फ़रमा दी हैं वह ईमान के बाद काफ़िर हो गये थे, जबकि वह ग़ज़व-ए-तबूक में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ थे, उन्होंने एक (कुफ़्र की) बात कही थी, जिसके बारे में वह कहते हैं हमने यह बात मज़ाक़ में कही थी।

अब इनके इस सन्देह पर ग़ौर फ़रमाएँ कि तुम उन लोगों को काफ़िर कहते हो जो ***'लाइलाहा इल्लल्लाह'*** पढ़ते थे, रोज़े रखते थे, इस जवाब पर ग़ौर कीजिए।

बनी इस्राईल का क़िस्सा

हमारे ज़िक्र किये हुए दलायल की व्याख्या के लिए बनी इस्राईल का वह क़िस्सा भी दलील है जो क़ुर्आन मजीद में ज़िक्र है। वह यह है कि बनी इस्राईल में से कुछ लोगों ने मुसलमान, आ़लिम और नेक होने के बावजूद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा था-

اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝

हमारे लिए भी कोई मअ़बूद (उपास्य) ठहरा दे; जैसे उनके मअ़बूद हैं, उन्होंने कहा ह़क़ीक़त में तुम बड़े नादान लोग हो।

(सूरः अअ़राफ़-१३८)

उलटा मुश्रिकीन इन क़िस्सों से यह नतीजा निकालते हैं कि बनी

इस्राईल के जिन लोगों ने اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ कहा था वह काफ़िर तो नहीं हो गये थे।

सह़ाबा किराम (रज़ि०) का क़िस्सा

और जिन सह़ाबा किराम ने नबी करीम (सल्ल०) से ज़ाते अनवात पेड़ की माँग की थी वह काफ़िर नहीं हो गये थे, हम कहते हैं कि बनी इस्राईल ने किसी ग़ैरुल्लाह को इलाह नहीं बनाया और न ही उन सह़ाबा (रज़ि०) ने जिन्होंने "ज़ातुल अनवात" की माँग की थी, अपने लिए कोई ज़ाते अनवात निश्चित किया था, उ़लम-ए-किराम इस पर सहमत हैं कि बनी इस्राईल किसी ग़ैरुल्लाह को इलाह बना लेते तो ज़रूर काफ़िर हो जाते और इसी तरह़ सह़ाबा किराम (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मना फ़रमाने के बावजूद किसी पेड़ को ज़ाते अनवात निश्चित कर लेते तो वह भी काफ़िर हो जाते, यही हम साबित करना चाहते हैं।

दोनों क़िस्सों के फ़ायदे

(१) कभी-कभी एक मुसलमान शिर्क की किसी क़िस्म में ग़ैर शुऊरी तौर पर मुब्तिला (ग्रस्त) हो सकता है।

(२) इ़ल्म की ओर ग़लत अ़क़ायद व आ़माल से बचाव की फ़िक्र और तलाश हमेशा रखनी चाहिए।

(३) तौह़ीद व शिर्क का जिसको इ़ल्म न हो वह कहे कि मैंने मस्ल-ए-तौह़ीद समझ लिया है तो यह उसकी जिहालत और शैतान का सबसे बड़ा धोखा है।

कलिमः वाले और शिर्क

कुछ ह़दीसों से बाज़ लोग यह मतलब निकालते हैं कि जो व्यक्ति **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** पढ़ ले वह जो चाहे करता फिरे न उसको मुश्रिक कहा जाए न बिद्अ़ती जबकि इ़ल्म वाले लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यहूदियों से जंग की, उन्हें क़ैद किया जबकि वह **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** कहते थे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सह़ाबा किराम (रज़ि०) ने बनू ह़नीफ़ा से जंग की, जबकि

वह कलिमः **'लाइलाहा इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह'** की शहादत देते थे, नमाज़े पढ़ते थे और इस्लाम के दावेदार थे, वह लोग भी अपने विचार से मुसलमान थे जिनको ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने आग में जला दिया था, लोग इस बात को मानते हैं कि जो कोई क़ियामत का इन्कार करे वह काफ़िर है। अगरचे वह **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** पढ़ता हो और जो व्यक्ति अरकाने इस्लाम में से किसी एक रुक्न (अर्थात ख़म्बा) का भी इन्कार कर दे वह काफ़िर है, चाहे वह कलिमः पढ़ता हो।

यह कैसी बात है? कि जो व्यक्ति तौह़ीद का इन्कार कर दे जो तमाम अम्बिया (अ़लै०) के दीन की अस्ल है और उसको कलिमः पूरा-पूरा फ़ायदा दे।

'मा लकुम कैफ़ा तह़कुमून' (तुम्हें क्या हो गया है कैसा फ़ैसला करते हो?)

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में निकलो तो ख़ूब जाँच लिया करो, और जो व्यक्ति तुम्हें सलाम करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं; तुम दुनियावी ज़िन्दगी का सामान तालाश करते हो, तो अल्लाह के पास तो बहुत माले ग़नीमत है, ऐसे ही तुम भी तो पहले थे, फिर अल्लाह ने तुम पर इनआ़म किया; तो ख़ूब जाँच लिया करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़ूब ख़बर रखता है।

(सूरः निसा-६४)

यह आयत इस बात पर दलालत करती है कि जब कोई व्यक्ति कलिमः तय्यिबा पढ़ ले तो उससे हाथ रोक लेना और जाँच पड़ताल करना वाजिब है।

जाँच पड़ताल के बाद उससे कोई ऐसी बात हो जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हो तो फिर उसके साथ मामला बदल जाएगा।

कलिमः पढ़ने वाले खवारिज

ख़ारजी लोग देखने में बेहद अ़िबादत गुज़ार और हर समय तकबीर व तहलील करते रहते थे, यहाँ तक कि कुछ सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०) अपने आप को उनके मुक़ाबिले में नीचा ख़याल करने लगे थे।

ख़ारजियों ने ह़ज़रात सह़ाबा किराम (रज़ि०) से ही इ़ल्म दीन ह़ासिल किया था, **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** के पढ़ने और ख़ूब अ़िबादत करने और दावे इस्लाम ने उनको कोई फ़ायदा नहीं दिया वजह यह थी कि उन्होंने शरीअ़त की ख़िलाफ़वर्ज़ी की थी।

ज़कात के इन्कार पर जंग का इरादा

बनू मुस्तलिक़ के ख़ानदान के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़बर मिली थी कि बनी मुस्तलिक़ ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया है, उस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनसे जंग का इरादा फ़रमाया, मगर यह ख़बर ग़लत निकली।

अल्लाह तआ़ला ने यह आयते शरीफ़ा नाज़िल फ़रमाई।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوٓا۟ أَن تُصِيبُوا۟ قَوْمًۢا بِجَهَٰلَةٍ فَتُصْبِحُوا۟ عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَٰدِمِينَ ۝

ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अंजाने में तकलीफ़ पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किये पर पछताना पड़े।

(सूरः ह़ुजरात-६)

यह आयात व अह़ादीस हमारी बात के साफ़ दलायल है। इससे मुश्रिकीन की बात हरगिज़ साबित नहीं होती।

शिर्क व बिद्अ़त वालों का एक एतिराज़ यह भी होता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन कुछ लोग बारी-बारी ह़ज़रत आदम (अ़लै०), ह़ज़रत मूसा (अ़लै०), ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०), ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०)

और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के पास फ़रियाद लेकर जाएँगे, परन्तु हर नबी कोई न कोई उ़ज़्र पेश करेगा आख़िरकार बात मुझ तक पहुँचेगी, इससे शिर्क को पसन्द करने वाले लोगों का साबित करना इस तरह़ है कि ग़ैरुल्लाह से फ़रियाद करना शिर्क है।

ग़ैर अख़्तियारी फ़रियाद करना

अल्लाह तआ़ला पाक है, जो बात मख़्लूक़ (दृष्टि) के अख़्तियार में है उसका उससे फ़रियाद करने का हम इन्कार नहीं करते। जैसा कि कुर्आन मजीद में है।

जंग के मौक़े पर जब इन्सान अपने साथियों से ऐसी मदद तलब करता है जिस पर वह कुदरत रखते हैं तो वह सही है, मगर हम उस फ़रियादी के मुन्किर हैं जो औलिया किराम की क़ब्रों पर जाकर अ़िबादत के तौर पर किया जाता है या उनको ग़ायबाना ऐसे कामों के लिए पुकारा जाता है जो काम केवल अल्लाह तआ़ला के अख़्तियार में है और किसी मख़्लूक़ को उन पर कुदरत नहीं।

यह बात साबित हो जाने के बाद समझ लेना चाहिए कि क़ियामत के दिन अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से जो फ़रियाद होगी वह यह है कि अल्लाह तआ़ला से वह दुआ़ करें कि लोगों का ह़िसाब जल्दी हो जाए ताकि जन्नत वाले मैदाने ह़श्र की सख़्ती से निजात पाएँ इस तरह़ की फ़रियाद दुनिया और आख़िरत दोनों जगह जायज़ है।

ज़िन्दा लोगों से दुआ़ करना जायज़-

आप किसी ज़िन्दा नेक आदमी के पास जाएँ वह आप के पास बैठे और आपकी बात भी सुने आप उससे अपने लिए दुआ़ की दरख़्वास्त करे तो यह जायज़ है।

सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़िन्दगी में आप (सल्ल०) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और अपने लिए दुआ़ की आप (सल्ल०) से दरख़्वास्त किया करते थे, परन्तु रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात के बाद आप (सल्ल०) के रौज़ा (क़ब्र) पर जाकर किसी सह़ाबी ने आप से दुआ़ की दरख़्वस्त

नहीं की, बल्कि कुछ उ़लमा ने क़ब्र के पास खड़े होकर आप (सल्ल०) से दुआ़ कराना तो दरकिनार उस जगह अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने से भी मना फ़रमा दिया है, ताकि कोई यह न समझे कि यह क़ब्र वाले से दुआ़ माँग रहे हैं।

तौह़ीद (एकेश्वरवाद) का सम्बन्ध

यह है कि तौह़ीद का सम्बन्ध तीन बातों से है दिल से, ईमान से जबा़न से इक़रार और बाक़ी अअ़ज़ा (शरीर) के साथ उसके मुताबिक़ अ़मल अगर इन तीन बातों में से किसी एक में भी ख़राबी हो तो ऐसा व्यक्ति मुसलमान नहीं रहता। अगर कोई व्यक्ति तौह़ीद को जानता है, परन्तु उसके अनुसार उसका अ़मल नहीं है तो वह ज़िद्दी और मुश्रिक है।

तौह़ीद के क़ुबूल न करने के उ़ज़्र

मक्का के काफ़िर भी ह़क़ को पहचानते थे, मगर कई क़िस्म के बहानों के ज़रिये ही उन्होंने ह़क़ को छोड़ दिया था।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

यह आयतों के बदले मामूली क़ीमत ह़ासिल करते और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो कुछ यह कर रहे हैं। (सूरः तौबः-६)

दूसरी जगह इर्शाद है-

يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ

वे आपको (ऐ मुह़म्मद) पहचानते हैं, जिस तरह अपनी औलादों को पहचानते हैं; इस बात को भी पहचानते हैं, (कि मुह़म्मद (सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं) और उनमें से एक गिरोह जानते बूझते ह़क़ को छिपाता है। (सूरः बक़रः-१४६)

जो व्यक्ति बज़ाहिर तौह़ीद के माना व मतलब से अन्जान है या दिल से उस पर ईमान नहीं रखता तो वह मुनाफ़िक़ है, जो काफ़िर से भी बद्तर है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝

बेशक मुनाफ़िक़ आग (जहन्नम) के सबसे निचले दर्जे में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। (सूरः निसा-१४५)

यह उदाहरण लम्बा है लोगों की बातों पर ग़ौर करने से ख़ूब अच्छी तरह़ मालूम हो सकता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ह़क़ को जानते पहचानते होते हैं परन्तु वह भी दुनिया के नुक़सान के डर से या पद की ह़िफ़ाज़त के लिए या लोगों की ओर से आदर की कमी की वजह से उस पर अ़मल नहीं करते और कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़ाहिरी तौह़ीद पर अ़मल तो करते हैं मगर दिल से नहीं, क्योंकि वह दिल में तौह़ीद का इ़ल्म नहीं रखते।

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं।'' (सूरः तौबः ६६)

जब यह साबित हो गई कुछ सह़ाबा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ रूमियों से जंग की थी के वह केवल एक कलिमे की वजह से काफ़िर हो गये जो उन्होंने (उनके हंसी में ही कहा था) यहाँ यह बात भी साफ़ हो जाती है कि जो व्यक्ति किसी की चापलूसी के ख़ातिर या अपने सत्ता के ख़ातिर या माल में नुक़सान हो जाने के डर से कुफ़्रिया कलिमः कह दे या उस पर अ़मल करे या हंसी मज़ाक़ में कुफ़्रिया कलिमः कह दे तो यह बहुत बड़ा गुनाह है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ

जिस व्यक्ति ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद 'उससे' कुफ़्र किया- सिवाय उसके,

जो इसके लिए मजबूर कर दिया गया हो-
और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो।

(सूरः नह़्ल-१०६)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने केवल उस व्यक्ति का उ़ज़्र तस्लीम किया है जो कुफ़्रिया कलिमः कहने पर ज़बरदस्ती मजबूर कर दिया गया हो, मगर इस शर्त के साथ कि उसका दिल सन्तुष्ट हो उसके सिवा किसी का उ़ज़्र कुबूल नहीं किया गया अब जो कोई डर की वजह से या चापलूसी के लिए या अपने देश के लिए या बाल व बच्चों के लिए या बिरादरी के लिए या माल की मुह़ब्बत में आकर या हंसी मज़ाक़ में या किसी और वजह से कलिमः कुफ़्र कह दे तो वह काफ़िर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला ने ज़बरदस्ती और जब्र किये गये व्यक्ति को ही केवल छूट दी है।

यह मतलब दो आयतों से ह़ासिल होता है।

إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ — जो मजबूर किया जाए कुफ़्र पर।

(सूरः नह़्ल, १०६)

इस शब्द के समूह में केवल मजबूर व्यक्ति की फ़रियाद है और ज़ाहिर मजबूरी का सम्बन्ध केवल ज़बान और अ़मल से है। रहा दिल तो उस पर किसी का जोर नहीं हो सकता (इसलिए दिल में कलिमः कुफ़्र से नफ़रत और कलिमः तौह़ीद पर ईमान व इत्मिनान वाजिब है।)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ — यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया। **(सूरः नह़्ल १०७)**

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने व्याख्या फ़रमा दी है कि उनका कुफ़्र या उन पर अ़ज़ाब की वजह यक़ीन की ख़राबी, या जिहालत या दीन की दुश्मनी या कुफ़्र से मुह़ब्बत की बिना पर नहीं थी, बल्कि उसकी बड़ी वजह दुनियावी मज़ों में पड़ना था। यही वजह है कि उन्होंने दीन पर दुनिया को तरजीह (प्रधानता) दी।

मुसलमानों की मौजूदा ह़ालत और शिर्क

हमें अपना जायज़ा लेना चाहिए कि जिस दीन के हम मानने वाले हैं वह ख़ालिस तौह़ीद की बुनियाद पर बना था और जिस के क़याम की वाह़िद ग़र्ज़ यही थी कि दुनिया से शिर्क को मिटाकर तौह़ीद क़ायम करे।

यह बात कि जगह के बदल जाने से ह़क़ीक़त नहीं बदल जाती जो चीज़ मुश्रिकीन के अन्दर शिर्क है, अहले किताब के अन्दर शिर्क है, मुनाफ़िक़ीन के अन्दर शिर्क है वही चीज़ अगर मुसलमानों के अन्दर पाई जाएगी तो वह तौह़ीद नहीं बन जाएगी, वह भी शिर्क ही रहेगी।

नजासत किसी ठीकरे में हो या सोने चाँदी के किसी ख़ुशनुमा बर्तन के अन्दर, दोनों जगह नजासत है। इस तब्दीली से उस की ह़क़ीक़त में कोई तब्दीली नहीं होगी।

ह़ालात की तब्दीली-

अल्बत्ता ह़ालात की तब्दीली से उस का हुक्म ज़रूर बदल जाएगा। ख़िन्ज़ीर व शराब नजिस हैं, जो हर ह़ाल में नजिस हैं लेकिन एक मजबूर अगर जान बचाने के लिए बक़द्र जान बचाने के उन में से कुछ खा लेता है तो शरीअ़त इस पर गिरफ़्त नहीं करती बस एक चीज़ है वाक़िआ़ और एक चीज़ है ह़ालात की तब्दीली के एतिबार से उस का हुक्म बदल जाता है। यहाँ हम सूरत वाक़िआ़ का जाएज़ा लेंगे।

मुसलमानों की मौजूदा ह़ालात का अगर जाएज़ा लिया जाए और बेजा ग़ुरूर एतिराफ़ ह़क़ से मानेअ़ न हो तो यह तस्लीम करना पड़ेगा कि अ़रब जाहिलियत से लेकर मुनाफ़िक़ीन तक शिर्क की जितनी क़िस्में बयान हुई हैं अगर वह सब नहीं तो उन का बड़ा ह़िस्सा मुसलमानों के अन्दर मौजूद है। सिर्फ़ शक्लें बदली हुई हैं।

अ़रब जाहिलियत की जिन्नात परस्ती, कवाकिब परस्ती, आबा परस्ती, ख़ुद परस्ती, अहले किताब की उ़लमा परस्ती, जुबत परस्ती, तागूत परस्ती, क़ौम

परस्ती, और हिमायत-ए-शिर्क, मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती, अना परस्ती और मफ़ाद परस्ती, उन तमाम "परस्तों" में से कौन सी परस्ती है जो आज मुसलमानों के अन्दर मौजूद नहीं है?

उलूमे सिफ़लिया-

कितने मुसलमान हैं जो उलूम सिफ़लिया की लअ़नतों में गिरफ़्तार हैं उन्होंने टोने टोटके, गन्डे, तअ़वीज़[1], सह़र और तिलिस्मात वग़ैरह को कस्ब मआ़श का ज़रिया बना रखा है। तस्ख़ीर जिन्नात व शयातीन अ़मलियात का इ़ल्म ही उन के नज़दीक अस्ली इ़ल्म है।

जिन्नात की तस्ख़ीर-

जिन्नात की तस्ख़ीर के लिए वह तरह़-तरह़ की रियाज़तें करते हैं, चिल्ला कशी करते हैं, नज़रें और चढ़ावे पेश करते हैं, उन को इ़ल्म ग़ैब का वसीला समझते हैं। उन को मुस्तक़िल बिज़्ज़ात नाफ़ेअ़ वज़ा ख़याल करते हैं। उन की दुहाई देते हैं। उन के तअ़ल्लुक़ से ख़ुदा की कितनी जायज़ चीज़ों को ह़राम क़रार देते हैं और कितनी नाजायज़ बातों को जायज़ कर देते हैं।

इ़ल्म अस्मा-

इसी तरह़ कितने हैं जो इ़ल्म अस्मा और ख़वास कलिमात के चक्कर में रहते हैं और इस इ़ल्म को उसी तरह़ के बुरे मक़ासिद में इस्तेमाल करते हैं जिन में उन के पहले के यहूद इस्तेमाल करते थे। यहाँ तक कि कुछ ज़ालिमों ने ख़ुद

1- अह़ादीसे नबवी से जिन तअ़वीज़ों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा रुख़्सत निकलती है। पहली बात तो वह ख़ास-ख़ास ह़ालात के लिए हैं। दूसरी बात उन की अस्ल रुह़ अल्लाह की इस्तिआ़ज़ह, उस की तरफ़ तफ़वीज़ और ग़ैरुल्लाह से इज़हारे बराअत है, बाक़ी रहे वह तअ़वीज़ जिन में लायअ़नी कलिमात होते हैं और जिन में शिर्क के इस आमेज़श का गुमान या इ़ल्म है। उन के जवाज़ का शरअ़ ज़्यादातर में कोई इम्कान भी नहीं है लेकिन यह देखकर निहायत तकलीफ़ होती है कि तअ़वीज़ फ़रोशी की मौजूदा दुकानें ज़्यादातर ऐसे ही तअ़वीज़ों से चल रही हैं जो उ़मूमन मुश्रिकाना और ग़ैर मफ़हूम अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल होती हैं और अगर आयात क़ुर्आनी से भी इस्तिआ़ज़ह किया जाता है तो उ़मूमन तह़रीफ़ कर के पेश करते हैं।

क़ुर्आन मजीद को भी हुब्ब व बुग़्ज़, तस्ख़ीर व तफ़रीक़ और वज़अ़ व इस्तिक़रा यहाँ तक कि इम्साक के अ़मलियात का दफ़्तर बना रखा है इस क़िस्म के अ़मलियात के शौक़ीन ख़ुदा की नेअ़मतों को बाज़ औक़ात आ़रज़ी तौर पर और बाज़ ह़ालात में मुस्तक़िल ह़राम कर लेते हैं। इस गिरोह के बाज़ लोगों के सामने जब मैंने ज़िक्र किया कि इ़ज़्न इलाही के बग़ैर किसी चीज़ को ह़राम व ह़लाल करना शिर्क है या ख़ास-ख़ास बीमारियों की मरीज़ों की मौजूदगी में कितनी चीज़ें हैं जो घरों के अन्दर इस डर से इस्तेमाल नहीं की जातीं कि जो अरवाह़ उन बीमारियों का ज़रिया हैं उन को उन चीज़ों से चिढ़ाते हैं जिससे उन को देखकर उन का ग़ज़ब और बढ़ता है।

नक्षत्रों, दिनों, महीनों और कुसूफ़ व ख़ुसूफ़ से मुताल्लिक़ कितने मुश्रिकाना तवह्हुमात हैं जिन में औ़रतों से गुज़र कर आ़क़िल मर्दों तक गिरफ़्तार हैं।

बुर्ज़ुग परस्ती और बिद्अ़तें-

कितने मुसलमान हैं जो आबा परस्ती की लअ़नतों में मुब्तिला हैं। मशायख़ और बुर्ज़ुगों की क़ब्रें गोशा-गोशा में मौजूद हैं और एलानिया उन की पूजा हो रही है उन पर नज़रें पेश होती हैं, क़ुर्बानियाँ की जाती हैं। चादरें चढ़ाई जाती हैं, दुआ़एँ माँगी जाती है। मसायब और नुक़सानात को अस्ह़ाबे क़ुबूर की नाराज़गी पर मह़मूल किया जाता है उन की ज़ियारत के लिए लोग दूर-दूर से सफ़र कर के जाते हैं। उन पर मुराक़िबा करते हैं, सज्दः करते हैं और दूसरे बेशुमार मुजरिमात करते हैं जिन का ह़राम होना शरीअ़त में मालूम है।

तक़र्रुब इलाही के लिए उन का वसीला नागुज़ीर ख़याल किया जाता है, बहुतरे उन को समीअ़ व बसीर ख़याल करते ख़त्रात और मसायब के वक़्त उन को मदद के लिए पुकारते हैं।

उन को ख़ुदा के यहाँ अपना सिफ़ारिशी समझते हैं उन से दुनिया की कामियाबी, मुक़द्दमात में फ़तेह़ तिजारत में फ़रोग़ और आल व औलाद में बरकत माँगते हैं उन की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ मक़ासिद के लिए दरख़्वास्तें पेश की जाती हैं, यहाँ तक कि कुछ मज़ारात पर सायलीन की दरख़्वास्तों के लिए एहतिमाम है।

कितनी मुश्रिकाना बिद्अ़तें हैं जो ह़ज़रात सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०), सह़ाबियात और रसूल (सल्ल०) और अज़वाज व औलादे मुतह्हरात रसूल (सल्ल०) के नाम से मौजूद हैं। उन के नाम से ख़ास-ख़ास पकवान पकाते हैं और उन के खाने में इसी क़िस्म की तफ़रीक़ें मल्हूज़ होती हैं जो मुश्रिकीन के यहाँ मल्हूज़ होती थीं[1] और जिन का क़ुर्आन ने सूरः अनआ़म में ज़िक्र फ़रमाया है।

कितने हैं जो रसूल (सल्ल०) को उन सिफ़ात में शरीक क़रार देते हैं जो अल्लाह तआ़ला के लिए मख़्सूस हैं। जैसा कहते हैं-

वही है जो मुस्तवी अ़र्श था ख़ुदा होकर
उतर पड़ा वह मदीना में मुस्तफ़ा होकर

बहुत सी जगहें नबी करीम (सल्ल०) और सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के तबर्रुकात बताए जाते हैं और उन की ज़ियारत की तक़रीबात मुस्तक़िल फ़ित्ना बनी हुई है। बाज़ मक़ामात पर बुर्ज़ुगों की क़ब्रों और उन के तबर्रुकात के सन्दूक़ों या नबी (सल्ल०) के निशाने क़दम का गुसाला, ज़ायरीन में तक़्सीम होता है और लोग उस को बहुत से अमराज़ रूह़ानी व जिस्मानी का वाह़िद इलाज समझ कर पीते हैं, आँखों में लगाते हैं, दाढ़ियों में मिलते हैं। मुह़र्रम और ताज़ियादारी की मुश्रिकाना बिद्अ़तें हर शहर और देहात में मौजूद हैं और उन का कमोबेश तजुर्बः हर शख़्स को है।

नसब को ज़रिया निजात-

कितने हैं जो अपने नसब को ज़रिये निजात या कम अज़ कम ज़रिये तक़र्रुब इलाही समझते हैं। बाप-दादा का तरीक़ा कितनों के यहाँ दीन शुरु की ह़ैसियत रखता है। शरअ़ और रिवाज की इस्तिलाह़ें हर ज़बान पर चढ़ी हुई हैं और शरअ़ के मुक़ाबिले में अ़लल् ए़लान रिवाज को तरजीह़ देने वाले मुसलमानों

१- मस्लन यह कि फ़लाँ नियाज़ को मर्द न खाएँ और फ़लाँ नियाज़ फ़लाँ क़िस्म की औ़रत न खाए और फ़लाँ नियाज़ सिर्फ़ दिन ही दिन में खाई जा सकती है और फ़लाँ नियाज़ रात के ही वक़्त खाई जा सकती है।

के हर तब्क़े में मौजूद हैं।

दीनी मामलात में अल्लाह की हिदायत की तलाश और तलब तक़रीबन बिलकुल ख़त्म है। मुसलमानों में मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़े हैं और हर फ़िर्क़े में अ़वाम से गुज़र कर उ़लमा तक ऐसे मिल जाएँगे जो अपने ख़ास तरीक़े, अपने मख़्सूस फ़िर्क़े के उ़लमा पर इस तरह़ जामिद और उन की अ़स्बियत में इस तरह़ गिरफ़्तार हैं कि उन के दायरे से बाहर उन के लिए ह़क़ व हिदायत का तसव्वुर भी दुश्वार हैं।

असबियत-

कितने हैं जो अल्लाह के फ़ज़्ल से दीन का इ़ल्म भी रखते हैं, लेकिन वह ह़क़ का मेअ़यार शुयूख़ व अकाबिर ही को समझते हैं। उन के शुयूख़ जो कर गये हों उस का ग़लत होना उन के नज़दीक नामुम्किन है और जिस तरी पर उन के शुयूख़ न हों उस की सेह़त पर कितने ही दलायल अल्लाह की किताब से, रसूल की सुन्नत से, अ़क़्ल से, नक़्ल से जमअ़ कर दीजिये, वह इस से मुतमईन नहीं होंगे जो अ़सबियत अल्लाह और उस के रसूल के लिए होनी चाहिए वह अ़सबियत उन के अन्दर अपने शेख़ व अकाबिर के लिए होती है और जो ह़मीयत अल्लाह की हिदायत और उस के रसूल के तरीक़े के लिए मतलूब है वह ह़मियत उन के अन्दर अपने उ़लमा के तरीक़े के लिए है और अच्छे ख़ासे ज़ेहीन लोग भी इस फ़ित्ना की अहमियत को नहीं समझते हैं।

ऊपर मुश्रिकीन की ख़ुदा परस्ती और यहूद की क़ौम परस्ती का भी ज़िक्र हुआ है और वहाँ हम ने दिखाया है कि एक किस तरह़ क़ौमें और जमाअ़तें ख़ुद तागूत बन जाया करती हैं। किस तरह़ वह अल्लाह के तमाम वादों और उस की सारी बरकतों को ईमान बिल्लाह और अ़मल सालेह़ की जगह अपने नसब और ख़ानदान से वाबस्ता कर देती हैं। किस तरह़ अपने दायरे को निजात का दायरा और अपने तरीक़े को अल्लाह की हिदायत का क़ायम मक़ाम बना देती है।

ठीक यही ह़ाल इस वक़्त मुसलमानों का है, यह जो कुछ करते हैं वह आप से आप इस्लामी समझ लेते हैं। इस के लिए अल्लाह की किताब और उस के

रसूल के तरीक़े से मुताबिक़ होना ज़रूरी नहीं समझते।

यह जो रंग ढंग अख़्तियार कर लें वह इस्लाम है। अगरचे वह मग़्रिब की जाहिली तहज़ीब की नक्क़ाली ही क्यों न हो। जो तअ़लीम अपने बच्चों को दें वह इस्लामी तअ़लीम है अगरचे वह तअ़लीम बच्चा के दिल के अन्दर से इस्लाम की जड़ उखाड़ कर फेंक दे मुसलमान समझने लग गये हैं कि वह ख़ैरुल् उमुम हैं इसलिए उन का हर काम बेहतर और पाक है चाहे उसे शरीअ़त से कोई लगाओ हो या न हो। उन की अक्सरियत जो क़ानून बना दे वह ख़ुदा का क़ानून है, वह जो पालिश मुसलमानों के चेहरों के लिए तैयार कर दें वह सिब्ग़तुल्लाह है और इस राह में जो उन की क़यादत करे वह क़ायदे आ़ज़म है।

अगरचे ज़िन्दगी ख़ुदा से बग़ावत और नाफ़रमानियों ही में गुज़रें।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि तुम अपने अगलों (यहूद) के हर नक़्शे क़दम की पैरवी करोगे, ग़ौर कीजिए मुसलमानों की इस ज़ेहनियत में कैसे ह़ैरत अंगेज़ निशानियाँ हैं।

कुर्आन ने यहूद और मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती और ह़िमायते शिर्क को भी शिर्क क़रार दिया है। यहूद की तागूत परस्ती यह थी कि वह ऐसे लीडरों की पैरवी करते जो अल्लाह की हिदायत की जगह लोगों से अपनी हवा-ए-नफ़्स की पैरवी कराते थे, मुसलमानों का भी यही ह़ाल है। उन में कितने हैं जो आज ऐसे लीडरों की पैरवी कर रहे हैं जो उन से अपने हवा-ए-नफ़्स की पैरवी करा रहे हैं।

मुसलमान और किताबुल्लाह-

मुसलमान किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल की इताअ़त के दाअ़ी हैं, मगर न उन से वाक़िफ़ हैं न उन पर आ़मिल हैं। कितने सादा लोग ऐसे हैं जो बरमला कहते हैं कि उन का रास्ता अल्लाह और रसूल का रास्ता न सही। लेकिन उन के अन्दर मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा तो है।

तागूत बनने की इस से ज़्यादा बुरी मिसाल और क्या हो सकती है कि आज

मुसलमानों को अल्लाह, उस के दीन और उस के रसूल की ख़ैर ख़्वाही से ज़्यादा ख़ुद अपनी ख़ैर ख़्वाही मतलूब है। अगर उन की बात बनती है, तो कुछ परवाह नहीं और ख़ुदा की बात बिगड़ जाए तो कोई अगर एक शख़्स उन को ऐसी राह पर ले जा रहा है जिस में उनको अपने ग़ुरूर का सर ऊँचा नज़र आता है तो दीन का झंडा नीचा हो जाए तो कुछ ग़म नहीं।

अल्लाहु अकबर, कैसे शदीद फ़ित्ना का ज़माना है कि मुसलमान ख़ुदा की अ़ब्दियत से निकल कर भी अपने मुसलमान होने का दावा करता है और उन लोगों को वह अपना बेहतरीन ख़ैर ख़्वाह समझता है जो खुल्लम खुल्ला उस को अल्लाह के दीन के सिवा और रास्ते पर ले जा रहे हैं।

मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती-

मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती यह थी कि अपने बाज़ मामलात यहूद की अ़दालतों में ले जाते थे, अल्लाह और उस के रसूल की अ़दालत में नहीं लाते थे। यहाँ यह ह़ाल है कि ज़िन्दगी के हर शोअ़बे पर तागूत का ग़ल्बा है। अ़दालतें तागूती हैं और मुसलमान हर तरह़ के मामलात में उन ही से रुजूअ़ करते हैं। बहुत से कालेज तागूती हैं और मुसलमानों का बड़ा तब्क़ा अपने बच्चों को उन ही के ह़वाले करता है।

निज़ामे हुकूमत तागूती हैं और मुसलमान न सिर्फ़ उस के कुलपुर्ज़े बने हुए हैं बल्कि उस के अन्दर तरक़्क़ी दरजात के लिए मुक़ाबिला करते हैं और एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करते हैं। तहज़ीब तागूती है और मुसलमान इस तहज़ीब को लेने में भी सब से ज़्यादा आगे हैं। निज़ामे मआ़श व मआ़शियात तागूती है मुसलमान उस को अपनाने में भी पेश-पेश है अदब और आर्ट तागूती है और मुसलमान इस में अपने ह़िस्से के लिए बेक़रार है और शायद गिनती के लोग होंगे। जो इन चीज़ों के अन्दर कोई क़बाह़त महसूस करते हों।

शिर्क की हिमायत भी शिर्क है-

ऊपर ज़िक्र हो चुका है कि शिर्क की ह़िमायत व ताईद भी शिर्क है, लेकिन यहाँ कितने मुसलमान हैं जो अपने ज़ेहन व दिमाग़ और अअ़ज़ा व जवारेह़

की सारी क़ौमें एक तागूती निज़ाम व तमद्दुन की कामियाबी व तरक़्क़ी में लगा रहे हैं। कितने हैं जो अपने माल से उस की सरबुलन्दी और मज़बूती दे रहे हैं कितने हैं जो इस कुफ़्र के लिए अपनी जानें तक कुर्बान कर रहे हैं।

इस्लामी अह़काम-

इस्लामी अह़काम व तअ़लीमात के ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ीन की सरगोशियों और अहले ईमान के तरीक़े के ख़िलाफ़ उन की ख़ुद आराईयों को भी कुर्आन ने शिर्क क़रार दिया है लेकिन आज कितने मुसलमान हैं जो अल्लाह व रसूल के अह़काम के ख़िलाफ़ एलानिया मज़ाक़ उड़ाते हैं।

शरीअ़त के अह़काम को नाक़ाबिले अ़मल और ख़िलाफ़े अ़क़्ल व तहज़ीब क़रार देते हैं। इस्लामी तअ़ज़ीरात और इस्लामी निज़ामे मआ़श व मआ़शत को सिर्फ़ चौदह सौ बरस पहले के ह़ालात के लिए साज़गार बताते हैं।

कुर्आन की अ़क़लियत को बहुतरे ज़माने के मेअ़यार से दूर समझते हैं और अपनी ज़िन्दगी के हर शोबे में, चाहे वह ज़ाहिर से मुतअ़ल्लिक़ हो या बातिन से इस जादू में डूबे हुए हैं जो अल्लाह और उस के रसूल ने अहले ईमान के लिए मुतअ़य्यन किया है। उन का फ़िक्र ग़ैर इस्लामी है। जो चीज़ अल्लाह व रसूल के हाँ मतलूब व मह़बूब है उन के यहाँ कोई अहमियत नहीं है जो अल्लाह व रसूल के नज़दीक मरदूद है वह उन के यहाँ मतलूब व मक़बूल है।

उन्होंने या तो अपने नफ़्स को इल्लाह बना रखा है या उन लोगों को इल्लाह बना रखा है जिन की तअ़लीम व तहज़ीब से वह मरअूब हैं। इस्लाम के साथ उन की निस्बत सिर्फ़ इस क़दर है कि वह उन तमाम बातों के साथ-साथ अपने आप को मुसलमान भी कहते हैं।

मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती-

मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती को भी शिर्क क़रार दिया गया है। आज कितने मुसलमान हैं जो अल्लाह की बन्दगी का दावा करते हैं, लेकिन वह बिल्कुल ***'वमिनन्नासि मय्यअ़बुदुल्लाहा अ़ललह़रफ़'*** की तस्वीरें हैं जिस ह़द तक इस्लाम की तस्वीर हैं जिस ह़द तक इस्लाम के इक़रार और उस की पैरवी में कोई शुब्हा

नहीं है उस ह़द तक वह मुसलमान हैं।

लेकिन जहाँ से इस्लाम के वह मुतालिबात शुरु होते हैं जिन से उन के किसी दुनयवी फ़ायदे को नुक़सान पहुँचता नज़र आता है या ज़िन्दगी को आज़माईशों से दो चार होना पड़ता है वहीं से वह कट के अलग हो जाते हैं उन्होंने अपने आप को पूरे तौर पर अल्लाह और रसूल के ह़वाले नहीं किया है।

वह रसूल को सिर्फ़ एतिक़ाद की ह़द तक रसूल मान लेना काफ़ी समझते हैं, उस की लाई हुई तअ़लीम और उस की बख़्शी हुई हिदायत का ज़िन्दगी के हर शोअ़बे में वाजिबुबल इताअ़त होना उन के नज़दीक तौह़ीद और ईमान बा रिसालत का जुज़्व नहीं है। ह़ालांकि हर रसूल اعبدوا الله (अल्लाह की बन्दगी) के साथ واطيعون (और मेरी इताअ़त करो) का भी हुक्म देता है और यह भी वाज़ेह़ कर देता है कि जो मेरे तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं उन से बग़ावत करो।

ولا تطيعوا امر المسرفين

यही वह नुक़्ता है जहाँ से कुफ़्र व इस्लाम का अस्ली झगड़ा शुरु होता है, वरना इस एतिक़ाद में कि अल्लाह एक है रसूल अल्लाह के भेजे हुए हैं, हम अल्लाह, उस के फ़रिश्तों, उस के नबियों और उस की किताबों और आख़िरत पर ईमान लाते हैं, ऐसी क्या बात है जिस पर गर्दनें कटीं, तलवारें चमकीं और हिजरत, जिहाद, और क़िताल के मरह़ले पेश आएँ?

अ़रब में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पहले ऐसे लोग मौजूद थे जो बुत परस्ती के खुल्लम खुल्ला मुन्किर थे और उन में बाज़ मशहूर ख़तीब भी थी जो एलानिया अपने ख़ुत्बों में तौह़ीद का ज़िक्र करते थे, लेकिन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से सिर्फ़ इस बात पर लड़ाई करते कि वह अपने आप को अल्लाह का रसूल समझते हैं और बुतों के मुख़ालिफ़ हैं।

उनकी सारी लड़ाई तो इसी बात पर थी कि यह ख़ुदा की इताअ़त को उस की बन्दगी का ज़रूरी जुज़्व क़रार देते हैं और इस इताअ़त का जो रास्ता अपनी इताअ़त बताते हैं और हम से बग़ावत उस की शर्त लाज़िम क़रार देते हैं। दीन का यही ह़िस्सा है जो प्राईवेट नहीं हो सकता।

मुसलमानों के ऊपर आहिस्ता-आहिस्ता शिर्किया आ़माल व अ़क़ायद की तहें

जमती जा रही हैं और इस की वजह इस के सिवा कुछ नहीं है कि एक मुद्दत से किसी सह़ी दीन निज़ाम के मौजूद न होने और तागूत के ग़ल्बा की वजह से तौह़ीद और उस की ताकतों का सह़ी शुऊर उन में गायब होता जा रहा है।

इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि शिर्क के हर क़िस्म के जरासीम को निकाल कर तौह़ीद का मनार क़ायम किया जाय तब कि तमाम इन्सानियत दुनिया व आख़िरत के वबाल से मह़फ़ूज़ जाए। हर व्यक्ति यह काम अपने घर से शुरु करे, यहाँ तक कि दुनिया मह़सूस करे कि शिर्क एक बहुत बड़ा गुनाह है।

भाग-2

कुफ़्र और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

कुफ़्र की परिभाषा

लुग़त में 'कुफ़्र' के माने ढ़ापने और छिपाने के हैं, और शरई इस्तिलाह़ में ईमान के विलोम को कुफ़्र कहते हैं, यानी अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान न लाने को कुफ़्र कहा जाता है, चाहे उस में तकज़ीब (झुठलाना) पाया जाए या न पाया जाए, इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, बल्कि शक व शुब्हा, एराज़ ह़सद, घमंड और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी आदि से भी इस हुक्म में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, चाहे झुठलाने वाला सब से बड़ा काफ़िर ही क्यों न हो, इसी में वह मुन्किर व झुठलाने वाला भी आता है, जो दिल में रिसालत का यक़ीन रखने के बावजूद ह़सद की वजह से कुफ़्र को गले लगाए रहता है।

कुफ़्र की क़िस्में

कुफ़्र की दो क़िस्में हैं-

(१) कुफ़्र अकबर

(२) कुफ़्र अस़्ग़र

कुफ़्र अकबर से मुराद वह कुफ़्र है जो मुसलमान को दायरे मिल्लत से निकाल देता है इस की पांच क़िस्में हैं।

१- कुफ़्र तकज़ीब (झुठलाना)

उस की दलील अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल है:-

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ

और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या ह़क़ को झुठलाए,

كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा? (सूरः अन्कबूत- ६८)

२. कुफ़्र, तकब्बुर व इन्कार

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो,'' तो इब्लीस (शैतान) के सिवा सब ने सज्दः किया, उसने इन्कार किया और घमंड में आ गया और वह काफ़िर (अवज्ञाकारी) हो गया। (सूरः बकरः-३४)

३. शक व शुब्हा का कुफ़्र

इसे कुफ़्र ज़न (गुमान) भी कहा जाता है। इस की दलील यह है:

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَٰذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِدتُّ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَّٰكِنَّا۠ هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾

और वह अपने बाग़ में इस ह़ाल में दाख़िल हुआ, कि अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था, उसने कहा! मैं नहीं समझता कि यह बाग़ कभी तबाह होगा; और न मैं यह समझता हूँ कि क़ियामत आने वाली है, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया भी जाऊँ, तो ज़रूर उसमें अच्छी जगह पाऊँगा।'' उसका दोस्त जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा, ''क्या तू 'उसका' इन्कार करता है, 'जिसने' तुझको मिट्टी से, फिर नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बना दिया; लेकिन मेरा 'रब' 'वही'

अल्लाह है, और मैं किसी को अपने रब के साथ साझीदार नहीं बनाता।

(सूरः कहफ़- ३५-३८)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُعْرِضُونَ ۝

और इन्कारियों को जिस चीज़ की नसीहत की जाती है उस से मुँह फेर लेते हैं।

(सूरः अहक़ाफ़- ३)

इस की दलील अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल है:-

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝

यह इसलिए कि वे ईमान लाए, फिर इन्कार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, वे अब कुछ नहीं समझते।

(सूरः मुनाफ़िक़ून- ३)

कुफ़्र अस्ग़र

कुफ़्र अस्ग़र से एक मुसलमान दायरे मिल्लत से नहीं निकलता है, **जैसे-**

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّن كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है; एक बस्ती थी जो निश्चिन्त संतुष्ट थी, हर ओर से रोज़ी उनके पास बहुतायत के साथ पहुँच रही थी, फिर उन लोगों ने अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री की। (सूरः नह़्ल- ११२)

मुसलमान का मुसलमान से जंग व जिदाल भी इस में दाख़िल है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया-

"मुसलमान को गाली गलौज करना फ़िस्क़ है और उस से लड़ना झगड़ना

कुफ़्र है।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमायाः

मेरे बाद तुम फिर काफ़िर न बन जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (मुत्तफ़क़ अ़लैह)

इस में ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना भी दाख़िल है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का इर्शाद गिरामी है:

"जिस ने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उस ने कुफ़्र या शिर्क किया।"

(तिर्मिज़ी)

एक जगह पर अल्लाह तआ़ला ने कबीरा गुनाह करने वाले को मोमिन कहा है, जैसे-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَىٰ

ऐ ईमान वालो! फ़र्ज़ किया गया तुम पर, कि क़त्ल किये गये लोगों के ख़ून का बदला(क़िसास) दिलाओ। (सूरः बक़रः-१७८)

यहाँ पर क़ातिल को मोमिनों के ज़ुमरे से अलग नहीं किया गया है बल्कि उस को क़िसास के वली का भाई बताया गया है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ

अगर क़ातिल को भाई चारे के ख़याल से कुछ माफ़ी दी जाए, तो भले तरीक़े से एह़सान मानकर, "ख़ून बहा" की रक़म अच्छे तरीक़े से अदा करे। (सूरः बक़रः-१७८)

भाई से मुराद यहाँ दीनी भाई है, एक जगह और इर्शाद है-

وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا

और अगर ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह़ कराओ।

(सूरः ह़ुजरात-९)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ

मोमिन तो आपस में भाई- भाई ही हैं, तो अपने भाइयों के बीच सुलह़ कराओ।

(सूरः हुजरात-१०)

कुफ़्र अकबर और कुफ़्र अस़्ग़र में अन्तर

१. कुफ़्र अकबर एक मुसलमान को मिल्लते इस्लामिया के दायरे से निकाल देता है उस के आ़माल को ख़त्म कर देता है, जब कि कुफ़्र अस़्ग़र एक मुसलमान को दायरे मिल्लत से नहीं निकालता और न ही उस के आ़माल को ख़त्म करता है, हाँ उस में कमी ज़रुर पैदा करता है।

२. कुफ़्र अकबर, कुफ़्र करने वाले को हमेशा के लिए जहन्नम रसीद कर देता है, जब कि कुफ़्र अस़्ग़र साह़िबे कुफ़्र को हमेशा का जहन्नमी नहीं बनाता अल्लाह तआ़ला उस की तौबा क़ुबूल कर सकता है और उस को सिरे से ही जहन्नम से बचा सकता है।

३. कुफ़्र अकबर से साह़िबे कुफ़्र का जान व माल मुबाह़ हो जाता है, जब कि कुफ़्र अस़्ग़र उस के जान व माल को मुबाह़ नहीं करता।

४. कुफ़्र अकबर की वजह से मोमिनों के लिए हुक्म है कि साह़िबे कुफ़्र अकबर से मुह़ब्बत व दोस्ती चाहे वह कितना ही क़रीबी हो जाएज़ नहीं, जहाँ तक कुफ़्र अस़्ग़र की बात है तो उस की वजह से साह़िबे कुफ़्र अस़्ग़र से दोस्ती करने में कोई ह़र्ज नहीं, बल्कि उस के ईमान की मिक़्दार के बराबर उन से मुह़ब्बत व दोस्ती की जा सकती है।

भाग-3

निफ़ाक़ और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

निफ़ाक़ की परिभाषा

लुग़त के एतिबार से लफ़्ज़ 'निफ़ाक़' मस्दर है 'फ़ेअ़ल' नाफ़िक़ का, कहा जाता है 'नाफ़क़ा', 'युनाफ़िक़ु' 'मुनाफ़िक़तन' यह लफ़्ज़ अल्नाफ़िक़ा से लिया गया है। अर्थात गोह के बिल के ख़ुफ़िया निकलने के मुँह को कहते हैं, गोह के बारे में मशहूर है कि जब उसे बिल के एक मुँह से तलाश किया जाता है तो वह दूसरे मुँह से निकल जाता है। अर्थात दो मुँहा।

यह भी कहा गया कि वह लफ़्ज़ नुफ़्क़ से बना है जो उन बिलों को कहते हैं जिन में 'गोह' छिपे रहते हैं।

शरई इस्तिलाह़ में निफ़ाक़ के माने हैं इस्लाम व ख़ैर का इज़हार करना। और कुफ़्र व शर को अन्दर छिपाए रखना, इसे निफ़ाक़ इसलिए कहा गया है कि मुनाफ़िक़ एक दरवाज़े से शरीअ़त में दाख़िल होता है तो दूसरे दरवाज़े से निकल जाता है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तम्बीह फ़रमाई गई है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ۝ बेशक मुनाफ़िक़ीन बड़े नाफ़रमान हैं।

(सूरः तौबः ६७)

फ़ासिक़ों से मुराद वह लोग हैं जो दायरे शरीअ़त से निकले हुए हैं, इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ों को काफ़िरों से भी बुरा क़रार दिया है,

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِۚ बेशक मुनाफ़िक़ आग (जहन्नम) के सबसे निचले दर्जे में होंगे। **(सूरः निसा-१४५)**

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْۚ मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालांकि अल्लाह उन की चालों को उन्हीं पर उलट रहा है।

(सूरः निसा- १४२)

निफ़ाक़ की क़िस्में

निफ़ाक़ की दो किस्में हैं-

१. एतिक़ादी निफ़ाक़

२. अ़मली निफ़ाक़

१. एतिक़ादी निफ़ाक़

यह निफ़ाक़े अकबर है, जिस में एक मुनाफ़िक़ ऊपर से इस्लाम को मानता है, लेकिन अन्दर से नहीं मानता। इस तरह़ के निफ़ाक़ से आदमी पूरे तौर पर दीन से ख़ारिज हो जाता है, बल्कि वह जहन्नम के सब से निचले तब्क़े में पहुँच जाता है, ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला ने कभी काफ़िर कहा, कभी बेईमान कहा, कभी दीन और दीनदारों के साथ मज़ाक़ उड़ाने वाले से उसे तअ़बीर किया, उन की बुरी सिफ़ात बयान करते वक़्त कहा गया, कि इनकी इस्लाम दुश्मनी कभी कम नहीं होती, मुनाफ़िक़ीन हर ज़माने में पाए जाते हैं, ख़ासतौर पर ऐसे ज़माने में जब इस्लाम की क़ुव्वत व शौक़त बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है।

चूंकि यह ज़ाहिरी तौर पर यह मुक़ाबला नहीं कर पाते। लिहाज़ा यह इस का इज़हार करते हैं कि हम भी इस में दाख़िल हैं, ताकि अन्दर रह कर इस्लाम और अहले इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशे रचें, मुसलमानों से मिल कर रहने का मौक़ा मिले और अपने जान व माल की उन से ह़िफ़ाज़त हो सके।

लिहाज़ा एक मुनाफ़िक़ बज़ाहिर अल्लाह तआ़ला, उस के फ़रिश्तों, उस की किताबों और रसूलों और यौमे आख़िरत पर ईमान का एलान करता है, लेकिन अन्दुरुनी तौर पर इन चीज़ों से ख़ाली होता है, बल्कि इन ह़क़ायक को झुठलाता है।

यह न अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाता है न इस बात पर कि अल्लाह तआ़ला ने अपने एक बन्दे पर अपना कलाम पाक नाज़िल फ़रमाया है उस को रसूल बनाया है ताकि वह इस की इजाज़त से लोगों को हिदायत करे उस की पकड़

से बाख़बर करे। अल्लाह ने अपने बन्दों पर उन के मामले को ज़ाहिर कर दिया है, ताकि वह भी निफ़ाक़ और अहले निफ़ाक़ से होशियार रहे।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः के शुरु में लोगों के तीन गिरोहों का ज़िक्र किया है, मोमिनीन, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन। मोमिनों के सिलसिले में चार आयतें नाज़िल हुईं, काफ़िरों से मुतअ़ल्लिक़ दो आयतें, जब कि मुनाफ़िक़ीन के बारे में तेरह आयतें उतरीं और यह सिर्फ़ मुनाफ़िक़ों की कसरत, लोगों में निफ़ाक़ के फैलने और इस्लाम और अहले इस्लाम के लिए अ़ज़ीम फ़ित्ना साबित होने की वजह है।

मुनाफ़िक़ो की तकलीफ़ों की वजह से इस्लाम को बहुत से मुश्किलात झेलने पड़ते हैं, इसलिए कि यह इस्लाम के ह़क़ीक़ी और कट्टर दुश्मन होने के बावजूद इस्लाम का नाम लेते हैं, इस्लाम के हामी और मदद्गार समझे जाते हैं, नये-नये तरीक़े मुनाफ़िक़ीन अपनी दुश्मनी के निकालते हैं, जैसे जाहिल लोग यह समझते हैं कि यह लोग दीन, इ़ल्म व इस्लाह़ की बातें करते हैं जब कि ह़क़ीक़त में वह इस्लाह़ नहीं। जिहालत और दीन के चेहरे को बिगाड़ना होता है।

ज़ाहिरी निफ़ाक़ की सूरतें

ज़ाहिरी निफ़ाक़ की यह सूरतें हैं जिन से पहचाना जा सकता है-

१- रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झुठलाना।
२- रसूलुल्लाह (सल्ल०) की लाई हुई शरीअ़त के बाज़ ह़िस्से को झुठलाना।
३- रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बुग़्ज़ रखना।
४- रसूलुल्लाह (सल्ल०) की लाई हुई शरीअ़त से बुग़्ज़ रखना।
५- रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लाए हुए दीन के कमज़ोर होने से ख़ुश होना
६- रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दीन के ग़ल्बे और उन्नति से रंजीदा होना

२- अ़मली निफ़ाक़

इस से मुराद दिल में ईमान के साथ-साथ मुनाफ़िक़ों के आ़माल में से कुछ का करना है। इस निफ़ाक़ से आदमी मिल्लते इस्लामिया के दायरे से नहीं

निकलता, लेकिन मिल्लत के दायरे से निकलने के रास्ते को हमवार करता है, ऐसे शख़्स के अन्दर ईमान व निफ़ाक़ दोनों होते हैं। जब निफ़ाक़ का पलड़ा भारी होता है तो वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ हो जाता है, इसकी दलील रसूलुल्लाह (सल्ल०) का यह क़ौल।

मुनाफ़िक़ों की चार निशानियाँ-

चार चीज़ें हैं, जिस के अन्दर होंगी वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ होगा। और जिस के अन्दर उन में से एक होगी उस में निफ़ाक़ की एक ख़सलत होगी, यहाँ तक कि उसे छोड़ दे। (वह यह हैं)

जब अमानत सौंपी जाए तो ख़यानत करे, और जब बात करे तो झूठ बोले और जब अ़हद करे तो बद् अ़हदी करे, और जब झगड़ा करे तो गाली-गलौज पर उतर आए। **(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)**

इस तरह़ जिस के अन्दर यह चारों ख़सलतें जमा हो जायें उस के अन्दर सारी बुराइयाँ जमा हो जाती हैं और उस के अन्दर मुनाफ़िक़ीन की सारी सिफ़ात इकट्ठा हो जाती हैं, और जिस के अन्दर इन में से एक हो उस के अन्दर निफ़ाक़ की एक आ़दत हो जाती है। ऐसा भी होता है कि एक बन्दे के अन्दर कुछ अच्छी ख़सलतें भी होती हैं और कुछ बुरी ख़सलते भी, कुछ ईमानी ख़सलतें भी होती हैं और कुछ कुफ़्र व निफ़ाक़ की ख़सलतें भी, और अपने अच्छे बुरे अ़मल के एतिबार से सवाब व अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ होता है, निफ़ाक़ अ़मली में जमाअ़त के साथ नमाज़ में सुस्ती भी दाख़िल है इसलिए कि यह मुनाफ़िक़ीन की सिफ़ात में से है, निफ़ाक़ बहुत बुरी और ख़तरनाक चीज़ है, यही वजह थी कि सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) निफ़ाक़ से बहुत ज़्यादा डरते रहते थे।

निफ़ाक़ अकबर व निफ़ाक़ अस्ग़र में अन्तर

१- निफ़ाक़ अकबर एक मुसलमान को दायरे मिल्लत से बाहर कर देता है, जब कि निफ़ाक़ अस्ग़र एक मुसलमान को मिल्लत के दायरे से बाहर नहीं करता।
२- निफ़ाक़ अकबर में एतिक़ाद व अ़क़ीदा के अन्दर ज़ाहिर व बातिन मे

इख़्तिलाफ़ होता है और निफ़ाक़ अस्ग़र में अ़क़ीदा व एतिक़ाद के बजाए आ़माल के अन्दर ज़ाहिर व बातिन में इख़्तिलाफ़ होता है।

३- निफ़ाक़ अकबर एक मोमिन से सादिर नहीं हो सकता, लेकिन निफ़ाक़ अस्ग़र बन्दा मोमिन से सादिर हो सकता है।

४- साहि़बे निफ़ाक़ अकबर आमतौर से तौबः नहीं कर पाता है, अगर तौबः कर भी ले तो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उस की क़ुबूलियत के सिलसिले में इख़्तिलाफ़ है, जब कि साहि़बे निफ़ाक़ अस्ग़र को आमतौर से तौबः की तौफ़ीक़ मिल जाती है और अल्लाह तआ़ला उस की तौबः क़ुबूल भी कर लेता है।

एक मोमिन बन्दे को कभी शैतान के वसाविस और कुफ़्र के वसाविस से पाला पड़ता है, जिस से उस के दिल में घुटन पैदा होती है, जैसे कि सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) ने कहा था कि ऐ अल्लाह के रसूल हम में से बाज़ अपने दिल में ऐसी चीज़ महसूस करते हैं कि उस को बोलने से वह आसमान से ज़मीन पर गिर कर मर जाने को बेहतर समझते हैं, (यह सुन कर) आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः यह ईमान की खुली हुई निशानी है। **(मुस्लिम, अह़मद)**

एक रिवायत में है-

वह अपने दिल की बात को ज़बान से बोलना बहुत ही अ़ज़ीम व ख़तरनाक समझते हैं, (यह सुन कर) आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः अल्लाह की हज़ार-हज़ार तअ़रीफ़ कि उस ने एक साज़िश को वस्वसे में बदल दिया, यानी इस कराहियत के बावजूद इस तरह़ के वस्वसे का ह़ासिल होना फिर उस को अपने दिल से ख़त्म करना ईमान की खुली हुई दलील है।

और जहाँ तक निफ़ाक़ अकबर का तअ़ल्लुक़ है तो उन लोगों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

वे बहरे हैं,गूँगे हैं, अन्धे हैं, कि लौटने वाले नहीं। **(सूरः बकरः-१८)**

यानी वह अन्दुरुनी तौर पर इस्लाम की तरफ़ नहीं लौटेंगे, ऐसे लोगों के बारे में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

क्या यह देखते नहीं, कि हर साल यह एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी यह न तो तौबः करते हैं और न नसीह़त ह़ासिल करते हैं? **(सूरः अत्तौबः-१२६)**

भाग-4

फ़िस्क़ और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

फ़िस्क़ की परिभाषा

लुग़त में फ़िस्क़ के माने निकलने के हैं, और शरई इस्तिलाह़ में फ़िस्क़ से मुराद, इताअ़ते इलाही से निकलना है, इस में पूरे तौर पर निकलने वाला भी शामिल है। इसलिए काफ़िर को भी फ़ासिक़ कह दिया जाता है, इसी तरह़ इस से थोड़ा सा निकलना भी मुराद लेते हैं। इसलिए कि अगर एक मोमिन से कोई कबीरा गुनाह हो जाता है तो उसे फ़ासिक़ कह दिया जाता है।

फ़िस्क़ की क़िस्में

फ़िस्क़ की दो क़िस्में हैं, जिनका ज़िक्र नीचे किया जाता है। जैसे-

(१) वह क़िस्म जिस से आदमी दायरे मिल्लत से ख़ारिज हो जाता है, उसे कुफ़्र कहते हैं। लिहाज़ा काफ़िर को भी फ़ासिक़ कह दिया जाता है, अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस का ज़िक्र करते हुए फ़रमायाः

فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ

तो वह अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी कर बैठा। (सूरः कहफ़- ५०)

इस फ़िस्क़ के ज़रिए इब्लीस ने दरअसल कुफ़्र किया था, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰهُمُ النَّارُ

और जिन्होंने नाफ़रमानी की, उनका ठिकाना दोज़ख़ है। (सूरः सज्दः- २०)

इस से मुराद कुफ़्फ़ार हैं, उस की दलील यह इर्शादे बारी है।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝

जब कभी वे उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में ढ़केल दिये जाएँगे और उनसे कहा जाएगा चखो अब उस आग के अ़ज़ाब का

मज़ा, जिसको तुम झूठ समझते थे।''

(सूरः सज्दा- २०)

(२) गुनाहगार मुसलमान को भी फ़ासिक़ कह दिया जाता है, लेकिन उस का फ़िस्क़ उसे इस्लाम से नहीं निकालता।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۙ

और जो लोग पाकदामन औ़रतों पर (बद्कारी का) आरोप लगाएँ! और चार गवाह न ला सकें, तो उनको अस्सी कोड़े मारो; और कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और यही लोग फ़ासिक़ (कप्टाचारी) हैं। (सूरः नूर-४)

उलम-ए-किराम ने फ़िस्क़ की तफ़्सीर में इस के माने आ़सी व गुनाहगार बताए हैं। (किताबुल ईमान सफ़ा २७८)

गुमराही और उस की क़िस्में

ज़लालत कहते हैं सिराते मुस्तक़ीम से हट जाने को, यह हिदायत के विपरीत है।

ज़लालत का अर्थ

१- यह कुफ़्र के लिए भी बोला जाता है जैसे-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝

और जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों, और उसके रसूलों, और क़ियामत के दिन का इन्कार करता है, वह गुमराही से बहुत दूर जा पड़ा।

(सूरः निसा- १३६)

२- कभी यह शिर्क के लिए भी बोला जाता है, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝

और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराया, तो वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। (सूरः निसा-११६)

३- कभी यह मुख़ालिफ़त पर भी होता है जिस से कुफ़्र लाज़िम नहीं होता, जैसे कहा जाता है, 'फ़िरके़ ज़ाल्ला', यहाँ जल्ला से मुराद मुख़ालिफत है।

४- ग़लती पर भी होता है, जैसे- ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का क़ौल कुर्आन में यूं बयान हुआ हैः

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝

(मूसा ने) कहा, ''ऐसा तो उस समय हो गया था जबकि मैं ख़ताकारों में था।

(सूरः शअ़रा-२०)

५- कभी भूल पर भी इस का इतलाक़ होता है, जैसे-

اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ

एक भूल जाएगी तो दूसरी उसे याद दिला देगी। (सूरः बकरः- २८२)

६- ज़लाल का इतलाक़ कभी गायब होने और गुम होने पर भी होता है।

(अल्मुफ़रदात लिल् राग़िब- २६७-२६८)

भाग-5

इरतिदाद और उसकी क़िस्मों का तफ़्सीली ज़िक्र

इरतिदाद की परिभाषा

लुग़त में इरतिदाद (रुजूअ़) पलटने को कहते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ — और देखना मुक़ाबले के वक़्त पीठ फेरना। **(सूरः अल् माइदा-२१)**

फ़िक़्ही इस्तिलाह़ में इरतिदाद कहते हैं 'इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र के करने को।'

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

जो तुमसे या अपने दीन से फिर जाए, और उसी ह़ालते कुफ़्र (इन्कारी की ह़ालत) पर मर जाए, तो यही लोग हैं कि उनके आ़माल (कर्म) दुनिया व आख़िरत में बर्बाद हो जाएँगे, और यही लोग दोज़ख़ी हैं जिसमें वे हमेशा रहेंगे। **(सूरः बकरः-२१७)**

इरतिदाद की क़िस्में

'इस्लाम के किसी नुक़्स या कमी के करने से यह इरतिदाद लाज़िम आता है' जिस की चार क़िस्में हैं।

१- क़ौली इरतिदाद

२- अ़मली इरतिदाद

३- एतिक़ादी इरतिदाद

४- इरतिदाद बेवजह शक

क़ौली इरतिदाद

अल्लाह तआ़ला, उस के रसूल या उस के फ़रिश्ते या गुज़िश्ता अम्बिया में से किसी नबी को बुरा भला कहना या इ़ल्म ग़ैब का दावा करना या नुबूव्वत का दावा करना, या किसी से मदद चाहना जब कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई क़ादिर नहीं या फिर किसी मामले में ग़ैरुल्लाह से पनाह माँगना आदि।

अ़मली इरतिदाद

इस की मिसाल बुत, पेड़, पत्थर, मज़ार व मक़ाबिर का सज्दः करना, उस के लिए क़ुर्बानी करना, क़ुर्आन मजीद की बेहुर्मती करना, जादूगरी करना, उस को सीखना और सिखाना, अल्लाह तआ़ला की शरीअ़त के अ़लावह दूसरे क़वानीन के मुताबिक़ फ़ैसला देना और उसी इन्सानी क़ानून को मसले का ह़ल समझना।

एतिक़ादी इरतिदाद

अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और की शिरकत का एतिक़ाद रखना या ज़िना, शराब और सूद को ह़लाल समझना। या नमाज़ को वाजिब न समझना, इस तरह़ की तमाम वह चीज़ें जिनके ह़लाल व ह़राम होने पर उम्मत का फ़ैसला हो और यह इन्कार करे।

इरतिदाद बेवजह शक

किसी ऐसी चीज़ में शक के ज़रिए इरतिदाद करना जिस का ज़िक्र पीछे गुज़र चुका है। जैसे शिर्क की हुरमत में शक करना, ज़िना व शराब की हुरमत में शक करना, या रसूलुल्लाह (सल्ल०) की रिसालत या दीगर अम्बिया में से किसी की रिसालत पर शक करना, या उन की सच्चाई पर शक करना, या मज़हब इस्लाम में शक करना, या मौजूदा दौर में उस को नाक़ाबिले अ़मल समझना आदि।

दीन के साथ मज़ाक़ का हुक्म

दीन के साथ मज़ाक़ व इस्तिहज़ा करने वाला मुसलमान मुरतद हो जाता है और दायरे इस्लाम से निकल जाता है, **अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–**

قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ

कहो क्या तुम अल्लाह और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसी करते थे, बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो। (**सूरः तौबः-६५-६६**)

इस आयते करीमा से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला के साथ मज़ाक़ कुफ़्र है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ मज़ाक़ कुफ़्र है। अल्लाह तआ़ला की आयतों और निशानियों के साथ मज़ाक़ कुफ़्र है। जो शख़्स भी इन बातों में से किसी एक के साथ मज़ाक़ करेगा वह इन तमाम उमूर के साथ मज़ाक़ करने वाला शुमार किया जाएगा।

मुनाफ़िक़ों का रिकार्ड यही था कि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सह़ाब-ए-किराम के साथ मज़ाक़ किया करते थे, जिन की वजह से आयते करीमा उतरी, कि इन बातों के साथ मज़ाक़ एक-दूसरे के साथ लाज़िम व मल्ज़ूम है, इसलिए जो लोग अल्लाह तआ़ला का मज़ाक़ उड़ाते हैं और अल्लाह तआ़ला के अ़लावह दीगर मुर्दों के पुकारने को अ़ज़मत की निगाह से देखते हैं, फिर जब तौह़ीद का हुक्म दिया जाता है और शिर्क से रोका जाता है तो उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं, **अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–**

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ

और आप को जब यह लोग देख लेते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं, ''क्या यही व्यक्ति है जिसको अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है इसने तो हमें भटका कर, हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर ही दिया होता। (**सूरः फ़ुर्क़ान-४१-४२**)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जब उन्हें शिर्क से मना फ़रमाया तो वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मज़ाक़ उड़ाने लगे, उस ज़माने से लेकर आज तक मुश्रिकीन बराबर अम्बिया-ए-किराम की तौहीन करते आए हैं, उन्हें गुमराह, पागल कहते हैं और यह सिर्फ़ इसलिए कि वह उन्हें तौहीद की दअ़वत देते हैं। हक़ीक़त में उन के दिलों में शिर्क की अ़ज़मत बैठी हुई है, इसी तरह़ उन लोगों में जो मुश्रिकीन से क़रीब हैं यही चीज़ है, उन्हें भी जब तौहीद की दअ़वत दी जाती है तो उस के साथ मज़ाक़ करने लगते हैं, इसलिए कि उन के दिल में भी शिर्क की अ़ज़मत घर कर चुकी होती है। **अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-**

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ

और कुछ लोग ऐसे हैं जो ग़ैरुल्लाह को शरीक बनाते और उन से अल्लाह की सी मुह़ब्बत करते हैं। **(सूरः बक़रः-१६५)**

इस तरह़ अगर कोई शख़्स अल्लाह के बजाए किसी मख़्लूक़ को उसी तरह़ चाहने लगे जिस तरह़ अल्लाह को चाहा जाता है तो वह मुश्रिक है, अल्लाह के साथ मुह़ब्बत, और ग़ैरूल्लाह के साथ मुह़ब्बत में अन्तर करना होगा, बहुत से तो ऐसे हैं जो मस्जिदों को गिराते हैं और दरगाहों की तअ़मीर करते हैं, उन को आबाद करते हैं। यह सब कुछ सिर्फ़ इसलिए कि अल्लाह तआ़ला, उस की निशानियों और उस के रसूल का मज़ाक़ उड़ाया जाए और शिर्क की तअ़ज़ीम की जाए। **(मजमउल् फ़तावा)**

मज़ाक़ व इस्तिहज़ा की क़िस्में

मज़ाक़ व इस्तिह़ज़ा की दो क़िस्में हैं-

१- मज़ाक़ सरीह़ (खुला हुआ मज़ाक़)

२- ग़ैर सरीह़ (इशारे का मज़ाक़)

मज़ाक़ सरीह़

(खुला हुआ मज़ाक़) यह ऐसा मज़ाक़ करने वाले हैं जिनके सिल्सिले में

आयते करीमा नाज़िल हो चुकी है। जैसे-

जब नेकी का हुक्म देने वाले और बुराईयों से रोकने वाले उन के पास आते हैं तो वह बतौर मज़ाक़ कहते हैं, लो तुम्हारे दीनी भाई आ गये या मुल्ला जी बन गए या दाढ़ी का मज़ाक़ उड़ाए आदि। इस तरह़ के हज़ारों तरीक़े हैं जिन के ज़रिए वह दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

ग़ैर सरीह़ मज़ाक़ (किनाया या इशारे का मज़ाक़)

यह वह समन्दर है जिस का कोई किनारा नहीं, जैसे आँख का इशारा, ज़बान का निकालना, होंठ का फैलाना, तिलावते कलाम पाक या सुन्नते नबवी के पढ़ने या अम्र बिल मअ़रूफ़ और नहि अनिल मुन्कर के वक़्त हाथ का दबाना वग़ैरह इसी तरह़ के मज़ाक़ में यह कलिमात भी दाख़िल हैं।

"इस्लाम बीसवीं सदी के लिए नहीं" "यह तो कुरुने वुस्ता के लिए सह़ी था" "इस्लाम सख़्ती व बुनियाद परस्ती की अ़लामत है।"

"हुदूदे सज़ा के मामले में उस के अन्दर बहुत ही ज़्यादा सख़्ती, संगदिली और बरबरियत है।"

"इस्लाम ने औ़रतों पर ज़ुल्म किया है, उस के हुक़ूक़ अदा नहीं किये हैं, इसलिए कि उस ने तलाक़ को जायज़ क़रार दिया है, मुतअ़द्दिद बीवी रखने को जायज़ क़रार दिया है।"

इसी तरह़ उन का यह कहना कि "आज का इन्सानी क़ानून लोगों के लिए इस्लामी क़ानून से बेहतर है।"

इसी तरह़ जो लोग तौहीद की तरफ़ बुलाते हैं, क़ब्र परस्ती से रोकते हैं उन के बारे में यह कहना कि "यह इन्तिहा पसन्द हैं या मुसलमानों में तफ़रीक़ पैदा करना चाहते हैं"

इसी तरह़ के हज़ारों अक़वाल हैं जो सब के सब दीन और अहले दीन और सही अ़क़ीदे के साथ मज़ाक़ व इस्तिहज़ा है।

इसी तरह़ किसी सुन्नत को मज़बूती के साथ पकड़ने वाले को भी मज़ाक़ का निशाना बनाया जाता है।

भाग-6
ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे
और
बड़े-बड़े गुनाहों का तफ़्सीली ज़िक्र

कुछ ग़ैर इस्लामी अ़क़ीदे

यहाँ उन बातों का ज़िक्र किया जाता है जो ईमान व इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं जिनसे अपने ज़ेहन को साफ़ रखे बिना किसी मुसलमान के लिए इस्लाम पर चलना आसान नहीं जैसे-

(१) अल्लाह की दी हुई नेअ़मतों में से अपनी ज़रुरत से ज़्यादा माल ख़र्च करना, या फ़ुज़ूलख़र्ची के तौर पर अपनी ज़ात, या अय्याशी के लिए ख़र्च करना, और उसको अमानत न समझते हुए उनके ह़क़दारों तक न पहुँचाना जो एक तरह से अल्लाह की तौह़ीदे रुबूबियत का इन्कार है, और इसी तरह इ़ज़्ज़त व मन्सब की नेअ़मतों को भी लोगों की भलाई के लिए ख़र्च न करना।

(२) आदमी अल्लाह की इ़बादत करता हो लेकिन ज़िन्दग़ी के निज़ाम में अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए हुक्मों को नाक़िस समझे तो यह अल्लाह तआ़ला के अ़ब्दियत के ख़िलाफ़ है।

(३) काफ़िराना विचार व आ़माल को पसंद करना, उनको फ़ख़्र के तौर पर अपनाना और दूसरों को अपनाने की तर्ग़ीब देना।

(४) अल्लाह और रसूल के हुक्मों पर एतिराज़ करना उनमें ऐब निकालना उनको वक़्त की मसलह़त के ख़िलाफ़ समझना और यह कहना कि इस पर अ़मल करना तंगनज़री है।

(५) काफ़िरों को ह़लाल व ह़राम हर तरह की दौलत समेटते हुए देख कर अपने ईमान पर पछताना, और यह सोचना कि अगर हम भी मुसलमान न होते और यह शरई पाबन्दियाँ न होतीं तो हम भी ख़ूब बढ़-चढ़ कर हाथ मारते।

(६) दीनी आ़माल और दीनी शआ़यर का मज़ाक़ उड़ाना, अल्लाह और रसूल के हुक्मों को मालूम होने के बावजूद, बाप-दादा की रिवायात और सोसाइटी के रस्म व रिवाज की पाबन्दी पर इस्रार करना, अल्लाह और रसूल के हुक्मों पर अ़मल करने में अपनी बेइ़ज़्ज़ती मह़सूस करना और कहना कि

नाक कट जाएगी।

(७) शरीअ़त की पाबन्दियों को अपनी तरक़्क़ी की राह में रुकावट समझना, घर की औ़रतों को ज़िन्दग़ी के मैदान में मर्दों के साथ-साथ चलने की ख़्वाहिश करना और उस पर फ़ख़्र करना और घर की शरीक औ़रतों को मर्दो से हाथ मिलाना, बेतकल्लुफ़ बातें करना और दोस्ताना सम्बन्ध बनाते देखकर फ़ख़्र करना और इसको तरक़्क़ी समझना।

(८) किसी को नुक़सान पहुँचाने की साज़िशें करना, किसी को भड़काना और इसी मक़सद के लिए तावीज़ गण्डे करना, बच्चे के जीने के लिए टोटके करना और बच्चों को ख़त्रे से बचाने के लिए सरहाने छुरी रखना।

(९) आख़िरत में अपनी निजात के लिए ईमान व अ़मल के बजाए किसी वली या बुज़ुर्ग से निस्बत को काफ़ी समझना, और यह मानना कि उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह का फ़ैसला टल सकता है, या उसका अल्लाह पर ज़ोर है, यह जो चाहें फ़ैसला करा सकते हैं, बन्दे को कोई नेकी या बुराई करने का अख़्तियार नहीं, बुराई या भलाई अल्लाह कराता है समझना और यह समझना कि बन्दा उसके करने पर मजबूर है।

(१०) सहाब-ए-किराम में से किसी का ऐब निकालना, उनके रुतबे को घटाना, उनका एहतिराम न करना, यह सब बातें ग़ैर इस्लामी हैं जिनसे तौबः करना ज़रुरी है। **(इस्लाही निसाब)**

शफ़ाअ़त का इस्लामी तरीक़ा

शफ़ाअ़त का यह मतलब नहीं है कि किसी तरह़ की सिफ़ारिश काम न आएगी क़ुर्आन के अनुसार शफ़ाअ़त इस तरह होगी कि जिससे अल्लाह तआ़ला की किसी सिफ़त का या उस सिफ़त से सम्बन्धित इन्कार लाज़िम न आता होगा, उसका हर काम और हर फ़ैसला इन्साफ़ की तराज़ू में तुला होता है अर्थात उसकी शफ़ाअ़त ख़ास लोगों और कुछ शर्तो के साथ होगी जो इस तरह है।

(१) शफ़ाअ़त का मामला पूरा का पूरा अल्लाह तआ़ला के अपने हाथ में होगा और जो कुछ होगा उसकी मर्ज़ी के अनुसार ही होगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

कह दीजिए, "सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, फिर 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।" **(सूरः ज़ुमर-४४)**

(२) शफ़ाअ़त के लिए ज़बान केवल वही व्यक्ति खोल सकेगा जिसे अल्लाह तआ़ला इजाज़त देगा।

مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, कौन ऐसा है जो 'उसके' सामने बिना 'उसकी' इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके! जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे हो चुका (दृश्य और अदृश्य) 'उसको' मालूम है, और लोग उस इल्म में से कुछ भी क़ाबू नहीं पा सकते (हावी नहीं हो सकते) सिवाय उसके कि जितना 'वह' चाहे, 'उसकी' कुर्सी (प्रभुत्व) आसमानों और ज़मीन को व्याप्त है, और उनकी ह़िफ़ाज़त 'उसके' लिए कुछ भी मुश्किल नहीं; और 'वह' बड़ा अ़ज़मत वाला (महा महिमावान) है। **(सूरः बक़रः-२५५)**

(३) शफ़ाअ़त करने वाला शफ़ाअ़त केवल उसी व्यक्ति के बारे में कर सकेगा जिसके ह़क़ में शफ़ाअ़त करने की उसे अल्लाह तआ़ला की ओर से इजाज़त मिल चुकी होगी।

‘वह’ जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, ‘मगर उस व्यक्ति की’ जिससे अल्लाह खुश हो और वे ‘उसके’ जलाल से डरते हों। (सूरः अम्बिया-२८)

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

(४) इस शफ़ाअ़त में वह केवल ऐसी ही बात करेगा जो हर तरह ठीक और घटना के अनुसार होगी।

إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ (सूरः नबा-३८)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और उनको इस (कुर्आन) के ज़रिये सचेत कर दो! जिन्हें इस बात का डर है कि उनको अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किया जाएगा, कि ‘उसके’ सिवा न तो उनका कोई ह़मदर्द होगा और न कोई सिफ़ारिशी, ताकि वे परहेज़गार बनें। (सूरः अनआ़म-५१)

وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

ऊपर की इन शर्तो की जो शफ़ाअ़त होगी वह अल्लाह के फ़ैसले को असर अन्दाज़ नहीं कर सकेगी, इससे मालूम हुआ कि जिस शफ़ाअ़त का कुबूल करने वाला अल्लाह होगा उसी तरह शफ़ाअ़त कराने वाला भी ह़क़ीक़त में वही होगा, शफ़ाअ़त का अस्ल मक़सद उसके ख़ास बन्दों को इ़ज़्ज़त देना होगी, जिनको वह अपने यहाँ ज़बान खोलने की इजाज़त देगा, हश्र के भरे मैदान में, जहाँ सब ख़ामोश डरे सर झुकाए खड़े होंगे वहाँ यह बड़े फ़ख़्र की बात होगी।

यह है इस्लाम में शफ़ाअ़त का सही मक़सद।

शफ़ाअ़त का ग़ैर इस्लामी तरीक़ा

क़ियामत के दिन तमाम बादशाही अल्लाह के लिए होगी जिसे कुर्आन में इस तरह कहा गया है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी, वह उनके बीच फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम भी किये, वह नेअ़मत के बाग़ों में होंगे। (सूरः ह़ज्ज-५६)

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

जैसा कि कुछ लोगों का अ़क़ीदा होता है कि आख़िरत में कामियाबी ईमान व अ़मल के बजाए कुछ बुर्ज़ुग हस्तियों को खुश कर देने से है कि उनकी सिफ़ारिश से काम बन जाएँगे, और अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले पर असर डाल कर लोगों को बख़्शुवा लेंगे चाहे वह उसके क़ानून के अनुसार बख़्शे जाने का ह़क़दार हो या न हो, कुर्आन मजीद साफ़ इस तरह की सिफ़ारिश का इन्कार करता है कि इस तरह की कोई सिफ़ारिश वहाँ काम न आएगी।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ‘‘भाइयो तुमने बछ़डे को (मअ़बूद) ठहराने में अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया, तो तुम अपने पैदा करने वाले के सामने तौबः करो और अपनों को (जिन्होंने बछड़े की पूजा में ह़िस्सा लिया उन्हें) अपने हाथों से क़त्ल करो, तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे ह़क़ में यही बेहतर है, तो ‘उसने’ तुम्हारी तौबः कुबूल कर ली, बेशक ‘वही’ तौबः कुबूल करने वाला, रह़म वाला है।’’

(सूरः बक़रः-५४)

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾

इस प्रकार हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह सह़ी इल्म सीखे ताकि कुफ़्र, शिर्क और बड़े-बड़े गुनाहों से बचकर जन्नत का रास्ता तय कर सके।

झाड़-फूँक

झाड़फूँक के दुनिया में बहुत से तरीक़े हैं। कुछ लोग कुर्आनी आयत पढ़कर झाड़ते फूँकते या तअ़वीज़ लिखते हैं और कुछ लोग मन्त्र वग़ैरह पढ़कर मरीज़ों, आफ़तज़दों पर फूँकते हैं। जैसे बुख़ार, मिर्गी, आसेब वग़ैरह। इस में एक जायज़ सूरत होती है और दूसरी नाजायज़। जो इस तरह हैं-

झाड़-फूँक की जायज़ क़िस्म

जो शिर्क से खाली हो, और मरीज़ पर कुर्आन की किसी आयत से कुछ पढ़ कर फूँका जाए या फिर अल्लाह तआ़ला के नाम व सिफ़ात का नाम लेकर मरीज़ के लिए पनाह माँगी जाए। यह क़िस्म जायज़ है, इसलिए कि ख़ुद आप (सल्ल०) ने कुर्आन की आयत पढ़कर फूँका है और आप (सल्ल०) की ओर से इस की इजाज़त भी साबित होती है। जैसे-

ह़ज़रत औफ़ बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग जाहिलियत में झाड़-फूँक किया करते थे। हम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! इस बारे में हमें क्या फ़रमाते हैं? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

अपनी झाड़-फूँक मुझे भी दिखाओ इस में कोई ह़र्ज नहीं जब तक कि इस के अन्दर शिर्क न हो। **(मुस्लिम)**

अ़ल्लामा सुयूती (रह़०) ने फ़रमायाः झाड़-फूँक या तअ़वीज़ तीन शर्तों के साथ जायज़ है।

तअ़वीज़ की जायज़ होने की शर्तें

(१) **पहली** शर्त यह है कि उस में कलामे इलाही या अल्लाह तआ़ला के अस्मा-ए-हुस्ना या सिफ़ात इस्तेमाल किये गये हों।

(२) **दूसरी** शर्त यह कि वह अ़रबी ज़बान में हो और उस का मफ़हूम व माने वाज़ेह़ हो।

(३) **तीसरी** शर्त यह कि झाड़-फूँक करने वाले और कराने वाले दोनों का यह एतिक़ाद हो कि यह चीज़ें ख़ुद मुवस्सिर नहीं होती हैं बल्कि अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से होती हैं।

जैसा ह़ज़रत साबित बिन क़ैस (रज़ि०) की एक ह़दीस में आया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बुतह़ान से मिट्टी ली । उस को एक प्याले में लिया कि पानी के ज़रिये उस पर फूँका और पानी को उस पर उंडेल दिया। **(अबूदाऊद)**

झाड़-फूँक की नाजायज़ क़िस्म

झाड़-फूँक की दूसरी क़िस्म वह है जिस में शिर्क पाया जाए, इस तरह़ के झाड़-फूँक में ग़ैरुल्लाह से मदद माँगी जाती है, ग़ैरुल्लाह से दुआ़ की जाती है, ग़ैरुल्लाह की दुहाई दी जाती है, ग़ैरुल्लाह को पुकारा जाता है, उस से पनाह माँगी जाती है, जैसे जिन्न, फ़रिश्ते, अम्बिया या सालिह़ीन के नामों को पढ़ कर फूँकना।

इसमें खुले तौर पर ग़ैरुल्लाह को पुकारा जाता है, जो शिर्क अकबर है या फिर वह अ़रबी के अ़लावा दूसरी ज़बानों में होता है या इस के माने व मफ़हूम वाज़ेह़ नहीं होते हैं, ऐसी सूरत में पूरा अन्देशा रहता है कि इस में शिर्किया व कुफ़्रिया कलिमात हों और पढ़ने वाले को इस का इल्म न हो लिहाज़ा इस तरह़ के तमाम झाड़-फूँक नाजायज़ हैं।

तअ़वीज़ व गंडा

तअ़वीज़ व गन्डों से मुराद वह तअ़वीज़ हैं जो बच्चों को नज़रे बद् से बचाने के लिए उन के गले में लटकाई जाती हैं और कुछ मर्द व औ़रत दोनों के बड़े बूढ़े भी तअ़वीज़ लटकाते हैं।

तअ़वीज़ की क़िस्में

तअ़वीज़ की भी दो क़िस्में हैं-

१- जायज़

२- नाजायज़

तअ़वीज़ की जायज़ क़िस्म

वह तअ़वीज़ जो कुर्आन की आयात के ज़रिये तैयार की गई हो या उन में कुर्आन की आयतें लिखी गई हों। या अल्लाह तआ़ला के अस्माउस्सिफ़ात लिखे गये हों और शिफ़ा ह़ासिल करने के लिए मरीज़ ने बाँधे हों, या गले में लटकाए हों, इस तरह़ की तअ़वीज़ लटकाने के सिलसिले में उलमा का इख़्तिलाफ़ है जिसमें दो तरह़ की राय या दो क़ौल हैं।

पहला क़ौल जाएज़ है, यह ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स का क़ौल है, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) की रिवायत से भी ज़ाहिरी माने इसी पर दलालत करते है। ह़ज़रत अबू जाफ़र अल् बाक़र, अह़मद बिन ह़म्बल (रह़०) ने भी इस की ताईद की है और इस से मना करने वाली ह़दीस को शिर्किया तअ़वीज़ पर लिया है।

तअ़वीज़ की नाजायज़ क़िस्म

यह ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०), इब्ने अ़ब्बास हुज़ैफ़ा, उ़क़्बा बिन आ़मिर, इब्ने अ़कीम (रज़ि०) वग़ैरह का क़ौल है, कुछ ताबिअ़ीन का भी यही कहना है, इन में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद और एक रिवायत के मुताबिक़ अह़मद भी शामिल हैं, बाद के लोगों ने पूरे ज़ोर के साथ नाजायज़ का फ़त्वा दिया है और ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) की ह़दीस को दलील बनाया है- ह़दीस शरीफ़ है:

मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि "झाड़-फूँक, तअ़वीज़ गंडे और जन्तर-मन्तर में शिर्क है।" **(अह़मद, अबूदाऊद)**

जादुई मन्त्र और जड़ी बूटी- यह एक ख़ास जादुई नुस्ख़ा होता है,

जिसे कुछ लोग इस ख़याल से बनाते हैं कि यह बीवी को शौहर की प्यारी और शौहर को बीवी का प्यारा बनाता है।

फूँक झाड़ और गंडे

गंडों में आ़मतौर से गाठें लगाई जाती हैं। गाँठों का मतलब वह गाँठे हैं, जो इन्सान के शुऊर (विवेक) और उसके हवास (चेतना इन्द्रियों) पर लगा कर उसे ग़ाफ़िल और मदहोश बना देती हैं, जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस प्रकार फ़रमाया है।

"जब तुम में से कोई व्यक्ति सोता है तो उसके सर के पिछले ह़िस्से पर शैतान तीन गाँठ लगा देता है और हर गाँठ के साथ यह बात भी दर्ज कर देता है कि अभी रात लम्बी है। जब वह शख़्स जाग उठता है और अल्लाह को याद करता है तो एक गाँठ खुल जाती है, जब वुज़ू करता है तो दूसरी भी खुल जाती है और जब वह नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी भी खुल जाती है, फिर सुबह़ को वह बिलकुल ताज़ा दम पाकीज़ा नफ़्स होता है। दूसरी ह़ालत में वह सुबह़ को सुस्त, कसमसाहट और गन्दा और नापाकी की ह़ालत में होता है।

(मुस्लिम किताबुस्सलातुल मुसाफ़िरीन)

फूँक मारना

फूँकना' ह़दीस में शैतानी क्रिया उत्पन्न होने को शैतान के 'नफ़्स' से तअ़बीर किया गया है।

इस का मतलब वह शैतानी आत्माएँ (नुफूस) हैं, जो अपनी शक्ति द्वारा अनायास इन्सान के विवेक (शुऊर) और उसकी चेतना एवं इन्द्रियों को प्रभावित कर देती हैं।

ऊपर ह़दीस में शैतान के गाँठ बाँधने का ज़िक्र हुआ है, उसमें भी यह बात बयान हुई है कि वह हर गाँठ के साथ यह भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है, यह वास्तव में शैतान का इस गाँठ में नफ़्स (फूँकना) ही है।

इन ह़दीसों की रोशनी में फूँक-झाड़ का मतलब यह है कि शैतान अपनी

उत्प्रेरणा (Inspiration) द्वारा उसकी चेतना, विवेक और इन्द्रियों को प्रभावित करके उसे ग़फ़लत अचेतना, मदहोशी और मनोवैज्ञानिक रोगों का शिकार बनाकर बुरी एवं गुमराह करने वाली बातें सुझा देता है, इसलिए क़ुर्आन की सूरः फ़लक़ में शैतान के शर (फ़ित्ने) से अल्लाह की पनाह माँगी गई है। यह शैतानी उत्प्रेरणा शायरी के रूप में भी हो सकती है, जादू के रूप में भी, लच्छेदार बातों की शक्ल में भी हो सकती है, और गाने की शक्ल में भी, इसलिए कोई कारण नहीं कि इसको किसी एक ही रूप में सीमित समझा जाए।

सिफ़्ली अ़मल (Black Magic वशीकरण) करने वालों के यहाँ तो गंडों में फूँक मारने का तरीक़ा पहले ही से चला आ रहा है, जादू और टोने टोटके करने वाले शैतानों की मदद से यह दुष्ट काम अंजाम देते हैं और लोगों के लिए गुमराही का सामान करते हैं और आजकल हिपनोटिज़्म (HYPNOTISM) के ज़रिये भी इन्सान की चेतना उसके विवेक और उसकी इन्द्रियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। यह सब शैतानी दुष्कर्म की विभिन्न सूरतें हैं। इस तरह़ की तमाम तकलीफ़ों और मुसीबतों से बचने का सही तरीक़ा यही है कि अल्लाह की पनाह चाही जाए और इस बात पर पक्का यक़ीन रखा जाए कि उसकी इजाज़त के बिना कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।

आमतौर से मुफ़स्सिरीन ने सूरः फ़लक़ में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर जो जादू किया गया था, उसे नक़्ल किया है, परन्तु इस में बड़ा इख़्तिलाफ़ है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर उसका असर हुआ था या नहीं।

जादू क्या है

जादू वास्तव में एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है, जो मन से निकलकर शरीर पर उसी प्रकार प्रभाव डालता है, जिस प्रकार शारिरिक प्रभाव शरीर से गुज़र कर मन को प्रभावित करता हैं।

उदाहरण के तौर पर भय एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है, पर उसका प्रभाव शरीर पर इस तरह़ होता है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और शरीर काँप उठता है। परन्तु जादू से वास्तविकता नहीं बदलती, मगर मुनष्य का मन और उसकी

इन्द्रियाँ उससे प्रभावित होकर यह मह़सूस करने लगती हैं कि वास्तविकता बदल गई है।

ह़ज़रत मूसा की ओर जादूगरों ने जो लाठियाँ और रस्सियाँ फेंकी थीं, वह सचमुच साँप नहीं बनी थीं। लेकिन हज़ारों मजमे की आँखों पर ऐसा जादू किया कि उन्हें साँप ही मह़सूस हुआ और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) तक की इन्द्रियाँ जादू के इस प्रभाव से न बच सकीं।

इस तरह़ क़ुर्आन के सूरः बक़रः आयत नं० १०२ में बयान किया गया है कि बाबुल नामी स्थान में 'हारूत और मारूत' से लोग ऐसा जादू सीखते थे जो पति पत्नी में जुदाई डाल दे। यह भी एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव था और स्पष्ट है कि यदि तजुर्बे से लोगों को इस अ़मल की कामियाबी मालूम होती तो वह इसके ख़रीदार न बन सकते।

जिस तरह़ बन्दूक की निकली हुई गोली या बम भी अल्लाह के हुक्म का मुह़ताज है, उसी तरह़ जादू भी उसकी इजाज़त के बिना कामियाब नहीं हो सकता, तो फिर उसी अल्लाह से दुआ़ करनी चाहिए। किसी बाबा आदि के चक्कर में फंस कर अपने आप को बर्बाद करना अ़क़्लमन्दी नहीं।

इस्लाम और झाड़-फूँक

बहुत सी ह़दीसों में इसका ज़िक्र है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हर रात को सोते वक़्त और ख़ासतौर से बीमारी की ह़ालत में 'मुअ़व्विज़तैन' या कुछ रिवायतों के अनुसार मुअ़व्विज़तैन तीन बार, पढ़कर अपने दोनों हाथों में फूँकते और सिर से पाँव तक पूरे जिस्म पर जहाँ-जहाँ तक आपके हाथ पहुँच सकते उन्हें फेर लेते।

आख़िरी बीमारी में जब आप (सल्ल०) के लिए ख़ुद ऐसा करना सम्भव न रहा तो ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा यह सूरतें (मुअ़व्विज़तैन ख़ुद या ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से) पढ़तीं और आपके मुबारक हाथों की बरकत के विचार से आप ही के हाथ से आपके शरीर पर फेर देतीं।

इस सिल्सिले की सही रिवायतें बुख़ारी, मुस्लिम, नसई, इब्ने माज़ा, अबू दाऊद और मुवत्ता इमाम मालिक में और ख़ुद ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मौजूद हैं।

ह़दीसों में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का एक लम्बा क़ौल ज़िक्र हुआ है, जिस के आख़ीर में हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि-

झाड़-फूँक न कराने पर जन्नत

"मेरी उम्मत के वह लोग बिना ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे वह वह होंगे जो न दाग़ने का इलाज कराते हैं, न झाड़-फूँक कराते हैं, न शगुन लेते हैं, बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं।" **(मुस्लिम)**

नापसन्दीदा अ़मल-

ह़ज़रत मुग़ीरा इब्ने शुअ़बा से रिवायत है कि "अल्लाह के रसूल (सल्ल०) दस चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते थे जिनमें से एक झाड़-फूँक भी है, सिवाए मुअ़व्विज़तैन या मुअ़व्विज़ात के।" **(अबू दाऊद, अह़मद, नसई, इब्ने ह़ब्बान, ह़ाकिम)**

कुछ ह़दीसों से यह भी मालूम होता है कि शुरु में हुज़ूर (सल्ल०) ने झाड़-फूँक को बिलकुल मना फ़रमा दिया था, लेकिन बाद में इस शर्त के साथ इसकी इजाज़त दे दी कि फूँक-झाड़ में शिर्क न हो जो जायज़ है, मगर अल्लाह के पाक नामों या उसके कलाम से झाड़ा जाए, और कलाम ऐसा हो जो समझ में आए और यह मालूम किया जा सके कि इसमें कोई गुनाह की चीज़ तो नहीं है और भरोसा झाड़-फूंक पर न किया जाए कि इस से आदमी अच्छा हो जाएगा, बल्कि अल्लाह पर भरोसा किया जाए कि वह चाहेगा तो इस फूँक को मुफ़ीद बना देगा।

तअ़वीज़ गंडा कराना अफ़ज़ल है या न कराना अफ़ज़ल है

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने

फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से ७० हज़ार आदमी बग़ैर ह़िसाब किताब के जन्नत में दाख़िल होंगे और यह वह लोग होंगे जो झाड़-फूँक नहीं करते और बद्शगुनी नहीं लेते और अपने परवरदिग़ार पर भरोसा करते हैं। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

मतलब यह है कि जो झाड़-फूँक नहीं करवाते और बद्शगूनी नहीं लेते जैसे छींकने को या किसी जानवर के सामने से निकल जाने को मन्हूस नहीं समझते और नफ़ा नुक़सान का मालिक केवल अल्लाह ही को समझते हैं तो वह जन्नत में पहले दाख़िल होंगे।

इससे मालूम हुआ कि अफ़ज़ल यही है कि तअ़वीज़ गंडों से परहेज़ करते हुए केवल दुआ़ पर ही भरोसा किया जाए इसलिए कि जिस मस्ले में जाएज़ या मना होने में इख़्तिलाफ़ हो उसमें एह़तियात करना ही अफ़ज़ल है।

तअ़वीज़ का ख़ुलासा

पहली- बात तो यह है कि हर तरह़ की तअ़वीज़ से उमूमी तौर पर रोका गया है, और इस उ़मूम को ख़ास करने वाली कोई चीज़ मौजूद नहीं।

दूसरी- इस के ज़रिये फ़ित्ना व फ़साद का रास्ता खुल जाता है, इसलिए कि इस के जवाज़ के बाद लोग वह चीज़ें इस्तेमाल करने लगते हैं जो हमारे यहाँ मुबाह़ नहीं।

तीसरी- जब कुर्आनी आयतों से तैयार की हुई तअ़वीज़ लटकाई जाती है तो लटकाने वाले से इस की बेहुरमती भी हो जाती है जैसे बैतुल् ख़ला या इस्तिन्जा के वक़्त उसे अपने पास से अलग नहीं कर पाता।

चौथी- इस में कुर्आन मजीद के अ़लावा दूसरी तमाम लटकाने वाली चीज़ें आ जाती हैं, जैसे ठीकरे, हड्डियाँ, सीप, धागे, जूतियाँ, कीलें, शयातीन व जिन्न के नाम आदि। तअ़वीज़ों की यह क़िस्म सरासर ह़राम है, इस में खुला हुआ शिर्क है, इसलिए कि इस तरह़ की चीज़ों में अल्लाह तआ़ला उस के अस्माउस्सिफ़ात और कुर्आनी आयात के बजाए दीगर चीज़ों के नाम भी लटकाए जाते हैं।

अ़क़ीदे की ह़िफ़ाज़त-

इसलिए एक मुसलमान को सब से पहले अपने अ़क़ीदा की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिए और कोई ऐसा अ़मल नहीं करना चाहिए जिस से उसका अ़क़ीदा बिगड़ता हो। लिहाज़ा नाजायज़ दवाएँ इस्तेमाल न करें, नुजूमियों, काहिनों और शोअ़बदह बाज़ के पास हरगिज़ न जाएँ, इसलिए कि यह लोग आदमी को अच्छा करने के बजाए उसके दिल को और बीमार कर देते हैं और उस के अ़क़ीदे को बिगाड़ देते हैं। लेकिन जो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करता है वह उस के लिए काफ़ी हो जाता है।

इस तरह़ की तअ़वीज़ें बाज़ ह़ज़रात ख़ुद अपने गले में डाल लेते हैं जब कि उन्हें जिस्मानी तौर पर कोई मर्ज़ नहीं होता और यह ख़यालो व वहमी मरीज़ होते हैं, जैसे नज़रबद, ह़सद से ख़ौफ़ वग़ैरह, कुछ लोग तो अपनी गाड़ी, जानवर, घर के दरवाज़े, दुकान पर तअ़वीज़ लटकाते हैं। यह सब अ़क़ीदे की कमज़ोरी है, अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल की कमज़ोरी है और अ़क़ीदा व एतिक़ाद में कमज़ोरी पैदा हो जाना ही दरअ़सल सब से बड़ी बीमारी है जिसका फ़ौरी इलाज ज़रुरी है जो तौह़ीद के इ़ल्म ही से हो सकता है।

क़ब्र की बिद्अ़तें

आजकल क़ब्रों पर बहुत सी नई-नई बातें देखने में आती हैं। जैसे- क़ब्रों पर धूमधाम से मेला करना, चिराग़ जलाना, औ़रतों का वहाँ जाना, चादरें चढ़ाना, पक्की क़ब्र बनाना, क़ब्र को बोसा देना या तवाफ़ व बोसा देना, दीन व दुनिया के काम को छोड़ कर दरगाहों की ज़ियारत के लिए सफ़र करना, वहाँ गाना बजाना, ऊँची-ऊँची क़ब्रें ढ़ालना उसकी ओर नमाज़ पढ़ना, उस पर इमारत बनाना उन पर फूल हार डालना पत्थर पर लिख कर वहाँ लगाना, चादर, शामियाना, नक़्क़ारा, खाना, मिठाई आदि चढ़ाना, उर्स करना या उसमें शामिल होना।

समाज की बुरी रस्में

समाज में बहुत सी दीन के नाम पर बुरी-बुरी रस्में रायज हैं। जैसे- तीज़ा,

चालिसवाँ आदि को ज़रुरी समझकर करना, ज़रूरत के बावजूद औ़रत के दूसरे निकाह़ को बुरा समझना, निकाह़, ख़त्ना, बिस्मिल्लाह आदि में नाच गाना करना, होली दीवाली की रस्में करना, सलाम की जगह नमस्ते गुड मार्निंग आदि करना।

देवर, जेठ, फूफ़ी ज़ाद, ख़ाला ज़ाद, मामू ज़ाद, भाई के सामने औ़रत का आना। गग्गरा दरिया में जाते वक़्त गाते बजाते जाना, राग बाजा सुनना, ख़ास तौर से उस को इ़बादत समझना, नसब पर फ़ख़्र करना, या किसी बुज़ुर्ग से निस्बत होने को काफ़ी समझना, सलाम को बेअ़दबी समझना, दूल्हा को ग़ैर शरई कपड़े पहनाना, दूल्हा को घर के अन्दर औ़रतों के दर्मियान जाना, चौथी खेलना, ग़म में चिल्ला कर रोना, मुँह और सीना पीटना, बयान करके रोना इस्तिमाली घड़ा को तोड़ डालना, घर में अचार ना रखना, मकान में तस्वीरें लगाना औ़रत का बारीक कपड़े पहनना या बजता हुआ ज़ेवर पहनना, काफ़िरों का तरीक़ा अपनाना, मेलों में जाना, धोती पहनना, लड़कों को ज़ेवर पहनाना, दाढ़ी मुंडाना या कटाना या मज़ाक़ उड़ाना, टखनों से नीचे पैजामा पहनना मर्दों को औ़रतों का और औ़रतों को मर्दों का लिबास पहनना, काला ख़िज़ाब लगाना, शुगून टोटका करना, किसी चीज़ को मन्हूस समझना, बदन गोदना, सफ़ेद बाल नोचना, शहवत से गले लगाना, या हाथ मिलाना, शरीअ़त के ख़िलाफ़ झाड़-फूंक करना।

कुछ बड़े-बड़े गुनाह

शिर्क करना, नाहक़ ख़ून बहाना, औ़रत से ज़िना करना, यतीमों का माल खाना, किसी को झूठे ज़िना की तोह़मत लगाना, शराब पीना, ज़ुल्म करना, किसी की पीठ पीछे बुराई करना, ख़ुदा की रह़मत से नाउम्मीद होना, किसी से वादा करके वादा ख़िलाफ़ी करना, किसी की बहू बेटी पर नज़र डालना, चोरी करना, मुसलमान को काफ़िर कहना, ज़ालिमों की ख़ुशामद करना रिश्वत लेना, झूठे मुक़दमे का फ़ैसला करना, सौदा लेने देने में कम देना, मोल-भाव करने के बाद ज़बरदस्ती कम देना, किसी के घर में बिना इजाज़त चले जाना, किसी का ऐ़ब ढूँढ़ना।

भाग–7

रसूलुल्लाह(सल्ल०)की तअ़ज़ीम और सहाबा के बारे में अ़क़ीदा

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत व तअ़ज़ीम

बन्दे पर सब से पहले अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत ज़रुरी है। यह इबादत की सब से बड़ी क़िस्म है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ

लेकिन जो ईमान वाले हैं वह तो अल्लाह ही के सब से ज़्यादा दोस्त हैं।

(सूरः बकरः- १६५)

इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ही अपने बन्दों को तमाम ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतों से नवाज़ा है, फिर अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत के बाद उस के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से मुहब्बत करना वाजिब है, इसलिए कि आप (सल्ल०) ने बन्दों को अल्लाह तआ़ला की दअ़वत दी, उस की शरीअ़त को पहुँचाया, और उस के अहकामात को बयान फ़रमाया है। आज मुसलमानों को जो दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल है वह उसी रसूले रहमत की बदौलत हासिल है, कोई भी शख़्स आप (सल्ल०) की इताअ़त और इत्तिबअ़ के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता, **एक हदीस में हैं–**

"जिस के अन्दर तीन चीज़ें होंगी वह ईमान की मिठास पाएगा। वह यह कि अल्लाह और उस के रसूल उस के नज़दीक दूसरों से ज़्यादा महबूब हों, और किसी शख़्स से मुहब्बत करता हो तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए करता हो, और कुफ़्र की तरफ़ लौटना इस के बाद कि अल्लाह तआ़ला ने उसे इस से निकाला है ऐसा ही नापसंद करता हो जैसा कि आग में डाले जाने को नापसन्द करता है।" **(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)**

इस हदीस से पता चलता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत के ताबेअ़ है और उस के साथ लाज़िम है और रुत्बा के एतिबार से दूसरे दर्जे पर है।

आप (सल्ल०) की मुहब्बत और अल्लाह तआ़ला के अ़लावह दूसरे तमाम महबूब चीज़ों से आप (सल्ल०) की मुहब्बत को मुक़द्दम रखने से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस के शब्द यह हैं:-

तुम में से कोई उस वक़्त तक पक्का मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के लड़के उस के वालिदैन और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।

एक ह़दीस में आया है-

"एक मोमिन के लिए ज़रुरी है कि आप (सल्ल०) को अपने नफ़्स से ज़्यादा महबूब रखे।"

"ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने एक मर्तबा अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप (सल्ल०) मेरे नज़दीक दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हैं सिवाए अपने नफ़्स से।" आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है जब तक मैं तुम्हारे नफ़्स से ज़्यादा तुम्हारा महबूब न बन जाऊँ बात नहीं बनेगी, यह सुनकर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ कियाः इस वक़्त आप मेरे नफ़्स से भी ज़्यादा महबूब हैं, आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः हाँ इस वक़्त ऐ उमर।" **(बुख़ारी)**

दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा मुह़ब्बत

इस से यह बात वाज़ेह हो गई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत वाजिब है और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत के अ़लावह दुनिया की हर चीज़ की मुहब्बत पर मुक़द्दम है, इसलिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत के ताबेअ़ है, इसलिए यह मुहब्बत भी अल्लाह तआ़ला की राह में है और उसी के लिए है और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत मोमिन के दिल में जितनी बढ़ेगी उतनी ही रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत बढ़ेगी और जो शख़्स भी अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत रखेगा वह अल्लाह तआ़ला ही के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) से भी मुहब्बत रखेगा।

फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि हम उन की

तअ़ज़ीम व तौक़ीर में कोई कसर न उठा रखें और उन्हीं की इत्तिबअ़ करें उन के क़ौल को हर एक के क़ौल से मुक़द्दम रखें और उन के सुन्नत की पूरी तअ़ज़ीम करें।

आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम-

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह०) फ़रमाते हैं: इन्सान से मुहब्बत और उस की तअ़ज़ीम अगर अल्लाह से मुहब्बत और उस की तअ़ज़ीम के ताबेअ़ है तो वह जायज़ है। जैसे रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुहब्बत और आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम, आप की यह मुहब्बत व तअ़ज़ीम दरअस्ल आप को रसूल बना कर भेजने वाले से मुहब्बत और उस की तअ़ज़ीम की तकमील है, आप (सल्ल०) की उम्मत आप से मुहब्बत इसलिए करती है कि वह अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करती है और आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम व तकरीम इसलिए करती है कि वह अल्लाह तआ़ला की तअ़ज़ीम व तकरीम करती है। आप (सल्ल०) से मुहब्बत अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत का एक जुज़ है या अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत का नतीजा है।

मुह़ब्बत में ह़द से आगे बढ़ना

'ग़ुलू' कहते हैं ह़द पार कर जाने को, कोई शख़्स जब क़द्र व अन्दाज़ा में ह़द से आगे बढ़ जाता है तो उसके लिए ग़लू का लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है **अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-**

لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ अपने दीन (की बात) में ह़द से न बढ़ो।

(सूरः निसा-१७१)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ह़क़ में ग़ुलू का मतलब यह है कि आप की क़द्र व मन्ज़िलत की तअ़य्युन में ह़द से ज़्यादा हो जाए, इस तरह़ कि आप को अब्दियत व रिसालत के रुत्बे से आगे बढ़ा दिया जाए और कुछ इलाही ख़सायस व सिफ़ात आप की तरफ़ मन्सूब कर दिये जायें।

जैसे आप (सल्ल०) को पुकारा जाए, आप (सल्ल०) को मदद के लिए पुकारा जाए, आप (सल्ल०) से इस्तिग़ासा किया जाए और अल्लाह तआ़ला के

बजाए आप (सल्ल०) की क़सम खाई जाए।

इन चीज़ो से आप (सल्ल०) ने ख़ुद रोक दिया था।

अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल-

"मेरी ह़द से ज़्यादा तअ़रीफ़ न किया करो जैसा कि नसारा ने इब्ने मरयम के बारे में कहा बेशक मैं एक बन्दा हूँ लिहाज़ा मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल कहा करो।" **(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)**

यानी बातिल औसाफ़ से मेरी तअ़रीफ़ न करना और मेरी तअ़रीफ़ में ग़ुलु न करना, जैसा कि नसारा ने ईसा (अ़लै०) की तअ़रीफ़ में किया है कि उन को उलूहियत के दर्जे में पहुँचा दिया। देखो! तुम मेरी इस तरह़ तअ़रीफ़ करो जिस तरह़ कि मेरे रब ने मेरी तअ़रीफ़ की है, लिहाज़ा मुझे अल्लाह का बन्दा और अल्लाह का रसूल कहा करो। यही वजह है कि एक सह़ाबी ने जब आप (सल्ल०) से कहा कि आप (सल्ल०) हमारे सय्यद हैं तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

सय्यद तो अल्लाह तआ़ला है और जब उन्होंने कहा कि हम में से अफ़ज़ल और ताक़त व कुव्वत के एतिबार से सब से बड़े हैं तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया- इस तरह़ की तअ़रीफ़ में कोई ह़र्ज नहीं, जो चाहे कहो लेकिन देखो इस मामले में शैतान तुम्हें ह़द से बहका न दे। **(अबूदाऊद)**

इसी तरह़ कुछ लोगों ने आप (सल्ल०) से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! ऐ हमारे सरदार! और हम में के सब से बेहतर के बेटे और हमारे सरदार हमारे सरदार के बेटे! यह सुन कर आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"ऐ लोगो! मेरे मुतअ़ल्लिक़ इस तरह़ की बातें कह सकते हो लेकिन देखो शैतान तुम्हें बहका न दे, मैं मुह़म्मद हूँ अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल हूँ, मैं यह पसन्द नहीं करता कि तुम मुझे अपनी इस क़द्रो मन्ज़िलत से आगे बढ़ा दो जिस पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझे रखा है।" **(अह़मद व नसई)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) मख़्लूक़ में सब से अफ़ज़ल व अशरफ़ हैं। लेकिन आप ने लोगों को ऐसा कहने से सिर्फ़ इसलिए रोक दिया था कि आप (सल्ल०) के बारे में लोग ग़्लू व मुबालिग़ा में न पड़ जाएँ और तौह़ीद की ह़िफ़ाज़त हो सके।

आप (सल्ल०) की दो सिफ़तें

आप (सल्ल०) की दो सिफ़तें, जो दरअसल बन्दे के लिए अ़ब्दियत का सब से बड़ा रुत्बा है और जिन में ग़ुलू व मुबालिग़ा नहीं है और न ही अ़क़ीदे के लिए कोई ख़त्रा, वह दो सिफ़तें हैं अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल और अपनी इस क़द्रो मन्ज़िलत से जिस में रब्बुल आ़लमीन ने आप (सल्ल०) को रखा है।

आज बहुत से लोग आप (सल्ल०) के इस फ़रमान की मुख़ालिफ़त पर तुले हुए हैं, खुलेआ़म आप (सल्ल०) को पुकारते हैं, आप (सल्ल०) से इस्तिग़ासा करते हैं, आप (सल्ल०) की क़सम खाते हैं, और आप (सल्ल०) से वह चीज़ें मांगते हैं जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही से मांगी जाती हैं।

इस तरह़ की मुख़ालिफ़तें मीलाद, नअ़तिया कलामो और नज़्मों में ख़ूब होती हैं, इस तरह़ के लोग अल्लाह तआ़ला के ह़क़ और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ह़क़ में कोई अन्तर नहीं करते।

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़०) ने इस ह़क़ीक़त को अपने एक क़सीदह में यूँ बयान किया है।

अल्लाह तआ़ला का एक ह़क़ है जो दूसरों का नहीं हो सकता और उस के बन्दो का एक ह़क़ है, यह दो ह़क़ हुए इन दोनों ह़ुक़ूक़ को बग़ैर तमीज़ व इम्तियाज़ के एक ह़क़ न बनाओ।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का दर्जा

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) की जिस क़द्रो मन्ज़िलत से नवाज़ा है उतनी तअ़रीफ़ करने और इस रुत्बे को बयान करने में कोई ह़र्ज नहीं, अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को बड़ा रुत्बा और आ़ली मक़ाम से नवाज़ा है, आप (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं, तमाम मख़्लूक़ात में आप (सल्ल०) सब से अच्छे सब से अफ़ज़ल हैं, आप (सल्ल०) तमाम इन्सानों के लिए रसूल हैं, जिन्न व इन्सान के हर शख़्स के लिए आप (सल्ल०) नबी व रसूल बनाकर भेजे गये हैं।

आप (सल्ल०) रसूलों में भी सब से अफ़ज़ल हैं, नबियों के ख़ातिम हैं, आप (सल्ल०) के बाद कोई नबी नहीं है, आप (सल्ल०) के सीने को अल्लाह तआ़ला ने खोल दिया था, आप (सल्ल०) के ज़िक्र को अल्लाह तआ़ला ने बुलन्द फ़रमाया है, और आप (सल्ल०) के अह़कामात की नाफ़रमानी करने वालों के लिए हर तरह़ की ज़िल्लत व रुसवाई है, आप (सल्ल०) मक़ामे मह़मूद के मालिक हैं।

मक़ामे मह़मूद से मुराद वह मक़ाम है जहाँ अल्लाह तआ़ला आप (सल्ल०) को क़ियामत के दिन लोगों की शफ़ाअ़त के लिए खड़ा करेगा ताकि उन्हें उन का रब इस मौक़े की परेशानी व शिद्दत से आराम पहुँचाए। यह बहुत ही ख़ास मक़ाम है जो सिर्फ़ आप (सल्ल०) ही को अ़ता होगा। आप (सल्ल०) के अ़लावह किसी नबी को भी यह मक़ाम अ़ता न होगा, इसलिए कि आप (सल्ल०) अल्लाह तआ़ला से सब से ज़्यादा डरने वाले हैं और अल्लाह का सब से ज़्यादा लिह़ाज़ करने वाले हैं, अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद आप (सल्ल०) के सामने आवाज़ बुलन्द करने से लोगों को रोक दिया है और उन लोगों की तअ़रीफ़ की है जो आप (सल्ल०) के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आ़माल अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वह लोग हैं जिनके दिलों को

يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है। जो लोग आप के हुजरों (कमरों) के बाहर से आप को पुकारते हैं, उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते; और अगर वे सब्र करते, यहां तक कि आप उनकी ओर निकल आते तो उनके लिए बेहतर था, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

(सूरः हुजरात- २-५)

अ़ल्लामा इब्ने कसीर (रह़०) फ़रमाते हैंः यह वह आयते करीमा हैं जिन के ज़रिए अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तअ़ज़ीम और इकराम का मामला करने के आदाब सिखाए हैं, उन को बताया कि आप (सल्ल०) के सामने आप (सल्ल०) से ज़्यादा अपनी आवाज़ को बुलन्द न करें, नाम लेकर आप (सल्ल०) को कोई शख़्स न पुकारे, जैसा कि आ़म लोग पुकारे जाते हैं, "ऐ मुह़म्मद" नहीं कहा जाएगा, बल्कि नुबूव्वत व रिसालत के वास्ते से आप (सल्ल०) पुकारे जाएँगे, लिहाज़ा कहा जाएगा "ऐ अल्लाह के रसूल" "ऐ अल्लाह के नबी" **अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-**

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ

(मोमिनों!) रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे का बुलाना न समझो।

(सूरः नूर-६३)

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को "ऐ नबी! ऐ रसूल! के शब्द से पुकारा है और अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों ने आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजे हैं और अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को आप (सल्ल०) पर दुरुद सलाम भेजने का हुक्म दिया है।

नबी पर दुरूद-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजा करो।

(सूरः अहज़ाब- ५६)

लेकिन नबी (सल्ल०) की तअ़रीफ़ व तौसीफ़ के लिए कोई वक़्त या कोई कैफ़ियत किताब व सुन्नत की सही दलील के बग़ैर मख़्सूस नहीं की जाएगी, लिहाज़ा आज जो लोग मीलादुन्नबी के जश्न व जुलूस का एहतिमाम करते हैं और उस तारीख़ को आप (सल्ल०) की पैदाईश का दिन समझते हैं, यह बहुत ही नापसंदीदा बिद्अ़त है।

आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम का तक़ाज़ा यह है कि आप (सल्ल०) की सुन्नत की तअ़ज़ीम व तकरीम की जाए, उस के अ़मल के वजूब पर एतिक़ाद रखा जाए, और यह कि सुन्नते रसूल, क़ुर्आन मजीद के बाद तअ़ज़ीम व अ़मल के एतिबार से पहले दर्जे पर है, इसलिए कि सुन्नत भी अल्लाह तआ़ला की वह्य है।

नबी पर वह्य होती है-

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:-

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝

और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं; यह तो बस एक वह्य है, जो की जा रही है।

(सूरः नज्म-३-४)

सुन्नत में शक पैदा करना, उस की शान को कम करने की कोशिश करना ह़राम है। आज बेशुमार अनपढ़ ख़ासतौर पर तअ़लीम के इब्तिदाई मराह़िल के नौजवान सुन्नत रसूल पर ज़बान दराज़ी करने लगे हैं, अह़ादीस की तस्ह़ीह़ व तज़अ़ीफ़ शुरु कर दी है और सिर्फ़ मुतालअ़ के बलबूते पर रावियों पर जिरह़ करने लगे हैं, यह ख़ुद उन के लिए और उम्मत के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है, उन्हें अल्लाह तआ़ला से डरना चाहिए और अपनी ह़द से आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इताअ़त

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इताअ़त हर हाल में वाजिब है, इसलिए आप (सल्ल०) के अह़कामात को पूरा करना और आप (सल्ल०) की मना की हुई चीज़ों से रुके रहना वाजिब है आप (सल्ल०) को अल्लाह के रसूल मानने का यही मतलब है, अल्लाह तआ़ला ने बहुत सारी आयतों में आप (सल्ल०) की इताअ़त का हुक्म दिया है। **जैसे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-**

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوٓا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमाबरदारी करो। (सूरः निसा-५६)

और कभी व्यक्तिगत तौर पर आप (सल्ल०) की पैरवी का हुक्म दिया है।

रसूल की इताअ़त अल्लाह की इताअ़त है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ

जिस ने रसूल की इताअ़त की उस ने अल्लाह की इताअ़त की। (सूरः निसा-८०)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए। (सूरः नूर-५६)

और कभी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नाफ़रमानी करने वालों को वअ़ीदें सुनाई गईं हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

जो लोग उनके हुक्म को मानने से मुँह फेरते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि वे किसी फ़ित्ने का शिकार न हो जाएँ या दर्दनाक अ़ज़ाब न उनको पकड़ ले।

(सूरः नूर- ६३)

यानी उन के दिलों में कुफ़्र व निफ़ाक़ और बिद्अ़त के फ़ित्ने पैदा होंगे या फिर इस माद्दी दुनिया ही में कोई दर्दनाक अ़ज़ाब आ घेरेगा, जैसे क़त्ल या ह़द या फ़ौरी सज़ायें, अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) की इताअ़त व इत्तिबअ़ को बन्दे से अपनी मुह़ब्बत और उस के गुनाहों की मग़्फ़िरत का सबब बनाया है।

रसूल (सल्ल०) की इताअ़त पर मग़्फ़िरत-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

कह दीजिए, "अगर तुम अल्लाह से मुह़ब्बत रखते हो, तो तुम मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, अल्लाह भी तुम को चाहने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा।

(सूरः आले इमरान-३१)

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) की इताअ़त को हिदायत और आप (सल्ल०) की नाफ़रमानी को गुमराही क़रार दिया है।

وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ

और अगर तुम फ़रमाँबरदारी करोगे तो राह पा लोगे। **(सूरः नूर- ५४)**

ज़ालिमों को राह नहीं-

इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

फिर अगर ये तुम्हारी माँग पूरी न करें, तो जान लो कि ये केवल अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, और उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की ओर से किसी हिदायत (मार्गदर्शन) के बिना अपनी इच्छा पर चले? बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। **(सूरः क़सस-५०)**

रसूल (सल्ल०) नमूना है-

अल्लाह तआ़ला ने इस की ख़बर दी है कि आप (सल्ल०) उम्मत के लिए बेहतरीन नमूना और उस्व-ए-ह़स्ना हैं, इर्शाद है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मदीवार हो और वह अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे। **(सूरः अह़ज़ाब-२१)**

अ़ल्लामा इब्ने कसीर (रह़०) फ़रमाते हैं: यह आयते करीमा नबी (सल्ल०) के तमाम अक़्वाल, अफ़्आ़ल को नमूना बनाने की सब से बड़ी दलील है, इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने अह़ज़ाब के दिन लोगों को यह हुक्म दिया कि सब्र व इस्तिक़ामत, जिहाद व मुजाहिदा, और रब्बुल आ़लमीन की तरफ़ से आसानी व कशीदगी के इन्तिज़ार में आप (सल्ल०) को अपना उस्व-ए-ह़स्ना बनायें और क़ियामत तक के लिए आप (सल्ल०) ही की ज़िन्दगी को नमूना न बनायें, अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त व पैरवी का तज़्किरह क़ुर्आन मजीद के अन्दर चालीस जगहों पर किया है, लोग आप (सल्ल०) की लाई हुई सुन्नत व शरीअ़त की मअ़रिफ़त और उस की इत्तिबअ़ के ग़िज़ा व पानी से भी ज़्यादा मुह़ताज हैं। ग़िज़ा व पानी न मिलने पर इन्सान दुनिया में मर जाएगा लेकिन रसूल (सल्ल०) की इताअ़त व पैरवी न होने पर दर्दनाक अ़ज़ाब और दाईमी बदबख़्ती का शिकार हो जाएगा। यही वजह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तमाम अ़िबादात में अपनी इक़्तिदा व पैरवी और उन्हें इसी कैफ़ियत में अदा करने का हुक्म दिया है जिस तरह आप (सल्ल०) अदा फ़रमाते थे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) फ़रमाते हैं-

"उसी तरह़ नमाज़ पढ़ो जिस तरह तुम ने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।"

(बुख़ारी)

और एक जगह इर्शाद है:

"मुझ से अपने ह़ज के मनासिक ले लो।" **(मुस्लिम)**

फ़रमाया-

"जो शख़्स भी कोई ऐसा अ़मल करता है जिस पर हमारा दीन नहीं वह अ़मल मरदूद है।" **(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)**

फ़रमायाः-

"जो शख़्स हमारी सुन्नत से एराज़ करता है वह हम में से नहीं।"

(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)

इस के अ़लावा हज़ारों बातें ऐसी हैं जिन में आप (सल्ल०) की इताअ़त व पैरवी पर उभारा गया है, और आप (सल्ल०) की नाफ़रमानी व मुख़ालिफ़त से बाज़ रहने का हुक्म दिया गया है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम

रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजना, आप (सल्ल०) का उम्मत पर ऐसा ह़क़ है जिसे ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजा करो।

(सूरः अह़ज़ाब-५६)

यह भी है कि अल्लाह तआ़ला का अपने नबी पर सलात का मतलब है तअ़रीफ़ और फ़रिश्तों के सलात का मतलब है दुआ़ और लोगों के सलात व सलाम का मतलब है इस्तिग़फ़ार।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने इस की भी ख़बर दी है कि उस के नबी व रसूल का अपने क़रीबी फ़रिश्तों में क्या रुत्बा है और अल्लाह तआ़ला उन के सामने आप (सल्ल०) की तअ़रीफ़ फ़रमाते हैं और यह कि फ़रिश्ते आप

(सल्ल०) पर रह़मत भेजते हैं फिर अल्लाह तआ़ला ने दुनिया वालो को आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजने का हुक्म दिया है ताकि आ़लमे अ़लवी व आ़लमे सिफ़ली दोनों की तअ़रीफ़ आप के लिए जमा हो जाए।

'वसल्लिमू तस्लीमन' का मतलब है कि आप (सल्ल०) पर इस्लामी सलाम भेजो, लिहाज़ा कोई जब आप पर सलाम भेजना चाहे तो सलात व सलाम दोनो भेजे उन में से एक पर इक्तिफ़ा न करे, लिहाज़ा सिर्फ़ सल्लल्लाहु अ़लैहि न कहे और न ही सिर्फ़ 'अ़लैहिस्सलाम' कहे इसलिए कि अल्लाह तआ़ला इन दोनों को साथ-साथ भेजने का हुक्म दिया है।

आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजने का हुक्म ऐसी जगहों पर आया है जिस से इस बात की ताकीद होती है कि या तो आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजना वाजिब है या सुन्नते मोअक्किदह।

इक्तालीस जगहों पर दुरुद सलाम-

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़०) ने अपनी किताब में ऐसी इक्तालिस जगहों का तज़किरह किया है, जहाँ आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजना ज़रुरी है, इस की इब्तिदा पहली, अहम मोअक्किदह तरीन जगह यानी तशह्हुद के आख़िरी ह़िस्से से की है।

दुरुद व सलाम की मशरुअ़ियत पर तमाम मुसलमानों का इजमाअ़ है। लेकिन इस मौक़े पर उस के वजूब के बारे में इख़्तिलाफ़ है, उन्हीं जगह में एक आख़िरी कुनूत भी है और ख़ुत्बों में ख़ुत्बा-ए-जुमअ़, ख़ुत्बा-ए-ईदैन, ख़ुत्बा-ए-इस्तिस्क़ा और मोअज़्ज़िन का जवाब देने के बाद, दुआ़ के वक़्त, इसी तरह़ मस्जिद में दाख़िल होते और निकलते वक़्त और आप (सल्ल०) का ज़िक्र आते वक़्त।

दुरुद व सलाम के फ़ायदे-

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़०) ने आप (सल्ल०) के ज़िक्र आने के वक़्त आप (सल्ल०) पर दुरुद व सलाम भेजने के चालीस फ़ायदे गिनवाए हैं उन्हीं फ़ायदों में से कुछ यह हैं।

अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तअ़मील, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दुरुद भेजने वाले के लिए एक दुरुद पर दस रह़मतें, दुआ़ की क़ुबूलियत की उम्मीद जब दुआ़ से पहले दुरुद व सलाम भेजा जाए। यह गुनाहों की माफ़ी का सबब है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ से दुरुद का जवाब दिये जाने का भी सबब है।

सह़ाब-ए-किराम की फ़ज़ीलत

सह़ाबा के बारे में हमारा अ़क़ीदा-

सह़ाबा शब्द सह़ाबी की जमअ़ है, इस से मुराद वह शख़्स है जिस ने ह़ालते ईमान में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुलाक़ात की और इसी ईमान की ह़ालत में इन्तिक़ाल हुआ, उन के बारे में हमारा यह अ़क़ीदा होना वाजिब है कि वह उम्मत के सब से अफ़ज़ल तरीन लोग थे, उन का ज़माना ख़ैरुल क़रून का था और यह शर्फ़ उन को इस्लाम की तरफ़ उन की सबक़त, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सोह़बत के लिए उन का इन्तिख़ाब, आप (सल्ल०) के साथ जिहाद, शरीअ़त को बाद वालों तक पहुँचाने की वजह से ह़ासिल है, अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में उन की तअ़रीफ़ की है, आयते करीमा है-

सह़ाबा का मक़ाम-

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

सबसे पहले आगे बढ़ने वाले मुहाजिर और अन्सार, और जिन्होंने भली प्रकार उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए और 'उसने' उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है। (सूरः तौबा-१००)

आपस में रह़म दिल-

और एक जगह इर्शाद है:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ

मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग

عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

उनके साथ हैं, वे इन्कार करने वालों पर सख्त और आपस में रह़म दिल हैं, तुम उन्हें रूकूअ़ और सज्दे की ह़ालत में पाओगे, कि (वह) अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और खुशी चाह रहे हैं, उनकी पहचान उनके पेशानी (मस्तक) पर सज्दों का निशान है, उनकी यह विशेषता तौरात में बयान हुई है, और इंजील में उनकी मिसाल इस तरह बयान हुई है जैसे खेती, जिसने अपनी कोपल निकाली; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह मोटी हुई और अपने तने पर सीधी खड़ी हो गयी, वह खेती करने वालों को खुश करती है, ताकि काफ़िर (इन्कार करने वाले) उनसे जलें अल्लाह ने उन लोगों से जो उनमें से ईमान लाए, और भले काम किये, उनसे अल्लाह ने माफ़ी और बहुत बड़े बदले का वादा कर रखा है। (सूरः फ़तेह़-२९)

मुहाजिरीन की फ़ज़ीलत-

और एक जगह इर्शाद है-

لِلْفُقَرَاۗءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ

(यह) माल उन मोहताज मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस ह़ालत में निकाल बाहर किये गये है, कि (वह) अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ामन्दी चाहते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। और जो लोग उनसे पहले (मदीना को) ठिकाना बनाए हुए थे, और ईमान पर (जमे) थे, वे

بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

उन लोगों से मुहब्बत करते हैं, जो हिजरत कर के उनके पास आए और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उससे वे अपने सीनों में कोई खटक नहीं करते, और उनको अपने मुक़ाबले में तर्जीह़ (प्राथ्मिकता) देते हैं, चाहे वह खुद ही ज़रूरतमन्द हों, और जो लोग अपने दिल की तंगी से बचा लिए गये, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।

(सूरः ह़श्र-८-९)

इन आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मुहाजिरीन व अन्सार की बड़ी तअ़रीफ़ फ़रमाई है और उन्हें भलाईयों की तरफ़ सबक़त करने वाले कहा है, इस की भी ख़बर दी है कि वह उन से राज़ी है, उन के लिए बाग़ात तैयार किये हैं, इसी तरह़ उन्हें आपस में एक दूसरे पर रह़म करने वाले और काफ़िरों पर सख़्ती करने वाले बताया है।

सह़ाबा के औसाफ़-

इसी तरह़ उन के औसाफ़ बताते हुए फ़रमाया कि कसरत से रुकूअ़ और सज्दा करने वाले हैं, उन के दिल पाक व साफ़ हैं उन के चेहरों पर इताअ़त व ईमान की जो निशानी व नूर है, इस से वह पहचाने जाते हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने नबी की सोह़बत के लिए अख़्तियार फ़रमाया है, ताकि काफ़िरों को गुस्सा दिलाए, मुहाजिरीन की तअ़रीफ़ में फ़रमाया कि उन्होंने केवल अल्लाह के लिए और उस के दीन की नुसरत के लिए उस के फ़ज़्ल व रज़ा की तलाश में अपने वतन और माल व दौलत को ख़ैराबाद कहा और वह अपने इस अ़मल में सच्चे थे, अन्सार की तअ़रीफ़ में फ़रमाया कि वह हिजरत, नुसरत करने वाले और ईमान सादिक़ रखने वाले हैं, उन की ख़ूबियों में से यह बयान किया कि वह अपने मुहाजिर भाईयों से मुह़ब्बत करते हैं, उन को अपने ऊपर तरजीह़ देते हैं उन से हमदर्दी करते हैं, वह बुख़्ल से पाक हैं, जिन की वजह से फ़लाह व कामरानी उन के क़दम चूमती है, यह उन के बाज़ फ़ज़ायल व ह़सनात हैं, इन

के अ़लावा कुछ ख़ास फ़ज़ायल व रुत्बे हैं जिन की वजह से उन में से बाज़, बाज़ से मुमताज़ हैं।

सह़ाबा के दर्जे-

इस तरह़ अफ़ज़ल सह़ाबा चारो ख़लीफ़ा ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०), ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०), ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) थे। उन के बाद बाक़ी अ़शर-ए-मुबश्शरा हैं, जिन में ह़ज़रत तल्ह़ा (रज़ि०), ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि०), ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ (रज़ि०), ह़ज़रत अबू उबैद बिन अल् जिराह (रज़ि०) ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास (रज़ि०), ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) हैं। मुहाजिरीन को अन्सार पर फ़ज़ीलत दी गई है, अहले बद्र और अहले बैते रिज़वान की भी ख़ास फ़ज़ीलत आई है, फ़तेह़ मक्का से पहले जो इस्लाम लाए और जिहाद किये, उन को फ़तेह़ मक्का के बाद इस्लाम क़ुबूल करने वाले पर फ़ज़ीलत दी गई है।

सह़ाब-ए-किराम को बुरा भला कहने की मुमानिअ़त

अहले सुन्नत वल जमाअ़त के नज़दीक कुछ उसूल है कि सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) से मुतअ़ल्लिक़ उन के दिल साफ़ हैं वह अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान पर अ़मल करते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝

और जो उनके बाद आए, वे दुआ़ करते हैं, "ऐ हमारे रब! हमें भी माफ़ कर दे, और उन भाइयों को भी, जो हमसे पहले ईमान ले आए, और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ रब! तू बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला है।" (सूरः ह़श्र-१०)

फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के इस क़ौल पर सख़्ती से अ़मल करते हैं।

"मेरे सह़ाबा को बुरा-भला न कहो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुम में से कोई उ़ह़द (पहाड़) के बराबर सोना ख़र्च करे तो उन में से किसी के मुद या निस्फ़ मुद से कम तक के बराबर नहीं पहुँच सकता।" **(मुत्तफ़क़ अ़लैहि)**

वह रवाफ़िज़ व ख़वारिज के गुमराहकुन तरीक़े हैं, जो सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) को बुरा भला करते हैं। उन के लिए बुग्ज़ रखते हैं उनके फ़ज़ायल का इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाते हैं।

किताब व सुन्नत में सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) के जो फ़ज़ायल बयान हुए हैं उन को अहले सुन्नत वल् जमाअ़त कुबूल करते हैं और सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) को उम्मत की सब से अच्छी जमाअ़त समझते हैं।

अहले सुन्नत वल् जमाअ़त कौन लोग हैं? उन्हें एक ह़दीस की रौशनी में समझ सकते हैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

यह उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में बँट जाएगी और एक फ़िर्क़े के सिवा सब जहन्नम में जाएँगे। लोगों ने उस एक जमाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः

"यह वह लोग हैं जो इसी पर क़ायम रहेंगे जिस पर आज हम और हमारे सह़ाब-ए-किराम (रज़ि०) क़ायम हैं।" **(अह़मद)**

इमाम अबू ज़रआ़ जो इमाम मुस्लिम के सब से बड़े शेख़ हैं, ने फ़रमायाः जब भी किसी शख़्स को देखो कि वह सह़ाब-ए-किराम में से किसी की कोई ख़ामी तलाश कर रहा है तो समझो कि वह ज़न्दीक़ व दहरिया है, इसलिए कि कुर्आन ह़क़ है, रसूल ह़क़ है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की लाई हुई शरीअ़त ह़क़ है।

यह सब को मालूम है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की लाई हुई तअ़लीमात को हम तक पहुँचाने वाले सह़ाब-ए-किराम ही हैं, लिहाज़ा उन पर जिरह़ करना दरअसल इस्लामी तअ़लीमात व किताब व सुन्नत को बातिल क़रार देना है।

अहले बैत के बारे में अ़क़ीदा

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अहले बैत के बारे में सह़ी बात यह है कि इस से मुराद आप के वह रिश्तेदार हैं जिन पर सद्क़ा ह़राम है, यानी आप की अज़वाजे मुतह्हरात और औलाद और जनाब अ़ब्दुल मुत्तलिब की नस्ल में से हर मुसलमान मर्द व औरत जिन्हें बनू हाशिम कहा जाता है। **अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म फ़रमाते हैं-**

> "हाशिम बिन अ़ब्द मनाफ़ के घर शैबा पैदा हुए जिन्हें अ़ब्दुल मुत्तलिब कहा जाने लगा। हाशिम के शर्फ़ व मर्तबे के वही वारिस हुए और उन के अ़लावा किसी और बेटे से हाशिम की नस्ल नहीं चली।" **(अन्साबुल अ़रब पेज नं०-१४)**

जनाब अ़ब्दुल मुत्तलिब की नस्ल के बारे में अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म (रह़०) की किताब "जमहूरतु अन्साबुल अ़रब" के पेज नं० १४, १५, इब्ने कुदामा (रह़०) की किताब "अत्ताबईन फ़ी अन्साबिल किरशीईन" पेज नं० ७६ और ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़ज्र (रह़०) की फ़तहुल बारी का मुताअ़ला किया जाए।

इस बात की दलील कि "आप के चचाओ की नस्ल भी अहले बैत में दाख़िल है "सह़ी मुस्लिम की वह ह़दीस है जो ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ़ बिन ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि०) से मन्क़ूल है कि मैं और फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में यह दरख़्वास्त लेकर ह़ाज़िर हुए कि आप हमें सद्क़े की वसूली पर मुक़र्रर फ़रमा दें ताकि हम इस काम की तन्ख़्वाह से अपनी शादी का सामान कर सकें।

आले मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए सद्क़ः जायज़ नहीं

आप (सल्ल०) ने हमें फ़रमाया-

"आले मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए सद्क़े की आमदनी ह़लाल नहीं, यह तो लोगों की मैल कुचैल है।" **(मुस्लिम-१०७२)**

फिर आप (सल्ल०) ने ख़ुमुस के माल से उन की शादी करने का हुक्म दिया।

इमाम शाफ़ई और इमाम अह़मद रह़मतुल्लाह अ़लैहिमा जैसे बाज़ अहले इ़ल्म ने सद्के़ की हुरमत के मसले में बनू हाशिम के साथ बनू मुत्तलिब बिन अ़ब्द मुनाफ़ को भी शामिल किया है, क्योंकि नबी करीम (सल्ल०) ने ख़ुमुस के ख़ुमुस से उन को भी ह़िस्सा दिया था जैसा कि सह़ी बुख़ारी की ह़दीस से मालूम होता है।

ह़ज़रत जुबैर बिन मुत्अ़िम (रज़ि०) ने बयान किया है कि "ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब को ख़ुमुस से ह़िस्सा दिया लेकिन अ़ब्द शम्स और नौफ़िल की औलाद को कुछ नहीं दिया। (ह़ालाँकि हाशिम, मुत्तलिब, अ़ब्द शम्स और नौफ़ल आपस में भाई हैं) और वजह यह बताई कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब एक हैं।

अजवाजे मुतह्हरात की फ़ज़ीलत-

आप की अज़वाजे मुतह्हरात रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के अहले बैत में से होने की दलील अल्लाह तआ़ला का यह फ़रमान है:-

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى وَأَقِمْنَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَأَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ إِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝

"और अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की तरह नुमाइश न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबदारी करो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।

और याद रखो अल्लाह की आयतों और ह़िकमत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) चीज़ों की ख़बर रखने वाला है।" **(सूरः अह़ज़ाब-३३-३४)**

यह आयते मुबारका क़तई तौर पर दलालत करती हैं कि अज़वाजे मुतह्हरात अहले बैत में दाख़िल हैं क्योंकि इस आयत से पहले और बाद की आयात में उन्हीं से ख़िताब है। सह़ी मुस्लिम की ह़दीस को इस के मनाफ़ी ख़याल न किया जाए जो कि ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है:-

अहले बैत-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) एक दिन तशरीफ़ फ़रमा हुए, आप पर स्याह बालों की बनी हुई मुनक्क़श चादर थी। इतने में ह़ज़रत ह़सन बिन अ़ली (रज़ि०) आ गये, आप ने उन को चादर में दाख़िल फ़रमा लिया, फिर ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) आए तो वह भी साथ दाख़िल हो गये, फिर ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ह़ाज़िर हुईं तो आप ने उन्हें भी चादर में दाख़िल फ़रमा लिया। फिर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) पहुँच गये तो आप ने उन्हें भी दाख़िल फ़रमा लिया। फिर फ़रमायाः "ऐ अहले बैत! अल्लाह चाहते हैं कि तुम से हर बुरी चीज़ दूर फ़रमा कर तुम्हें ख़ूब पाक साफ़ कर दें।"
(सह़ीह़ मुस्लिम, फ़ज़ायल अल् सह़ाबा, बाब फ़ज़ायल अहले बैत अल् नबी (सल्ल०) ह़- २४२४)

इस आयत में ख़िताब तो अज़वाजे मुतह्हरात को है इसलिए वह तो दाख़िल ही हैं, अल्बत्ता इस ह़दीस से मालूम हुआ कि ह़ज़रत अ़ली, सय्यदह फ़ातिमा और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी उन के साथ अहले बैत में दाख़िल हैं, इस ह़दीस में उन चार ह़ज़रात के ज़िक्र का यह मतलब नहीं कि दूसरे रिश्तेदार अहले बैत में दाख़िल नहीं, बल्कि इस से तो यह मालूम होता है कि यह चारो आप के गहरे रिश्तेदार हैं।

जिस तरह यह आयत अज़वाजे मुतहरात के अहले बैत में दाख़िल होने पर

दलालत करती है और ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की पिछली ह़दीस, ह़ज़रत अ़ली, फ़ातिमा और ह़स्नैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की अहले बैत में दाख़िल होने पर दलालत करती है, इस की एक नज़ीर अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद भी है:-

لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ

"वह मस्जिद जिसकी बुनियाद तक़्वा (परहेज़गारी) पर पहले दिन ही से पड़ी है।"

यह फ़रमाने इलाही मस्जिदे कुबा के बारे में है। जबकि सह़ी मुस्लिम की ह़दीस से मालूम होता है कि इस मस्जिद से मुराद मस्जिदे नबवी है। (गोया दोनों मस्जिदें इस फ़रमान का मिस्दाक़ हैं क्योंकि दोनों की बुनियाद मुस्लिम ने अपने रिसाले "फ़ज़्ल अहले बैत व हुक़ूक़ुहुम" में ज़िक्र फ़रमाई है। आप ने अज़वाजे मुतह्हरात लफ़्ज़ "आल" के तह़त दाख़िल हैं क्योंकि आप का फ़रमान है:

"सद्क़ा (व ज़कात) आले मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए ह़लाल नहीं।"

(मुस्नद अह़मदः २/२७६)

इसलिए कि उन को ख़ुमुस से ह़िस्सा दिया जाता था। मुसन्नफ़ इब्ने शैबा में ह़ज़रत इब्ने अबी मलीका से सह़ी सनद के साथ मरवी है: "ह़ज़रत ख़ालिद बिन सअ़ीद ने ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के घर सद्क़ा की एक गाय भेज दी। ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उसे वापस लौटाया और फ़रमायाः

"हम आले मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए सदक़ा ह़लाल नहीं।"

(अल् मुसन्नफ़ लेइब्ने अबी शैबा-१०७०८)

बीवियाँ भी अहले बैत में है

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़०) अपनी किताब "जला इल इफ़्हाम" में इस मस्लक के क़ायलीन के दलायल ज़िक्र करते हुए लिखते हैं:

"यह लोग कहते हैं कि बीवियाँ भी आल में दाख़िल होती हैं ख़ुसूसन अज़वाज मुतह्हरात आले मुह़म्मद (सल्ल०) में दाख़िल हैं, क्योंकि ज़ौजियत

वाला रिश्ता भी तो नसब जैसा है। अज़वाजे मुतह्हरात का रिश्ता ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से अलग नहीं हुआ था तभी तो वह आप की ज़िन्दगी में और आप की वफ़ात के बाद भी दूसरे मर्दो पर ह़राम हैं।

वह दुनिया में भी आप की बीवियाँ हैं और आख़िरत में भी आप की बीवियाँ होंगी। लिहाज़ा उन का ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथ रिश्ता नसब की तरह क़ायम व दायम है। आप ने दुरुद में उन को सराह़तन शामिल फ़रमाया है, इसलिए सह़ी बात यही है कि सद्क़ा अज़वाजे मुतह्हरात पर भी ह़राम है क्योंकि यह लोगों के मैल कुचैल हैं और अल्लाह ने आप की ज़ाते अक़्दस और आप की आल को इन्सानों की इस मैल कुचैल से बचाकर रखा है।

इमाम अह़मद (रह़०) का भी यही मसलक है:-

"ऐ अल्लाह! आले मुह़म्मद (सल्ल०) को सिर्फ़ ज़रुरत की ह़द तक रिज़्क़ दे।"

(सह़ी मुस्लिम, पेज नं०-१०५५, व मुस्नद अह़मद)

और क़ुर्बानी करते वक़्त आप (सल्ल०) फ़रमाते थेः-

"ऐ अल्लाह! यह क़ुर्बानी मुह़म्मद और आले मुह़म्मद (सल्ल०) की तरफ़ से है।" **(अल मुअ़ज्जमुल कबीर अलू तबरानी, ह-३०५६)**

और ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमायाः

"आल रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कभी गन्दुम की रोटी सेर होकर नहीं खाई।" **(सह़ी बुख़ारी, पेज नं० ६६८७, व सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० २६७०)**

दुरुद में अजवाजे मुतह्ह़रात शामिल है

इसी तरह़ दुरुद में भी अज़वाजे मुतह्हरात शामिल हैं:

"ऐ अल्लाह! रह़मत नाज़िल फ़रमा मुह़म्मद (सल्ल०) पर और आल मुह़म्मद पर"

तो क्या वजह है कि वह आप के इस फ़रमान में दाख़िल नहीं:

"सद्क़ा आले मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए ह़लाल नहीं।

(मुस्नद अह़मदः २/२७६)

ह़ालाँकि सद्क़ा लोगों की मैल कुचैल है। अज़वाजे मुतह्हरात तो इस से बचाने और दूर रखने की ज़्यादा ह़क़दार थीं।

अगर कहा जाए कि सद्क़ा अज़वाजे मुतह्हरात पर ह़राम होता तो उन के गुलामों और लौंडियो पर भी ह़राम होना चाहिए था जिस तरह बनू हाशिम पर ह़राम हुआ तो उन के गुलामों और लौंडियों पर भी ह़राम हो गया, ह़ालांकि सह़ीह़ बुख़ारी में रिवायत है कि ह़ज़रत बरीरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सद्क़े का गोश्त भेजा गया और उन्होंने खाया और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन्हें मना नहीं किया। जबकि बरीरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की आज़ाद किरदा लौंडी थीं।

ह़क़ीक़त में इसी बात से उन लोगों को इश्तिबाह हुआ जिन्होंने अज़वाजे मुतह्हरात के लिए सद्क़े का इस्तेमाल जाएज़ कहा है। इस इश्तिबाह का जवाब यह है कि अज़वाजे मुतह्हरात पर सद्क़े की हुरमत ज़ाती नहीं, बल्कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की वजह से है, वरना आप के साथ निकाह़ से पहले उन पर सद्क़ा ह़राम नहीं था, लिहाज़ा इस हुरमत में वह फ़रअ़ हैं और गुलामों पर हुरमत आक़ा पर हुरमत की फ़रअ़ होती है, इसलिए यह हुरमत उन के गुलामों पर लागू न होगी क्योंकि वह फ़रअ़ को फ़रअ़ हैं, जबकि बनू हाशिम पर सद्क़े की हुरमत ज़ाती है इसलिए यह उन के गुलामों पर भी लागू होगी।

इस मस्लक के मानने वाले यह भी कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا
نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ
النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ

اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝

अनुवाद- "ऐ नबी की पत्नियो! तुममें जो किसी खुली बेह़याई (अनुचित काम) में लगेगी उसे दोहरा अ़ज़ाब दिया जाएगा, और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है; और तुममें से जो अल्लाह और 'उसके' रसूल की फ़रमाँबरदार बन कर रहेगी और अच्छे काम करेगी, 'हम' उसको दोहरा बदला देंगे, और 'हमने' उनके लिए इ़ज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।"

"ऐ नबी की पत्नियो! तुम दूसरी औ़रतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी अपनाती हो, तो तुम दबी आवाज़ में बात न किया करो, ताकि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालसा (न) करने लगे, और भली बात कहा करो; और अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की तरह नुमाइश न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबदारी करो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।"

"और याद रखो अल्लाह की आयतों और ह़िकमत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) चीज़ों की ख़बर रखने वाला है।"

(सूरः अह़ज़ाब-३०-३४)

इस से यह बात वाज़ेह हो गई कि अज़वाजे मुतह्हरात अहले बैत में दाख़िल हैं, क्योंकि अहले बैत वाली आयत से पहले आयात और बाद वाली आयत में ख़िताब अज़वाजे मुतह्हरात से है। लिहाज़ा उन को अहले बैत से निकलना मुम्किन नहीं। वल्लाह आ़लम। **(जलाउलइफ़हाम-३३१ ता ३३३)**

बनू हाशिम के गुलामों पर सद्क़े की हुरमत की दलील वह ह़दीस है जिसे इमाम अबूदाऊद, इमाम तिर्मिज़ी और इमाम नसई रहमुल्लाह ने सह़ी सनद के

साथ ह़ज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़ि०) से यूं बयान फ़रमाया हैः

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने एक आदमी को बनू मख़्ज़ूम के सद्क़ात जमा करने के लिए मुक़र्रर फ़रमाया, वह शख़्स ह़ज़रत अबू राफ़ेअ़ से कहने लगाः तुम भी मेरे साथ चलो तुम्हें भी कुछ ह़िस्सा मिलेगा, अबू राफ़ेअ़ ने कहाः मैं पहले रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछ लूँ। वह आप के पास आए और पूछा तो आप ने फ़रमायाः-

"किसी क़ौम का ग़ुलाम भी उन्हीं में शुमार होता है और हमारे लिए सद्क़ा जाइज़ नहीं।" **(सुनन अबी दाऊद, ह़- १६५, व जामेअ़ तिर्मिज़ी.....ह़-६५७)**

अहले बैत के बारे में अहले सुन्नत-वल्जमाअ़त का अ़क़ीदा

तमाम एतिक़ादी मसायल में अहले सुन्नत व जमाअ़त का अक़ीदा इफ़रात व तफ़रीत से पाक होता है। न इस में कोई ज़्यादती होती है न कमी।

अ़ब्दुल मुत्तलिब की नस्ल में से हर मुसलमान मर्द औरत से मुह़ब्बत रखते हैं। इसी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की तमाम अज़वाजे मुतह्हरात से भी अ़क़ीदत रखते हैं।

अहले सुन्नत तमाम अहले बैत से मुह़ब्बत रखते हैं। सब की तअ़रीफ़ करते हैं और उन को इसी मर्तबे पर रखते हैं जिस के वह मुस्तह़िक़ हैं। इस में अ़द्ल व इन्साफ़ को मल्हूज़ रखते हैं, ज़ाती जज़बात और तह़फ़्फ़ुज़ात की तरफ़ ध्यान नहीं देते, बल्कि वह उस शख़्स की फ़ज़ीलत का एतिराफ़ करते हैं जिसे अल्लाह तआ़ला ने नसब की फ़ज़ीलत के साथ-साथ ईमान की फ़ज़ीलत से भी बहरवर फ़रमाया है, लिहाज़ा अहले बैत में से जिस शख़्स को रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सोह़बत का शर्फ़ ह़ासिल है वह इस से उस के ईमान व तक़वे की बिना पर, उस के सह़ाबी होने की बिना पर और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से क़राबत की बिना पर मुह़ब्बत करते हैं और अहले बैत में से जिस शख़्स को

सोह़बत का शर्फ़ ह़ासिल नहीं वह उस से इस के ईमान व तक़वा की बिना पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से क़राबत की बिना पर मुह़ब्बत करते हैं। उन का अ़क़ीदह है कि नस्ब ईमान के ताबेअ़ है और अहले बैत में से जिसे अल्लाह तआ़ला ने दोनो शर्फ़ अ़ता फ़रमाए हैं उसे दोनो फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं। लेकिन जिसे ईमान की तौफ़ीक़ न मिली उसे नसब की फ़ज़ीलत का कोई फ़ायदा नहीं। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है-

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

अनुवाद- अल्लाह के नज़दीक़ तुममें सबसे इ़ज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) हो। **(सूरः ह़ुजरात-१३)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक लम्बी ह़दीस में फ़रमाया है, जिसे इमाम (रह़०) ने अपनी सह़ीह़ में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत किया हैः

"जिस शख़्स के अ़मल सुस्त हों उस का नसब उसे आगे नहीं बढ़ा सकता।" **(सह़ीह़ मुस्लिम.....ह़-२६६६)**

ह़ाफ़िज़ इब्ने रजब (रह़०) अपनी किताब "जामेउ़ल उलूम वल ह़ुक्म" में इस ह़दीस मुबारका की तशरीह़ करते हुए फ़रमाते हैं: "इस ह़दीस का मफ़हूम यह है कि दरह़क़ीक़त अ़मल ही इन्सान के दरजात आख़िरत में बुलन्द करता है।" जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا

अनुवाद- "और सभी के दर्जे उनके आ़माल के ह़िसाब से हैं।"

(सूरः अनआ़म- १३२)

लिहाज़ा जिस शख़्स के आ़माल उसे अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बुलन्द दर्जात तक पहुँचाने से क़ासिर हों, उस का नसब उसे उन दर्जात तक नहीं पहुँच सकेगा। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने जज़ा आ़माल के मुताबिक़ रखी है न कि नसब के मुताबिक़ है, जैसे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝

अनुवाद– "फिर जब सूर (नर सिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके बीच न रिश्तेदारियाँ होंगी, न एक-दूसरे को पूछेंगे।"

(सूरः मूमिनून-१०१)

नेक आ़माल–

अल्लाह तआ़ला ने लोगों को हुक्म दिया है कि वह नेक आ़माल की बदौलत अल्लाह तआ़ला की मग़फ़िरत और रह़मत ह़ासिल करें।

जैसे- अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ

अनुवाद– "और अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर दौड़ो, जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन जैसा है, जो डरने वालों के लिए तैयार की गई है, जो खुशह़ाली और तंगी हर हाल में खर्च करते हैं, और गुस्से को रोकते हैं।"

(सूरः आले इमरान-१३३-१३४)

फ़रमाया–

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝

अनुवाद– "बेशक जो लोग अपने 'रब' के भय से काँपते रहते हैं, और जो अपने 'रब' की आयतों पर ईमान रखते हैं, और जो अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराते, और जो दे सकते हैं देते हैं और (हाल यह होता है कि) दिल उनके काँप रहे होते हैं, कि उन्हें अपने रब की ओर लौट कर जाना है; यही वे

लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए आगे लपकते हैं।" **(सूरः मूमिनून-५७-६१)**

फिर इब्ने रजब ने बहुत सी ऐसी आयात व अह़ादीस नक़्ल फ़रमाई हैं जो नेक आ़माल की तरफ़ उभारती हैं और यह बताया है कि जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुह़ब्बत भी तक़्वा और नेक अ़मल ही से ह़ासिल हो सकती है। फिर आख़िर में उन्होंने ह़ज़रत उ़मर व बिन आ़स (रज़ि०) की सह़ीह़ैन में मरवी यह ह़दीस ज़िक्र फ़रमाई है, वह कहते हैं कि मैंने नबी करीम (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुनाः

"फ़लाँ क़बीले के लोग मेरे साथी नहीं। मेरा साथी तो अल्लाह तआ़ला है और नेक मोमिन हैं।"

(सह़ीह़ बुख़ारी, पेज नं० ५६६० व सह़ीह़ मुस्लिम, पेज नं० २१५)

मुह़ब्बत की निशानी ईमान और अ़मल

इस फ़रमाने नबवी से आप (सल्ल०) का इशारा इस जानिब है कि आप की मुह़ब्बत भी क़रीबी नसब व ख़ानदान की बिना पर ह़ासिल नहीं होती बल्कि ईमान और अ़मल सालेह़ की बिना पर ह़ासिल हो सकती है। जो शख़्स ईमान व अ़मल में कामिल है वह आप का ज़्यादा क़रीबी है ख़्वाह उस का नसब आप से मिलता हो या न मिलता हो। आख़िर में ह़ाफ़िज़ इब्ने रजब (रह़०) बयान फ़रमाते हैं कि एक शायर ने इसी मफ़हूम को यूं बयान किया हैः

"अल्लाह तआ़ला तेरी उमर दराज़ करे इन्सान का मर्तबा उस के दीन से मालूम होता है। लिहाज़ा तू नसब व ख़ानदान पर एतिमाद करते हुए नेकी व तक़्वे से ग़ाफ़िल न हो। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०) का दर्जा बुलन्द कर दिया मगर शिर्क की बिना पर आप का हम नसब अबू लहब ज़लील हो गया।"

(जामिउल उलूम वल् ह़कम-२/३०८)

इस्लाम के अक़ीदे का ख़ुलासा तर्तीब से

जिन अक़ीदो का पीछे ज़िक्र हुआ अब यहाँ तर्तीब से ज़िक्र किया जाता है ताकि समझने में आसानी हो।

१- सारे संसार में पहले कुछ नहीं था फिर अल्लाह तआ़ला के पैदा करने से मौजूद हुआ।

२- अल्लाह एक है वह किसी का मुहताज नहीं न उस ने किसी को जना न वह किसी से जना गया। कोई उस के समान नहीं।

३- वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

४- कोई चीज़ उस के समान नहीं वह सब से निराला है।

५- वह ज़िन्दा है हर चीज़ पर उस की कुदरत है कोई चीज़ उस के इ़ल्म से छुपी नहीं वह सब कुछ देखता है सुनता है और जो चाहे करता है वही पूजने के क़ाबिल है। उस का कोई साझी नहीं अपने बन्दों पर मेहरबान है, बादशाह है। वह सब ऐबों से पाक है। वही अपने बन्दों को सब आफ़तों से बचाता है। वही इ़ज़्ज़त वाला, बड़ाई वाला, पैदा करने वाला, गुनाहों का बख़्शने वाला, बहुत देने वाला, ज़बरदस्त, रोज़ी पहुँचाने वाला है। जिस की रोज़ी चाहे तंग कर दे, जिस की रोज़ी चाहे बढ़ा दे जिस को चाहे पस्त कर दे जिस को चाहे बुलन्द कर दे जिस को चाहे इ़ज़्ज़त दे जिस को चाहे ज़िल्लत दे। इन्साफ़ वाला है सब्र करने और बर्दाशत करने वाला है, ख़िदमत की क़द्रदानी करने वाला, दुआ़ का कुबूल करने वाला, समाई वाला है। उस का कोई काम हिकमत से खाली नहीं। वह सब का काम बनाने वाला है, उसी ने पहले सब को पैदा किया। वही क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा करेगा। वही जिलाता है, वही मारता है। उस की निशानियों और सिफ़तों को सब जानते हैं और उस की ज़ात की बारीकी कोई नहीं जानता गुनाहगारों की तौबा कुबूल करता है जो सज़ा के क़ाबिल हैं उन को सज़ा देता है। वही हिदायत करता है, न वह सोता है न

ऊंघता है, वह तमाम आ़लम की हिफ़ाज़त से थकता नहीं। वही सब चीज़ों को थामे हुए है। इसी तरह़ तमाम सिफ़तें कमाल की उस को ह़ासिल हैं।

६- आ़लम में जो कुछ भला बुरा होता है सब को अल्लाह तआ़ला उस के होने से आगे हमेशा से जानता है और अपने जानने के अनुसार उस को पैदा करता है। तक़दीर इसी का नाम है और बुरी बातों को पैदा करने में बहुत भेद हैं उन को हर कोई नहीं जानता।

७- बन्दों को अल्लाह तआ़ला ने समझ और इरादा दिया है जिस से वह गुनाह और सवाब के काम अपने अख़्तियार से करते हैं। गुनाह के काम से अल्लाह तआ़ला नाराज़ और सवाब के कामों से ख़ुश होते हैं मगर बन्दों को किसी काम के पैदा करने की कुदरत नहीं।

८- अल्लाह तआ़ला ने बन्दों को ऐसे किसी काम का हुक्म नहीं दिया जो बन्दों से न हो सकें।

९- कोई चीज़ ख़ुदा के ज़िम्मे ज़रुरी नहीं वह जो कुछ मेहरबानी करे उस का फ़ज़्ल है।

१०- बहुत से पैग़म्बर अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए बन्दों को सीधी राह बतलाने आए और वह सब गुनाहों से पाक हैं। गिनती उन की पूरी तरह़ अल्लाह तआ़ला ही को मालूम है। उन की सच्चाई बतलाने को अल्लाह तआ़ला ने उन के हाथों ऐसी नई-नई मुश्किल मुश्किल बातें ज़ाहिर कीं जो और लोग नहीं कर सकते, ऐसी बातों को मोअ़जिज़ह कहते हैं। उन में सब से पहले आदम (अ़लै०) थे और सब से बाद ह़ज़रत मुह़म्मद रसूल (सल्ल०) और बाक़ी दर्मियान में हुए। बाज़ बहुत मशहूर हैं जैसे-

ह़ज़रत नूह़(अ़लै०), इब्राहीम (अ़लै०), इस्ह़ाक़ (अ़लै०) इस्माईल (अ़लै०), याकूब (अ़लै०) यूसुफ़ (अ़लै०), दाऊद (अ़लै०), सुलेमान (अ़लै०), अय्यूब (अ़लै०), मूसा (अ़लै०), हारून (अ़लै०), ज़करिया (अ़लै०), यह़या (अ़लै०), ईसा (अ़लै०), इलियास (अ़लै०), यसअ़ (अ़लै०), यूनुस (अ़लै०), लूत (अ़लै०), इदरीस (अ़लै०), जुल किफ़्ल (अ़लै०), सालेह़ (अ़लै०), हूद (अ़लै०), शुऐब (अ़लै०)।

११- पैग़म्बरों में कुछ का रुत्बा कुछ से बड़ा है। सब से ज़्यादा मर्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) का है, और आप के बाद कोई नया पैग़म्बर नहीं आ सकता। क़ियामत तक जितने आदमी और जिन्न होंगे आप (सल्ल०) सब के पैग़म्बर हैं।

१२- मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने जागते में जिस्म के साथ मक्के से बैतुल मुक़द्दस में, और वहाँ से सातो आसमान पर और वहाँ से जहाँ तक अल्लाह को मंज़ूर हुआ पहुँचाया और फिर मक्का में पहुँचा दिया उस को मेराज कहते हैं।

१३- अल्लाह तआ़ला ने कुछ मख़्लूक़ात नूर से पैदा करके उन को हमारी निगाहों से पोशीदह किया है, उन को फ़रिश्ते कहते हैं, उन का मर्द या औ़रत होना कुछ नहीं बतलाया गया। बहुत से काम उन के सुपुर्द हैं। वह कभी अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करते। उन में चार फ़रिश्ते बहुत मशहूर हैं। हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) हज़रत मीकाईल (अ़लै०), हज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०), हज़रत इज़्राईल (अ़लै०)।

१४- अल्लाह तआ़ला ने कुछ मख़्लूक़ात आग से पैदा करके उन को हमारी नज़रों से छुपा रखा है उनको जिन्न कहते हैं उन में नेक व बद सब तरह़ के होते हैं उन की औलाद भी होती है उन सब से ज़्यादा मशहूर शरीर इब्लीस है।

१५- मुसलमान जब ख़ूब इबादत करता है और गुनाहों से बचता है और दुनिया से मुह़ब्बत नहीं रखता और पैग़म्बर साह़ब की हर तरह़ की फ़रमाबरदारी करता है तो वह अल्लाह का दोस्त और प्यारा हो जाता है। ऐसे शख़्स को वली कहते हैं। उस शख़्स से कभी ऐसी बातें हो सकती हैं जो और लोगों से नहीं हो सकतीं, ऐसी बातों को करामत (चमत्कार) कहते हैं।

१६- वली कितने ही बड़े दर्जे को पहुँच जावे मगर नबी के बराबर नहीं हो सकता।

१७- ख़ुदा का कैसा ही प्यारा हो जावे मगर जब तक होश व ह़वास दुरुस्त हैं शरअ़ का पाबन्द रहना फ़र्ज़ है, नमाज़, रोज़ा और कोई अ़िबादत माफ़ नहीं

होती।

१८- जो शख़्स शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो वह ख़ुदा का दोस्त नहीं हो सकता अगर उस के हाथ से कोई अचम्भे की बात दिखाई दे तो वह जादू है या वह नफ़्सानी और शैतानी धुंध है।

१९- वली को बाज़ बातों का एह़सास सोते जागते में हो जाता है उस को कशफ़ व इल्हाम कहते हैं अगर शरअ़ के अनुसार है तो क़ुबूल है और अगर ख़िलाफ़ है तो रद्द है।

२०- अल्लाह और रसूल ने दीन की सब बातें क़ुर्आन व ह़दीस में बन्दों को बता दीं अब कोई नई बात दीन में निकालना दुरुस्त नहीं। ऐसी ही बात को बिद्अ़त कहते हैं। बिद्अ़त बहुत बड़ा गुनाह है। अल्बत्ता बाज़ बारीक बातें दीन की जो हर एक की समझ में नहीं आतीं पक्के-पक्के आ़लिमों ने अपने इ़ल्म के ज़ोर से क़ुर्आन व ह़दीस से समझ कर दूसरों को भी बतला दीं ऐसे लोग मुजतहिद कहलाते हैं, मुजतहिद तो बहुत से हुए लेकिन चार उन में से बहुत मशहूर हुए हैं। जैसे- इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०), इमाम शाफ़ई (रह़०), इमाम मालिक (रह़०), इमाम अह़मद (रह़०), जिस को जिस मुजतहिद के रिसर्च पर विश्वास हो उस की पैरवी कर ले। हिन्दुस्तान में इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०), की पैरवी करने वाले ज़्यादा हैं वह ह़न्फ़ी कहलाते हैं।

इसी तरह नफ़्स के संवारने के तरीक़े क़ुर्आन व ह़दीस के अनुसार वली लोगों ने अपने दिल से समझ कर बतलाए, ऐसे लोग शेख़ कहलाते हैं मगर उन में चार ज़्यादा मशहूर हैं। जैसे- ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, ह़ज़रत अ़ब्दुल क़ादिर (रह़०) शेख़ शहाबुद्दीन (रह़०) सुहरवर्दी, ख़्वाजा बहाउद्दीन (रह़०) नक़्शबन्दी जिस मुजतहिद और शेख़ की रिसर्च और इल्म पर विश्वास हो उस के अनुसार चल सकता है परन्तु दूसरों को बुरा समझना दुरुस्त नहीं और पैरवी मुजतहिद और शेख़ की उसी वक़्त तक है जब तक उन की बात ख़ुदा और रसूल के ख़िलाफ़ न हो अगर उन से कोई ग़लती हो गई हो तो उस में पैरवी करना ह़राम है। इसलिए कि उनसे भी ग़ल्ती

हो सकती है।

२१- अल्लाह तआ़ला ने बहुत सी छोटी बड़ी किताबें आसमान से जिब्रईल (अ़लै०) के ज़रिए बहुत से पैग़म्बरों पर उतारीं ताकि वह अपनी अपनी उम्मतों को दीन की बातें बतलाएँ। उन में चार किताबें बहुत मशहूर हैं।

तौरेत ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को मिली, ज़बूर दाऊद (अ़लै०) को, इन्जील ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को, कुर्आन मजीद मुह़म्मद (सल्ल०) को। कुर्आन मजीद आख़िरी किताब है अब कोई किताब आसमान से नहीं आएगी और क़ियामत तक कुर्आन का हुक्म चलता रहेगा। दूसरी किताबों को गुमराह लोगों में बहुत कुछ बदल डाला, मगर कुर्आन मजीद की निगेहबानी का अल्लाह तआ़ला ने वादा किया है उस को कोई नहीं बदल सकता।

२२- ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को जिस-जिस मुसलमान ने देखा उस को सह़ाबी कहते हैं। उन सब से मुह़ब्बत और अच्छा गुमान रखना चाहिए अगर कोई लड़ाई झगड़ा उन का सुनने में आए उस को भूल चूक समझे, उन की बुराई न करे उन सब में सब से बढ़कर चार सह़ाबी हैं। "ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०), यह पैग़म्बर साह़ब के बाद उन की जगह बैठे और दीन का बन्दोबस्त किया। इसलिए ख़लीफ़ा अव्वल कहलाते हैं तमाम उम्मत में यह सब से बेहतर हैं। उन के बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०), यह दूसरे ख़लीफ़ा हैं। उन के बाद ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०), यह तीसरे ख़लीफ़ा हैं। उन के बाद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) यह चौथे ख़लीफ़ा हैं।

२३- पैग़म्बर साह़ब की औलाद और बीबियाँ सब तअ़ज़ीम के लायक़ हैं औलाद में सब से बड़ा रुत्बा ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का है और बीवियों में ह़ज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा और ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का है।

२४- ईमान जब दुरुस्त होता है कि अल्लाह व रसूल को सब बातों में सच्चा समझे और उन को मान ले। अल्लाह व रसूल की किसी बात में भी शक करना या उस को झुठलाना या उस में ऐ़ब निकालना या उस के साथ मज़ाक़

उड़ाना इन सब बातों से ईमान जाता रहता है।

२५- कुर्आन व ह़दीस के खुले खुले मतलब का न मानना और खीचतान करके अपने मतलब निकालना बद् दीनी की बात है।

२६- गुनाह को ह़लाल समझने से ईमान जाता रहता है।

२७- गुनाह चाहे कितना ही बड़ा हो जब तक उस को बुरा समझे उस से ईमान नहीं जाता, मगर कमज़ोर हो जाता है।

२८- अल्लाह तआ़ला से निडर हो जाना या नाउम्मीद हो जाना कुफ़्र है।

२९- किसी से ग़ैब की बातें पूछना और उस का यक़ीन करना कुफ़्र है। अल्बत्ता नबियों को वह्य से और दलीलों को वलियों और इल्हाम से और आ़म लोगों को निशानियों से कोई बात मालूम हो सकती है।

३०- किसी का नाम लेकर काफ़िर कहना या लानत करना बड़ा गुनाह है। हां यूं कह सकते हैं कि ज़ालिमों पर लानत, झूठों पर लानत। मगर जिन का नाम लेकर अल्लाह व रसूल ने लानत की है या न के कुफ़्र की ख़बर दी है उन को काफ़िर मलऊन कहना गुनाह नहीं।

३१- जब आदमी मर जाता है अगर गाड़ा जाए तो गाड़ने के बाद और अगर न गाड़ा जाए तो जिस ह़ाल में हो उस के पास दो फ़रिश्ते जिन में एक को मुन्किर दूसरे को नकीर कहते हैं। वह तीन सवालात पूछते हैं (१) तेरा परवरदिग़ार कौन है। (२) तेरा दीन क्या है। (३) ह़ज़रत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में पूछते हैं कि यह कौन हैं। अगर मुर्दा ईमानवाला होता है तो ठीक जवाब देता है फिर उस के लिए सब तरह़ की राह़त है। नहीं तो वह सब बातों में यही कहता है कि मुझे ख़बर नहीं, फिर उस पर बड़ी सख़्ती होती है, और बाज़ों को अल्लाह तआ़ला इस इम्तिह़ान से माफ़ कर देता है, मगर यह बातें मुर्दे को ही मालूम होती हैं और लोग नहीं देखते। जैसा सोता आदमी ख़्वाब में सब कुछ देखता है और जागता आदमी उस के पास बैठा हुआ बेख़बर रहता है।

३२- मुर्दे के लिए दुआ़ करने से या कुछ सदक़ः देने से उस को सवाब पहुँचता है।

३३- अल्लाह व रसूल ने जितनी निशानियाँ क़ियामत की बताई हैं सब ज़रुर होने वाली हैं। आख़िर दौर में इमाम 'मेहदी' ज़ाहिर होंगे और ख़ूब इन्साफ़ से बादशाही करेंगे और दज्जाल निकलेगा जो दुनिया में बहुत फ़साद मचावेगा। उस को मार डालने के वास्ते ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) आसमान से उतरेंगे जो उस को मार डालेंगे।

याजूज माजूज बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं वह तमाम ज़मीन में फैल पड़ेंगे फिर वह ख़ुदा के क़हर से हलाक होंगे। एक अ़जीब तौर का जानवर ज़मीन से निकलेगा जो आदमियों से बातें करेगा। पश्चिम की ओर से सूरज निकलेगा। आख़िर में क़ुर्आन मजीद उठ जावेगा और तमाम मुसलमान मर जावेंगे फिर तमाम दुनिया काफ़िरों से भर जावेगी और बहुत तरह़ की बातें होंगी।

३४- जब सारी निशानियाँ पूरी हो जावेंगी तब क़ियामत आ जाएगी। ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लै०) ख़ुदा के हुक्म से सूर फूकेंगे। इस सूर के फूंकने से तमाम ज़मीन व आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे तमाम मख़्लूक़ात ख़त्म हो जाएगी और जो मर चुके हैं उन की रुहें बेहोश हो जाएँगी, मगर अल्लाह तआ़ला को जिन्हें बचाना है वह अपने ह़ाल पर रहेंगे। एक मुद्दत इसी कैफ़ियत पर गुज़र जाएगी।

३५- फिर जब अल्लाह तआ़ला चाहेंगे कि तमाम आ़लम दोबारा पैदा हो जाए दूसरी बार सूर फूंका जावेगा उस से फिर सारा आ़लम मौजूद हो जाएगा, मुर्दे ज़िन्दा हो जावेंगे और क़ियामत के मैदान में सब इकट्ठा होंगे और वहाँ की तकलीफ़ों से घबरा कर सब पैग़म्बरों के पास सिफ़ारिश कराने जावेंगे।

आख़िर में मुह़म्मद (सल्ल०) सिफ़ारिश करेंगे सब भले बुरे अ़मल तौले जाएँगे उन का ह़िसाब होगा मगर बाज़ लोग बिना ह़िसाब जन्नत में जाएँगे। नेक लोगों का आ़माल नामा दाहिने हाथ में और बुरे लोगों का बायें हाथ में दिया जाएगा। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी उम्मत को ह़ौज़े कौसर का पानी पिलावेंगे, जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा, पुल सिरात पर चलना होगा। जो नेक लोग हैं वह इस से पार होकर

जन्नत में पहुँच जावेंगे जो बुरे लोग हैं वह इस पर से दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे।

३६- दोज़ख़ पैदा हो चुकी है और उस में साँप बिच्छू और तरह़-तरह़ का अ़ज़ाब है दोज़ख़ियों में से जिन में ज़रा भी ईमान होगा वह अपने आ़माल की सज़ा भुगत कर पैग़म्बरों और अल्लाह वालों की सिफ़ारिश से निकल कर जन्नत में दाख़िल होंगे, चाहे कितने ही बड़े गुनाहगार हों और जो काफ़िर और मुश्रिक हैं वह इस में हमेशा रहेंगे और उनको मौत भी न आएगी।

३७- जन्नत पैदा हो चुकी है और उस में तरह़-तरह़ के चैन और नेअ़मतें हैं। जन्नतियों को किसी तरह़ का डर और ग़म न होगा वह उस में हमेशा रहेंगे न उस से निकलेंगे और न वहाँ मरेंगे।

३८- अल्लाह को अख़्तियार है कि छोटे गुनाह पर सज़ा दे दे, या बड़े गुनाह को अपनी मेहरबानी से माफ़ कर दे या बिलकुल उस पर सज़ा न दें।

३९- जिन लोगों का नाम लेकर अल्लाह व रसूल ने उन का जन्नती होना बतला दिया है उन के सिवा किसी के जन्नती होने का यक़ीनी हुक्म नहीं लगा सकते। अलबत्ता अच्छी निशानियाँ देखकर अच्छा गुमान रखना और अल्लाह की रह़मत से उम्मीद करना ज़रुरी है।

४०- जन्नत में सब से बड़ी नेअ़मत अल्लाह तआ़ला का दीदार है जो जन्नतियों को नसीब होगा। उस की लज़्ज़त में तमाम नेअ़मतें, हेच मालूम होंगी।

४१- दुनिया में जागती हुई इन आँखों से अल्लाह तआ़ला को किसी ने नहीं देखा और न कोई देख सकता है।

४२- उ़मर भर कोई कैसा ही बुरा हो मगर जिस ह़ालत पर ख़ात्मा होता है उसी के अनुसार उस को बदला मिलेगा।

अल्लाह से दुआ़ है कि अल्लाह हम सबको कुफ़्र व शिर्क से मह़फ़ूज़ रखते हुए ईमान पर ख़ात्मा अ़ता फ़रमाए।

दुआ़ओं का तालिब

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar**
Father's name	:	**Mohd Haneef**

Educational Background.

Basic	:	**Intermediate,** (Allahabad)
Higher Education	:	**M.A.** (Lucknow)
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya Madina Munawarah** (Saudi Arabia)
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Aacharya** (Banaras).
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	**Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	: ***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Rafiq Ilmi	: ***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,*** **Lucknow,** U.P. (India)
Director	: ***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Mang. Director	: **Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	: **Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	: **Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .
Gen. Secretary	: ***All India, Jamiat Darul-Aml*** lucknow, U.P. (India)
Manager	: ***Universal Peace Foundation*** lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	80 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	160 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-1} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-2} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-3} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)	400 रू
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-4} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 19 से 25 तक)	400 रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-5} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 26 से 30 तक)	400 रू.
तफ़्सीर फ़ारूक़ी (मुकम्मल सेट) (भाग 1 से 5 तक)	2000 रू
10. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	200 रू.
11. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	120 रू.
12. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
13. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)	90 रू.
14. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)	80 रू.
15. जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
16. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
17. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
18. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
19. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	80 रू.
20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें	110 रू.
21. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
22. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	60 रू.
23. अज़ान क्या है?	30 रू.
24. आओ नमाज़ की ओर	48 रू.
25. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
26. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.

नाम	मूल्य
27. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
28. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)	**60** रू.
29. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
30. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**60** रू.
31. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**40** रू.
32. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	**40** रू.
33. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
34. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	**160** रू.
35. सूर-ए- फ़ातिह़ा की तफ़्सीर	**30** रू.
36. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	**40** रू.
37. पवित्र कुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	**30** रू.
38. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	**60** रू.
39. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिह़ासिक दृष्टि से)	**60** रू.
40. मीरास की तक़्सीम	**30** रू.
41. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़ज़्माले ह़स्ना की रौशनी में)	**60** रू.
42. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	**40** रू.
43. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	**30** रू.
44. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	**20** रू.
45. सृष्टि का सृष्टा कौन?	**30** रू.
46. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	**40** रू.
47. इस्लामी विरासत एक नज़र में	**20** रू.
48. इस्लाम?	**10** रू.

(मुफ़स्सिरे कुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

49. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	**140** रू.
50. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	**50** रू.
51. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़ह़बी आज़ादी	**40** रू.
52. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	**40** रू.
53. कुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	**40** रू.

नाम	मूल्य
54. कुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	**40** रू.
55. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	**40** रू.
56. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	**40** रू.
57. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	**40** रू.
58. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	**40** रू.
59. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	**50** रू.
60. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	**50** रू.
61. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	**50** रू.
62. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	**90** रू.
63. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	**40** रू.
64. बौद्ध धर्म और इस्लाम	**40** रू.
65. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	**80** रू.
66. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	**80** रू.
67. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	**70** रू.
68. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	**70** रू.
69. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
70. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	**50** रू.
71. कुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	**70** रू.
72. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	**40** रू.
73. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोश्नी में)	**40** रू.
74. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**30** रू.
75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	**80** रू.
76. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	**80** रू.
77. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	**80** रू.
78. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सह़ाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	**80** रू.
79. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	**60** रू.

नाम	मूल्य
80. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
81. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	**40** रू.
82. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	**40** रू.
83. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	**40** रू.
84. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
85. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	**40** रू.
86. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	**50** रू.
87. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	**30** रू.
88. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़	**30** रू.
89. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**120** रू.
90. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	**40** रू.
91. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	**40** रू.
92. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	**40** रू.
93. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	**80** रू.
94. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	**50** रू.
95. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	**60** रू.
96. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	**30** रू.
97. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात	**30** रू.
98. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	**60** रू.
99. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	**20** रू.
100. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	**50** रू.
101. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	**30** रू.
102. अअ़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100** रू.
103. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
104. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
105. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**50** रू.
106. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**90** रू.
107. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**90** रू.

नाम	मूल्य
108. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
109. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	**100** रू.
110. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
111. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
112. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
113. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
114. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
115. अ़ीदैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
116. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**50** रू.
117. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
118. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
119. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
120. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**60** रू.
121. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
122. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
123. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
124. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
125. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
126. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
127. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
128. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
129. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
130. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
131. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
132. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.
133. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**80** रू.
134. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	**40** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब की अ़रबी पुस्तकें

135. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन **120** रू.
136. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा **140** रू.
137. ज़िक्र मुहम्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद **80** रू.
138. सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम **80** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब की अंग्रेज़ी पुस्तकें

139. मुहम्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण **40** रू.
140. मुहम्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप **30** रू.
141. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम **80** रू.
142. दी स्वाड आफ़ इस्लाम **40** रू.
143. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी **40** रू.
144. इस्लाम? **10** रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा अनुवाद की हुई पुस्तकें

145. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०) **60** रू.
146. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत **40** रू.
(लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)
147. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अह़मद बिन अ़ब्दुल ह़लीम इब्ने तैमिया रह़०) **60** रू.
148. सलासिले अरबअ़ (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०) **30** रू.
149. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर **30** रू.
(लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)
150. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है **30** रू.
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)
151. रमज़ान का तोह़फ़ा **20** रू.
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
152. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार **20** रू.
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)

नाम	मूल्य

153. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) **30** रू.
(तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)
154. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुह़म्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी) **40** रू.
155. सूद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **60** रू.
156. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **60** रू.
157. कारोबार में शिरकत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **50** रू.
158. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **40** रू.
159. रोज़ः रुयते ह़िलाल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **50** रू.
160. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **40** रू.
161. तक़्लीद व इज्तिह़ाद की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **50** रू.
162. सज्द-ए-सह्व के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **40** रू.
163. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **40** रू.
164. ह़ैज़ व निफ़ास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **40** रू.
165. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **60** रू.
166. दो सौ समाजी मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में) **60** रू.
167. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (तारीख़ व सुन्नत की रौशनी में) **60** रू.

किताबों के पढ़ने की तर्तीब (क्रम से)

इन्सान अपने इतिहास के हर दौर में यह सोचता रहा है कि वह स्वयं क्या है? वह कैसे पैदा हुआ और क्यों पैदा हुआ? फिर मरने के बाद उसके साथ क्या होगा। जिस धरती पर वह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है उसे किसने बनाया, जिस आसमान के नीचे वह सांस ले रहा है और जिन माध्यमों को वह काम में लाता है उन सब चीज़ों को किसने बनाया। यह वह प्रश्न हैं जो इन्सानी इतिहास के हर जमाने में पैदा होते रहे और हर दौर के ज्ञानी वह बुद्धिजीवी और सन्देष्टा इनका जवाब देते रहे।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर के लिए हमारी पुस्तकें हर व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं, परन्तु अलग-अलग योग्यता वालों के लिए उनकी योग्यता के अनुसार क्रमशः किताबों की सूची नीचे दी गयी है, जिसमें हमने अपनी पुस्तकों को चार प्रकार के लोगों में तक़्सीम (विभाजित) किया।

(1) पहले वह जो इस्लाम से अनभिज्ञ हैं।
(2) दूसरे वह जो इस्लाम के बारे में कुछ समझ चुके हैं।
(3) तीसरे दाअी हज़रात के लिए
(4) चौथे नौजवान मुसलमानों के लिए।

इस्लाम को समझने वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
(1) सृष्टि का सृष्टा कौन?	हिन्दी	30 रू.
1a. इस्लाम?	// //	10 रू.
1b. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	// //	40 रू.
1c. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	// //	40 रू.
1d. अज़ान क्या है?	// //	30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
(2) अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन	हिन्दी	120 रू.
2a. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	// //	60 रू.
2b. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
2c. तौहीद की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
(3) जन्नत के हालात और जन्नती (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
3a. जहन्नम के हालात और जहन्नमी	// //	50 रू.
3b. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	// //	60 रू.
3c. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
(4) इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
(5) कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
(6) कुर्आन का पैग़ाम (कुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
(7) तफ़्सीर फ़ारूक़ी (कुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
(8) इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	// //	40 रू.
(9) रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		60 रू.
(10) पवित्र कुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	// //	30 रू.

कुबूले हक़ के बाद वालों के लिए तोहफ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. लाइलाह इल्लल्लाह की गवाही	हिन्दी	50 रू.
2. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	// //	60 रू.
3. आओ नमाज़ की ओर	// //	40 रू.
4. इस्लाम धर्म क्या है? (कुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
5. कुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
6. कुफ़्र व शिर्क की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	80 रू.
7. तौहीद की हक़ीक़त (कुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
8. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		80 रू.
9. जन्नत के हालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	// //	60 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	हिन्दी	50 रू.
11. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	// //	40 रू.
12. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़ह़ादीस की रौशनी में)	// //	60 रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
14. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
15. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)		400 रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)		400 रू.
17. मुन्तख़ब अह़ादीस	// //	60 रू.
18. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	// //	140 रू.
19. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
20. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	140 रू.

इंग्लिश भाषा वालों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
I. इस्लाम?	अंग्रेज़ी	10 रू.
II. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी	// //	40 रू.
III. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण		40 रू.
IV. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	// //	30 रू.
V. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	// //	80 रू.
VI. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	// //	40 रू.

मुस्लिम नौजवानों के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. इस्लाम?	हिन्दी	10 रू.
2. आओ नमाज़ की ओर	// //	40 रू.
3. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	// //	200 रू.
4. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	// //	40 रू.
5. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)		30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
6. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	हिन्दी	50 रू.
7. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	160 रू.
8. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	// //	120 रू.
9. रोज़ः का ह़ुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.
10. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	300 रू.
11. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)		400 रू.
12. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)		400 रू.
13. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)		400 रू.
14. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)	// //	60 रू.
15. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	// //	60 रू.
16. अ़ह़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व अ़ह़ादीस की रौशनी में)	उर्दू	100 रू.
17. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	50 रू.
18. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
19. आ़लमे इन्सानियत के रहबर (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
20. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	100 रू.
21. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	140 रू.
22. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	हिन्दी	40 रू.
23. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	// //	40 रू.
24. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	उर्दू	40 रू.
25. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	120 रू.
26. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	// //	50 रू.
27. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	// //	40 रू.
28. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	90 रू.
29. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	// //	50 रू.
30. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	// //	70 रू.
31. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	40 रू.
32. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	// //	40 रू.
33. ज़कात का ह़ुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	40 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
34. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	हिन्दी	**30** रू.
35. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.
36. मीरास की तक़्सीम	// //	**30** रू.
37. इस्लामी विरासत एक नज़र में	// //	**20** रू.
38. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	उर्दू	**40** रू.
39. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	// //	**80** रू.
40. जन्नत के ह़ालात और जन्नती	हिन्दी	**60** रू.
41. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	उर्दू	**60** रू.
42. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	// //	**40** रू.
43. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	// //	**40** रू.
44. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़रुफ़		**30** रू.
45. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	// //	**40** रू.
46. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	// //	**30** रू.
47. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	// //	**30** रू.
48. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**80** रू.

दाअ़ी ह़ज़रात के लिए तोह़फ़ा

नाम	भाषा	मूल्य
1. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	उर्दू	**40** रू.
2. ख़ालिक़-ए-क़ायनात और हमारा उस से तअ़ल्लुक़	// //	**40** रू.
3. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	// //	**80** रू.
4. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़	// //	**90** रू.
5. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	// //	**140** रू.
6. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	// //	**40** रू.
7. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	// //	**50** रू.
8. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्तिज़ामात और उस की दअ़वत का असर	// //	**50** रू.
9. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	// //	**40** रू.

नाम	भाषा	मूल्य
10. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	उर्दू	**40** रू.
11. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	// //	**40** रू.
12. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	// //	**40** रू.
13. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	// //	**160** रू.
14. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**80** रू.
15. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	// //	**300** रू.
16. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **1** से **5** तक)	// //	**400** रू.
17. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **5** से **10** तक)	// //	**400** रू.
18. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० **10** से **18** तक)		**400** रू.
19. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार	// //	**40** रू.
20. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	// //	**40** रू.
21. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	// //	**60** रू.
22. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	// //	**50** रू.
23. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	// //	**50** रू.
24. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	// //	**80** रू.
25. इस्लामी मआ़शियात का तकाबुली जायज़ा	// //	**40** रू.
26. बौद्ध धर्म और इस्लाम	// //	**40** रू.
27. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करने की मुमानियत	// //	**60** रू.
28. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	// //	**40** रू.
29. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	// //	**40** रू.
30. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	// //	**50** रू.
31. जिहाद आतंकवाद और इस्लाम	// //	**120** रू.
32. इस्लाम धर्म तल्वार से फैला या सदाचार से	// //	**60** रू.

अन्तिम सन्देष्टा

एम० एम० सरवर फ़ारुक़ी नदवी
(एम० ए० व आचार्य)

"वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध, तौरेत, इन्जील, पारसी, अरब कवि, भारतीय कवि, विशेष रूप से तुलसीदास जी, कबीरदास जी की वाणियों सहित गुरू नानक जी की वाणियां तथा इतिहासकारों, वैज्ञानिकों और पवित्र कुर्आन की दृष्टि में, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)।"